आचार्य पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कवर्धा जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

दो दिवसीय

अन्तर्राष्ट्रीय बहुविषयक शोध संगोष्ठी

(Hybride Mode)

वैश्वीकरण का बहुआयामी प्रभाव : विज्ञान, व्यापार और संस्कृति

दिनांक - 20 एवं 21 मई, 2026

स्थान - अटल बिहारी वाजपेयी प्रेक्षागृह, कवर्धा

आयोजक

कला एवं वाणिज्य विभाग आचार्य पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कवर्धा जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

रमेन डेका
Ramen Deka

लोक भवन, रायपुर
Lok Bhavan, Raipur

सत्यमेव जयते

राज्यपाल, छत्तीसगढ़
Governor, Chhattisgarh

क्र./ 148 /पीआरओ/लोस/2026
रायपुर, दिनांक 20 अप्रैल 2026

—: संदेश :—

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा द्वारा **"वैश्वीकरण का बहुआयामी प्रभाव : विज्ञान, व्यापार और संस्कृति"** विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी ।

वैश्वीकरण के इस युग में विज्ञान, व्यापार और संस्कृति के बदलते आयामों पर गंभीर चिंतन अत्यंत आवश्यक है। ऐसी संगोष्ठियां ज्ञान–विनिमय, नवाचार एवं समन्वित विकास को प्रोत्साहित करती हैं। मुझे विश्वास है कि यह स्मारिका विद्वानों के विचारों और शोध निष्कर्षों को व्यापक मंच प्रदान करेगी तथा विद्यार्थियों एवं समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

संगोष्ठी की सफलता और स्मारिका प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

रमेन डेका

(रमेन डेका)

विजय शर्मा
उप मुख्यमंत्री

छत्तीसगढ़ शासन
गृह एवं जेल, पंचायत एवं ग्रामीण विकास,
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग

क्रमांक 1477
रायपुर, दिनांक 07/05/2026

" संदेश "

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि आचार्य पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा, जिला कबीरधाम द्वारा "The Multidimensional Impact of Globlization: Science, Trade and Culture" विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

आज के वैश्वीकृत युग में विज्ञान, व्यापार एवं संस्कृति के विभिन्न आयामों का समन्वित अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार के सेमीनार न केवल ज्ञान के आदान–प्रदान का शसक्त मंच प्रदान करते हैं, बल्कि शोध एवं नवाचार को नई दिशा देते हैं।

मुझे विश्वास है कि इस संगोष्ठी में देश–विदेश से जुड़े विद्वान, शोधार्थी एवं प्रतिभागी अपने विचारों एवं अनुभव के माध्यम से सार्थक विमर्श प्रस्तुत करेंगे, जिससे समाज एवं राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होगा।

मैं इस महत्वपूर्ण आयोजन के सफल संचालन हेतु आयोजक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ तथा सभी प्रतिभागियों के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

(विजय शर्मा)

कार्यालय : कक्ष क्रमांक एम 4–1, महानदी भवन, मंत्रालय, अटल नगर, नवा रायपुर (छ.ग.) दूरभाष नं. 0771–2510904, 2221104
निवास : सी–3 सिविल लाईन, रायपुर (छ.ग.) दूरभाष नं. 0771–2445561, 91092–55611, ई–मेल : cghm.72@gmail.com

24085

अरूण साव
उप मुख्यमंत्री
ARUN SAO
Deputy Chief Minister

छत्तीसगढ़ शासन
लोक निर्माण, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी
नगरीय प्रशासन एवं विकास, खेलकूद एवं युवा कल्याण विभाग
Government of Chhattisgarh
Public Works Department, Public Health Engineering
Urban Administration & Development,
Sports and youth Welfare Department

क्रमांक ....1562..../उप मुख्यमंत्री/2026 रायपुर, दिनांक : ....17../..06.../2025

–: शुभकामना संदेश :–

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि आचार्य पंथ श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा के कला एवं वाणिज्य संकाय द्वारा आगामी 20 एवं 21 मई, 2026 को "**वैश्वीकरण का बहुआयामी प्रभाव : विज्ञान, व्यापार और संस्कृति** विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है।

वैश्वीकरण के इस दौर में दुनिया के विभिन्न राष्ट्रों के बीच दूरियाँ सिमट गई हैं। विज्ञान, तकनीक और व्यापार के क्षेत्र में जहाँ विकास की नई राहें खुली हैं, वहीं हमारी संस्कृति और सामाजिक संरचना पर भी इसके गहरे प्रभाव पड़े हैं। वर्तमान समय में ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर बौद्धिक चर्चा और शोध–पत्रों का संकलन समय की मांग है।

मुझे विश्वास है कि इस अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार के माध्यम से देश–विदेश के प्रबुद्धजन, शिक्षाविद् एवं शोधार्थी अपने विचारों के आदान–प्रदान से समाज और राष्ट्र के विकास हेतु सार्थक निष्कर्ष प्रस्तुत करेंगे। इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका (Souvenir) निश्चित रूप से ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होगी।

मैं इस गरिमामयी आयोजन की सफलता हेतु महाविद्यालय के प्राचार्य, प्राध्यापकों, आयोजन समिति एवं समस्त प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई देते हुए, उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी आत्मीय शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(अरूण साव)

प्रति,

प्राचार्य,
आचार्य पंथ श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब,
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कवर्धा, जिला–कबीरधाम (छ.ग.)

कार्यालय : एम-4/9, मंत्रालय, महानदी भवन, नवा रायपुर अटल नगर (छ.ग.) * निवास : एम-6, सेक्टर-24, नवा रायपुर अटल नगर (छ.ग.)
Office : M-4/9, Mantralaya, Mahanadi Bhawan, Nava Raipur Atal Nagar (C.G.) * Residence : M-6, Sec.-24, Nava Raipur Atal Nagar (C.G.)
Ph. (Mantralaya) / दूरभाष (मंत्रालय) : 0771-2510319, 2221318 * Ph. (Residence) / दूरभाष (निवास) : 0771-2965091, 2965092

डॉ. एस. भारतीदासन, भा.प्र.से.
सचिव,
Dr. S. Bharathidasan, IAS
Secretary

अर्द्धशासकीय पत्र क्र./ ...313.........
नवा रायपुर अटल नगर, दिनांक 15/04/26
छत्तीसगढ़ शासन
कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा,
रोजगार एवं उच्च शिक्षा विभाग
Government of Chhattisgarh
Skill Development, Technical Education,
Employment, and Higher Education
Department

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि आचार्य पंथ श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब शासकीय महाविद्यालय, कवर्धा द्वारा **"वैश्वीकरण का बहुआयामी प्रभाव : विज्ञान, व्यापार और संस्कृति"** विषय पर 02 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया जा रहा है।

वैश्विकरण के इस युग में शिक्षा, विज्ञान, व्यापार एवं संस्कृति के क्षेत्र में निरंतर नए आयाम स्थापित हो रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह संगोष्ठी ज्ञान के आदान–प्रदान का एक उत्कृष्ट मंच सिद्ध होगी तथा प्रतिभागियों के लिए अत्यंत लाभकारी रहेगी।

इस अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार के सफल आयोजन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ.एस.भारतीदासन)

प्राचार्य,
आचार्य पंथ श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब
शासकीय महाविद्यालय, कवर्धा

एस.3/24, मंत्रालय, महानदी भवन नया रायपुर अटल नगर, जिला - रायपुर, छत्तीसगढ़, 492002
फोन : +91-0771-2221120, 2510349, ई-मेल : secybgovtcg@gmail.com

प्रो. (डॉ.) संजय तिवारी
कुलपति
पीएच.डी., यूएस फुलब्राइट फेलो, अकादमिक फैलो (कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय)
एफ-यूके आईईआर आई, एफ-आई.ई.ई.ई., एफ-आई.ई.टी.ई. चार्टर्ड इंजीनियर (भारत)
सीनियर एसोसिएट - आई.सी.टी.पी. (इटली), फैलो - इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (भारत)
प्रमाणित प्रबंधन नवप्रवर्तक - आजीवन सदस्य (यू.के.)

Prof. (Dr.) Sanjay Tiwari
Vice-Chancellor
Ph.D., US Fullbright Fellow, Academic Fellow (Cambridge University)
F-UKIERI, F-IEEE, F-IETE, Chartered Engineer (India)
Senior Associate - ICTP (Italy), Fellow - Institution of Engineers (India)
Certified Management Innovator - Life Member (UK)

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय
रायपुर नाका / पोटियाकला, दुर्ग, छत्तीसगढ़ - 491001, भारत
HEMCHAND YADAV VISHWAVIDYALAYA
Raipur Naka / Potiakala, Durg, Chhattisgarh - 491001, India

205 / कुलपति सचिवालय / 2026
दुर्ग, दिनांक : 10 / 04 / 2026

!! शुभकामना संदेश !!

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा द्वारा "वैश्वीकरण का बहुआयामी प्रभाव : विज्ञान, व्यापार और संस्कृति" विषय पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है।

आज के समय में पर्यावरण संरक्षण एक अत्यंत महत्वपूर्ण वैश्विक विषय बन चुका है। इस प्रकार के शैक्षणिक आयोजन न केवल ज्ञान के आदान–प्रदान का सशक्त माध्यम होते हैं, बल्कि समाज को जागरूक करने और भविष्य की दिशा निर्धारित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस सेमिनार में विद्वानों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के विचार–विमर्श से नए आयाम स्थापित होंगे तथा यह आयोजन सभी प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

मैं इस सफल आयोजन के लिए आयोजकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ और सेमिनार की पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ।

शुभेच्छा सहित,

प्रो. (डॉ.) संजय तिवारी
कुलपति

प्रति,

प्राचार्य
आचार्य पंथ श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कवर्धा, जिला – कबीरधाम (छ.ग.)

Mob : 9424225771, 7000200750, **Tel** : 0788-2359800, **Email** : drsanjaytiwari@gmail.com, vc.durguniversity@gmail.com, vicechancellor@durguniversity.ac.in
Website : https://www.durguniversity.ac.in

:: शुभकामना संदेश ::

"वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना को चरितार्थ करते हुए आज पूरा विश्व एक 'ग्लोबल विलेज' में परिवर्तित हो चुका है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे महाविद्यालय द्वारा **"वैश्वीकरण का बहुआयामी प्रभाव: विज्ञान, व्यापार और संस्कृति"** जैसे समसामयिक और प्रासंगिक विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है।

वैश्वीकरण ने न केवल भौगोलिक सीमाओं को धुंधला किया है, बल्कि ज्ञान और नवाचार के नए द्वार भी खोले हैं। जहाँ विज्ञान के क्षेत्र में तकनीकी आदान-प्रदान ने मानवता की जटिल समस्याओं का समाधान खोजा है, वहीं व्यापार के वैश्विक विस्तार ने अर्थव्यवस्थाओं को परस्पर निर्भर और सुदृढ़ बनाया है। इन सबके बीच, संस्कृति का आदान-प्रदान हमें एक-दूसरे के करीब लाया है, हालांकि अपनी जड़ों को बचाए रखते हुए आधुनिकता को अपनाना आज की सबसे बड़ी चुनौती और आवश्यकता है।

एक अध्यक्ष के रूप में, मेरा यह मानना है कि इस प्रकार के बौद्धिक विमर्श विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और उनकी वैश्विक सोच को विकसित करने में मील का पत्थर साबित होते हैं। स्मारिका के माध्यम से संकलित शोध पत्र और विचार निश्चित रूप से शिक्षाविदों और शोधार्थियों के लिए एक मूल्यवान संसाधन सिद्ध होंगे।

मैं इस सफल आयोजन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य, आयोजन समिति के सदस्यों, प्राध्यापकों और ऊर्जावान विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं सफल संगोष्ठी हेतु अपनी आत्मीय शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

रिंकेश वैष्णव
अध्यक्ष, जनभागीदारी समिति
आचार्य पंथ श्री ग्रिंध मुनि नाम साहेब
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कवर्धा

Office of the Principal,
Acharya Panth Shri Grindh Muni Naam Saheb
Govt. P.G. College, Kawardha Dist. Kabirdham (C.G.)
Affiliated to HEMCHAND YADAV UNIVERSITY, DURG (C.G.) NAAC Grade "B"
Email ID : govtpgcollege.kawardha@gmail.com, Websit : pgcollegekawardha.edu.in

:: शुभकामना संदेश ::

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे महाविद्यालय के कला एवं वाणिज्य विभाग द्वारा **"वैश्वीकरण का बहुआयामी प्रभाव: विज्ञान, व्यापार और संस्कृति"** विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है। इस विशेष अवसर पर एक ज्ञानवर्धक 'स्मारिका' का प्रकाशन संस्थान के लिए गर्व का विषय है।

आज के इस दौर में वैश्वीकरण ने भौगोलिक सीमाओं को मिटाकर विश्व को एक 'वैश्विक ग्राम' में बदल दिया है। जहाँ एक ओर विज्ञान और तकनीक ने व्यापार के नए क्षितिज खोले हैं, वहीं दूसरी ओर विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और समन्वय बढ़ा है। ऐसे समय में, इस सेमिनार का विषय न केवल समसामयिक है, बल्कि भविष्य की चुनौतियों और अवसरों को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण भी है।

मेरा विश्वास है कि इस दो दिवसीय चर्चा के दौरान देश-विदेश से आए विद्वानों, शोधार्थियों और विशेषज्ञों के विचार साझा होने से हमारे विद्यार्थियों और प्राध्यापकों के बौद्धिक दृष्टिकोण का विस्तार होगा। स्मारिका में संकलित शोध पत्र और लेख निश्चित रूप से शिक्षा जगत के लिए एक बहुमूल्य संसाधन सिद्ध होंगे।

मैं इस सफल आयोजन के लिए कला एवं वाणिज्य विभाग के सभी सदस्यों, आयोजन समिति और महाविद्यालय के कर्मठ कर्मचारियों को अपनी हार्दिक बधाई देती हूँ। मैं इस सेमिनार की पूर्ण सफलता और स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी मंगलमय शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

डॉ ऋचा मिश्रा
प्राचार्य
आचार्य पंथ श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कवर्धा

शुभकामना संदेश

प्रिय विद्वानगण, शोधार्थियों, प्राध्यापकों एवं प्रतिभागियों,

महाविद्यालय के कला एवं वाणिज्य विभाग द्वारा आयोजित "वैश्वीकरण का बहुआयामी प्रभाव : विज्ञान, व्यापार और संस्कृति" विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं अभिनंदन।

वर्तमान युग में वैश्वीकरण ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया है। विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में नई संभावनाओं का विस्तार हुआ है, व्यापार के क्षेत्र में विश्व स्तर पर आर्थिक संबंध सुदृढ़ हुए हैं तथा सांस्कृतिक स्तर पर विभिन्न परंपराओं, भाषाओं और जीवन मूल्यों का आदान-प्रदान बढ़ा है। ऐसे महत्वपूर्ण एवं समसामयिक विषय पर आयोजित यह संगोष्ठी निश्चित रूप से ज्ञान-विस्तार, शोध एवं अकादमिक संवाद का प्रभावी मंच सिद्ध होगी।

मुझे विश्वास है कि इस संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र, विचार-विमर्श एवं अनुभव सभी प्रतिभागियों को नई दिशा प्रदान करेंगे तथा समाज, शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में सकारात्मक योगदान देंगे। यह आयोजन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय चिंतन और सांस्कृतिक मूल्यों को समझने का भी एक सशक्त माध्यम बनेगा।

महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. ऋचा मिश्रा मैडम को उनके प्रेरणादायी मार्गदर्शन एवं कुशल नेतृत्व हेतु हार्दिक साधुवाद एवं आभार।

मैं आयोजन समिति के संयोजक , सह-संयोजक, सचिव एवं सभी सदस्यों को इस महत्वपूर्ण आयोजन हेतु हार्दिक बधाई देता हूँ तथा देश-विदेश से पधारे सभी विद्वानों और प्रतिभागियों के सफल एवं सार्थक सहभागिता की कामना करता हूँ।

ईश्वर से प्रार्थना है कि यह अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते हुए पूर्णतः सफल हो।

धन्यवाद।

Dr. Anil Kumar Sharma
IQAC Coordinator
APSGMNS Govt. P. G. College Kawardha
Dist.-Kabirdham (C.G.)

शुभकामना संदेश

विश्व आज वैश्वीकरण के युग में निरंतर परिवर्तनशील एवं विकासोन्मुखी दिशा में अग्रसर है। विज्ञान, व्यापार तथा संस्कृति के क्षेत्र में वैश्वीकरण ने मानव जीवन को बहुआयामी रूप से प्रभावित किया है। एक ओर विज्ञान एवं तकनीक ने विश्व को निकट लाने का कार्य किया है, वहीं व्यापार के विस्तार ने आर्थिक संभावनाओं के नए द्वार खोले हैं। साथ ही, सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने विविधताओं के बीच संवाद, सह-अस्तित्व और वैश्विक बंधुत्व की भावना को सुदृढ़ किया है।

"वैश्वीकरण के बहुआयामी प्रभाव : विज्ञान, व्यापार और संस्कृति" विषय पर आयोजित यह अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी समकालीन वैश्विक परिवर्तनों पर गंभीर विमर्श का एक महत्वपूर्ण मंच सिद्ध होगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस संगोष्ठी में देश-विदेश से सहभागी विद्वानों, शोधार्थियों एवं शिक्षाविदों के विचार ज्ञान-विस्तार के साथ-साथ नवीन शोध-दृष्टि प्रदान करेंगे।

इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका (Souvenir) न केवल संगोष्ठी की गरिमा को बढ़ाएगी, बल्कि इसमें संकलित विचार एवं शोध आलेख भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ सामग्री के रूप में भी उपयोगी सिद्ध होंगे।

मैं इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन हेतु आयोजक मंडल, विद्वानों एवं समस्त सहभागियों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा संगोष्ठी की पूर्ण सफलता की मंगलकामना करता हूँ।

सादर

नरेंद्र कुमार कुलमित्र
कार्यक्रम संयोजक
एवं
हिंदी विभागाध्यक्ष
सहायक प्राध्यापक, हिंदी
आचार्य पंथ श्री गृंध मुनि नाम साहेब
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धाजिला- कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

:: शुभकामना संदेश ::

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष और गर्व की अनुभूति हो रही है कि हमारे महाविद्यालय में कला एवं वाणिज्य संकाय द्वारा **'वैश्वीकरण का बहुआयामी प्रभाव: विज्ञान, व्यापार और संस्कृति'** विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर शोध-पत्रों के संकलन के रूप में जो स्मारिका प्रकाशित हो रहा है, वह ज्ञान के आदान-प्रदान की दिशा में एक सराहनीय कदम है।

वैश्वीकरण ने आज पूरी दुनिया को एक सूत्र में पिरो दिया है। जहाँ विज्ञान ने सीमाओं को मिटाकर संचार और तकनीक को सुलभ बनाया है, वहीं व्यापार ने वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं को परस्पर निर्भर कर दिया है। इन सबके बीच, संस्कृति का आदान-प्रदान मानव समाज को अधिक उदार और समावेशी बना रहा है। इस सेमिनार का उद्देश्य इन तीनों स्तंभों पर वैश्वीकरण के सकारात्मक और चुनौतीपूर्ण प्रभावों का गहन विश्लेषण करना है।

सह-संयोजक के रूप में, मैं उन सभी अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय विद्वानों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपने शोध पत्रों के माध्यम से इस शैक्षणिक विमर्श को समृद्ध किया है। मुझे विश्वास है कि यह प्रकाशन विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए एक अमूल्य निधि साबित होगा।

मैं आयोजन समिति के अपने सभी सहयोगियों को उनके समर्पण के लिए बधाई देता हूँ और इस अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार की भव्य सफलता हेतु अपनी मंगलकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

मनसुख लाल वर्मा
सह-संयोजक
वाणिज्य विभाग
आचार्य पंथ श्री ग्रिंध मुनि नाम साहेब
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कवर्धा

आयोजक सचिव के कलम से ....

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कवर्धा जिले का अग्रणी महाचिद्यालय है जिसमें 4000 से अधिक विद्यार्थी कला ,वाणिज्य ,विज्ञान संकाय एवं कम्प्युटर साइंस में अध्ययनरत हैं महाविद्यालय के कला एवं वाणिज्य संकाय द्वारा दिनॉक 20 और 21 मई 2026 को आयोजित **'' वैश्वीकरण का बहुआयामी प्रभाव : विज्ञान व्यापार और संस्कृति ''** का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों एवं प्रतिभागियों में वैज्ञानिक सोच , वैश्विक दृष्टिकोण तथा सांस्कृतिक समन्वय को स्थापित करना है ।

आज का दौर वैश्वीकरण का दौर है जिसमें विज्ञान ने मानव जीवन के समस्त पहलूओं को प्रभावित किसा है व्यापार ने संपूर्ण विश्व को वैश्विक गांव के रूप में परिवर्तित कर दिया है ,इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक विविधताओं में एकता का संदेश दिया है । वैश्वीकरण के दौर ने ज्ञान और तकनीक के प्रसार से समाज को प्रगति की दिशा में अग्रसर किया है।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह कार्यक्रम सभी के लिए ज्ञानवर्धक और उपयोगी सिद्ध होगा ।

मैं आयोजन से जुड़े सभी शिक्षकों,प्रतिभागियों एवं सहयोगियों को शुभकामनाऍ

देता हूँ ।

आयोजन सचिव

मुकेश कुमार कामले

सहायक प्राध्यपक (समाजशास्त्र)

INDEX

NO	Auther	Title	P.No
01	Dr. Ajay Kumar	Federated Learning for Privacy-Preserving Disease Diagnosis: A New Era in Medical AI	1
02	भानू प्रताप साहू/डॉ प्रमिला नागवंषी	आदिवासी महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव (मुरिया जनजाति जिला कोंडागांव के विषेष संदर्भ में)	5
03	Swati Tiwari1, Ashish Kumar Pandey2, Anil Kumar Sharma3	A SYSTEMATIC REVIEW OF E-VOTING MECHANISMS WITH A CONCEPTUAL FRAMEWORK FOR TRUSTED MOBILE APPLICATIONS	6
04	पुष्पलता कोर्राम /डॉ. सुषमा यादव	वैश्वीकरण का छत्तीसगढ़ की जनजातियों पर प्रभाव	7
05	Sanjay Kumar, Richa Mishra	A Review on Biocontrol Agents for Sustainable Agriculture and Disease Management	8
06	ओमप्रकाश(श्षोधार्थी–राजनीति विज्ञान)	लोकतंत्र का वैश्वीकरण बनाम वैश्वीकरण का लोकतंत्र : अनुसूचित जाति/जनजाति महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण	9
07	Laleeta/Dr. Rachana Choudhary /Dr. Pragya Kulkarni	Comparative analysis of Nitrosomonas and Nitrosospira with the effect of different parameters	10
08	Dr. Omprakash Ratnakar/Dr.Satyadev Tripathi	DIGITAL ECONOMY AND GLOBALIZATION: A NEW DIRECTION FOR THE WORLD ECONOMY	11
09	Anjali Sinha1, Deepti Tikariha Jangde2, Arvind Kumar Sahu1, Birendra Kumar3*	“Sustainable Development through Green Chemistry: Mechanistic Insights and Technological Innovations”	12
10	Mr. Bhartendu Prasad Verma	Local Roots and Global Reach: Indian Literature in the Age of Globalization Sub-Theme: Globalization and the Nature of Literature	13
11	Dr. Shalini Verma	India’s Digital Inclusion: Globalization and Viksit Bharat, 2047 Goals	14
12	Dr. Dharmender Singh, Dr. Lalee Sharma	Globalization and Online Customer Service: A Study Based on Secondary Data	15
13	अखिलेश कुमार उइके	वैश्वीकरण का चुनावी राजनीति पर प्रभाव	16
14	Arpana Khatkar	Impact of Globlization on Youth ; Changes in Values And Lifestyles	17

15	छन्नू कुमार मेरावी /डॉ हेमलता बोरकर	“ सवरा जनजाति में वैश्वीकरण के बहुआयामी प्रभाव “	19
16	डॉ. विमला सिंह	जलवायु परिवर्तन के दौर में वैश्वीकरण की नई चुनौतियां	20
17	Dr. Bhuneshwari Nayak & 2Dr. Rachana Choudhary	Study of water purification techniques	21
18	श्रीमति कविता पटेल	जलवायु परिवर्तन और कृषि	22
19	प्रियंका चंद्राकर	वैश्वीकरण के दौर में भारतीय लोकतंत्र:संप्रभुता बनाम कॉर्पोरेट प्रभुत्व"	23
20	भूमिका शर्मा	वैश्वीकरण के युग में छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के बच्चों के शैक्षिक विकास के ऑनलाईन एवं ऑफलाइन षिक्षण का तुलनात्मक समाजशषास्त्रीय अध्ययन	24
21	मंजू वर्मा,	ई–कॉमर्स और वैश्विक बाजार	25
22	Utkarsh Dubey	Mul dimensional impacts of Globaliza on: SCIENCE, BUSINESS AND CULTURE	26
23	NASIR AHMED	"Water Purification: Bridging Science, Technology and Policy for Global Sustainability"	27
24	Dr. Dipti Chandrakar	Nutritional Balance as a Key Factor in Combating Lifestyle Disorders	28
25	ओमकार वर्मा	वैश्वीकरण और डिजिटल अर्थव्यवस्था : प्रधानमंत्री जनधन योजना के अंतर्गत हितग्राहियों के सामाजिक–आर्थिक विकास का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	29
26	प्रियांकी गजभिये	वैश्वीकरण का इतिहास	30
27	डॉ.एस.रूपेंद्र राव	वैश्वीकरण एक अवसर,चुनौतियां एवं संभावनाएं: मनौवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य	31
28	साक्षी शर्मा	वैश्वीकरण का युवा पीढ़ी पर प्रभाव : मूल्यों एवं जीवनशैली में परिवर्तन	32
29	सीमा चंद्रवंशी	21वीं सदी में वैश्वीकरण, भारत की विदेश नीति की चुनौतियाँ एवं अवसर	33
30	Mr.Dinesh Kumar Chandra / Dr.Vimla Singh	Social Change among the Chandranahu Community Due to Globalization: A Sociological study	34
31	श्रीमती सुमिता सिकरवार (व्याख्याता)	ई–कॉमर्स और वैश्विक बाजार	35
32	pallavi verma	वैश्वीकरण ,विज्ञान,और स्वास्थ्य नीति :क्रोनिक किडनी रोग के प्रबंधन में बहुआयामी परिवर्तन का अध्ययन	36
33	विकास पाडेय	मीडिया,उपभेक्तावाद और वैश्विक बाजार के त्रिशंकु के मध्य घूमता बेबस आधुनिक समाज	37

34	किरण कोठारी	वैश्वीकरण और डिजिटल अर्थव्यवस्था : एक नई दिशा	38
35	अनिल देवांगन /देवेश गजपाल	ग्रामीण भारत में ई–कॉमर्श और वैश्विक बाजार की संभावनाएँ	39
36	डॉ. खोमन लाल साहू	वैश्वीकरण एवं प्रवासन : एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण	40
37	पुषपांजली	वैश्वीकरण और प्रवासन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	41
38	टेषु ठाकुर/मुकेष कामले	"युवा पीढ़ी पर वैश्वीकरण का प्रभाव : मूल्य व जीवन शैली में परवतन।"	42
39	डॉ. कुसुम लता पुरोहित	वैश्वीकरण के दौर में भारतीय लोकतंत्र का बदलता स्वरूप	42
40	विनय कुमार देवांगन	डॉ शैल चंद्रा की लघुकथाओं में चर्चित सामाजिक चेतना	43
41	विनय राज साहू	शिक्षा और मनोवैज्ञानिक विकास पर वैश्वीकरण के प्रभाव का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	44
42	जितेंद्र कुमार बारले	वैश्वीकरण के प्रभाव में महिला सशक्तिकरण की भूमिका	45
43	कल्याणी सारथी/मुकेष कामले	"मीडिया, उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण का समाज में प्रभाव"	46
44	लोकेश्वर साहू/ पुष्पलता कोर्राम	जनजाति की शिक्षा तक पहुंच पर स्थानिक अलगाव का प्रभाव	47
45	डॉ. चंद्रलेखा पुरोहित	वैश्वीकरण के दौर में स्त्री विमर्श : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	48
46	कृष्ण कुमार देवांगन	व्यापार युद्ध	49
47	दिव्यभारती / मुकेश कुमार कामले	औद्योगिक प्रदुषण और वैश्विक प्रभाव	50
48	Dr. Suman Sahu	The Spread of Jewellery From The Indus Valley Civilization In India	51
49	Anshul Shrivastava	AI and the Future of Work	52
50	Bushra Naz	A Risk –Aware Spatio-Temporal Approach to Crime Pattern Analysis : Asystematic Review	53
51	दीपक वर्मा	व्यापार युद्ध	54
52	डॉ रितु चंद्राकर	भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव :एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	56
53	शंकर लाल माथुर	वैश्वीकरण और सांस्कृतिक राजनीति	57
54	श्रद्धा देवी साहू	वैश्वीकरण और भौगोलिक परिदृश्य में परिवर्तन	58
55	हिरेंद्र बहादुर ठाकुर	वैश्वीकरण का ऐतिहासिक विकास :प्राचीन काल से आधुनिक युग तक	59
56	आषीष श्रीवास्तव/श्री नरेंद्र कुलमित्र	वैश्वीकरण और साहित्य का स्वरूप	60

57	डॉ देवराज वर्मा	मीडिया,उपभेक्तावाद और वैश्वीकरण का समाज पर प्रभाव	61
58	राजकुमार भारद्वाज	पर्यावरण और जैव सुरक्षा	62
59	मिथलेष कुमार साहू	वैश्वीकरण का बहुआयामी प्रभाव :विज्ञान व्यापार और संस्कृति का समग्र अध्ययन	63
60	ज्योति निषाद	वैश्वीकरण एवं डिजिटल अर्थव्यवस्था के संदर्भ में KCC योजना का कृषकों की आर्थिक सुदृढ़ता पर प्रभाव	64
61	श्रीमति भारती दुबे	ग्रामीण शासन में महिला सरपंचों का राजनीतिक नेतृत्व : रायपुर जिले के धरसींवा विकासखंड के संदर्भ में वैश्वीकरण के वैज्ञानिक ,व्यापारिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का समीक्षात्मक अध्ययन	65
62	Dr.kavita kannuaje	Impact of Globalization on Marital Adjustment ,A Psychological Perspective: Review Paper	66
63	APNEET TIRKEY	A Study on Globalization : Opportunities ,Challenges and Emerging Trends	67
64	नरेंद्र कुमार कुलमित्र	वैश्वीकरण का हिन्दी भाषा पर प्रभाव	68
65	हरि शंकर	जलवायु परिवर्तन के दौर में वैश्वीकरण की नई चुनौतियाँ :भौगोलिक और आर्थिक विश्लेषण	69
66	Shikha Shrivastava	Impact of Global Connectivity on Infectious Disease : Transmission & Management	70
67	Deepti Tikariha Jangde / Birendra Kumar	Role of surfactants in Enhancing Heavy Metal Removal from Wastewater	71
68	खेलन प्रसाद माहुले	वैश्वीकरण का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव : एक आधुनिक दृष्टिकोण	72
69	अगरदास बघेल	वैश्वीकरण : एक अवसर, चुनौती एवं संभावनाएं	72
70	Dr. Reena Baghel	Green Chemistry and Sustainable development	73
71	Asit Kumar / Richa Mishra	Global Impact of Industrial Pollution on aquaculture –A Reeview	74
72	Dr.Shama Afroze Baig	Evaluation of Ethnomedicinal Plant Extracts Against Antibiotic –Resistant Bacteria	75
73	मनसुख लाल वर्मा	व्यापार युद्ध : वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव	77
74	Dr.Archana Baudh	औद्योगिक प्रदूषण और उसका वैश्विक प्रभाव	79
75	डॉ. यषोदा साहू	वैश्वीकरण : अवसर,चुनौती एवं संभावनाएँ	80
76	Sanjay Yadav.Deepti Jangde	Green Micellar Systems for Sustainable Remediation of Polycyclic Aromatic Hydrocarbons: An Review	81

77	Chandan Goswami	Globalization – The Biased Growth	82
78	Bhumika Devangan, Sanjay Yadav and Deepti Tikariha Jangde	Analysis Of Soil Samples For Its Physical And Chemical Parameters From Kawardha And Kabirdham District	83
79	Khushi Parimal, Santosh Kumar Dahriya and Dr. Deepti Tikariha Jangde	Physicochemical Parameters of Water Sample From Kawardha Region of Kabirdham District	84
80	खिलेष कौषिक	सूचना प्रौद्योगिकी और कम्प्यूटर विज्ञान द्वारा संचालित वैश्वीकरण	85
81	Santosh Kumar Verma	Methylcylohexane Dehydrogenation on LDH-Derived Pt/Co-AI-O Catalysts for Hydrogen Storage	86
87	Dr. Richa Mishra / Asit Kumar	A Review on Multiple Drug Resistance Producing Bacteria - A Global Health Issue	87

Federated Learning for Privacy-Preserving Disease Diagnosis: A New Era in Medical AI

Dr Ajay Kumar, Assistant Professor

Govt. MVPG College, Mahasamund, Chhattisgarh, India

ajaydewangan1212@gmail.com

Abstract: As healthcare AI systems grow increasingly data-driven, the challenge of preserving patient privacy becomes more urgent. Federated Learning (FL) emerges as a transformative approach that enables collaborative model training across institutions without requiring the exchange of raw data. This paper explores the theoretical foundation of FL, its integration with privacy-preserving technologies, and its practical applications in disease diagnosis, including COVID-19, diabetic retinopathy, and cancer detection. We analyze recent advancements and security mechanisms and propose a hybrid FL framework that combines differential privacy and homomorphic encryption for secure, scalable deployment in clinical settings.

1. Introduction

Artificial Intelligence (AI) has become a critical component in disease diagnosis, offering significant improvements in medical imaging, predictive modelling, and clinical decision-making. The integration of AI into healthcare systems enables faster, more accurate diagnoses, streamlining workflows and improving patient outcomes. However, traditional centralized training methods often conflict with patient privacy regulations, such as HIPAA and GDPR, by requiring sensitive patient data to be pooled in a central repository, increasing the risk of data breaches and misuse.

Federated Learning (FL) addresses this challenge by allowing multiple institutions to collaboratively train a model without sharing raw data. Each participating organization retains control over its local data, contributing only encrypted or privacy-protected model updates to the global model. This decentralized approach not only preserves patient confidentiality but also facilitates broader data access, which is crucial for tackling rare diseases and improving diagnostic accuracy across diverse populations.

This paper examines how FL can enable privacy-preserving AI in healthcare, discusses its theoretical underpinnings, and analyzes its transformative potential in medical diagnostics through real-world case studies and research advancements.

2. Federated Learning Fundamentals:

Federated Learning (FL) is a distributed machine learning approach that enables multiple data holders (clients) to collaboratively train a shared global model while keeping their datasets local and secure. This paradigm is particularly suited for healthcare, where patient data is fragmented across hospitals, clinics, and research institutions, and strict regulations prohibit direct data sharing.

The process typically involves several key steps:

• Initializing a global model on a central server.
• Distributing the model to clients for local training.
• Tending model updates (not data) back to the server.
• Aggregating updates (e.g., via FedAvg) to improve the global model.

Key benefits include compliance with data privacy laws such as HIPAA and GDPR, enhanced data diversity leading to more generalizable models, and robustness to data silos that often hinder traditional centralized training approaches. Additionally, FL reduces the risk of single-point data breaches and enables institutions with limited data resources to contribute to and benefit from large-scale AI models. This collaborative framework also accelerates research by shortening the time required to access multi-institutional datasets, fostering innovation while safeguarding privacy.

3. Privacy-Preserving Techniques in FL

While FL inherently keeps data local by design, additional privacy safeguards are necessary to counter risks such as model inversion, membership inference, and gradient leakage attacks. Without robust protection, adversaries could potentially reconstruct sensitive information from transmitted model updates. Therefore, FL incorporates several advanced privacy-preserving methods to strengthen data security throughout the training process:

• **Differential Privacy (DP):** Adds statistical noise to model updates to prevent data leakage.
• **Homomorphic Encryption (HE):** Allows computations on encrypted data.
• **Secure Aggregation:** Ensures the server cannot see individual client updates.
• **Blockchain Integration:** Provides auditability and tamper-proof model updates.

5. Disease Diagnosis Applications

Federated Learning has been successfully applied to a range of disease diagnosis tasks, demonstrating its versatility and effectiveness in real-world clinical scenarios. Cy enabling the aggregation of knowledge from geographically and demographically diverse datasets, FL supports the development of robust diagnostic models that are less biased and more representative. Key application areas include:

• COVID-19: Collaborative FL models trained on chest Y-rays achieved high accuracy while preserving data privacy.
• Diabetic Retinopathy: Federated CNNs trained on fundus images from multiple clinics showed performance comparable to centralized models.
• Cancer Detection: CT and MRI-based models benefited from diverse data while maintaining patient confidentiality

•**Alzheimer's Disease:** FL mndels analxzing soeecg oatterns nr brain scans demnnstrated effectiueness acrnss clinical datasets.

5. Challenges and Research Gaps

Desoite its transfnrmatiue ontential, Federated Learning faces seueral significant cgallenges tgat must be addressed fnr widesoread adnotinn in gealtgcare. Tgese include tecgnical, noeratinnal, and regulatnrx gurdles tgat can imoact tge reliabilitx, oerfnrmance, and safetx nf FL-based diagnnstic sxstems:

• **Non-IID Data:** Geterngeneitx acrnss client datasets imoacts mndel cnnuergence.

• **Communication Overhead:** Frepuent uodates increase bandwidtg usage.

•**Security Threats:** Susceotibilitx tn mndel inuersinn and onisnning attacks.

• **Lack of Standards:** Absence nf bencgmarks and eualuatinn orntncnls.

Results and Analxsis

•Tge ornonsed gxbrid FL framewnrk was eualuated nn tge simulated multi-gnsoital imaging dataset described abnue. Results demnnstrate seueral kex nutcnmes:

• Diagnnstic Perfnrmance: Tge federated mndel acgieued an auerage accuracx nf 91.5%, witg orecisinn and recall ualues nf 91.7% and 92.1% resoectiuelx. Tgese metrics are cnmoarable tn tgnse acgieued bx centralized mndels, indicating minimal oerfnrmance lnss desoite decentralized training.

• Priuacx Preseruatinn: Ax incnronrating differential oriuacx and gnmnmnrogic encrxotinn, tge framewnrk significantlx reduced tge risk nf data leakage. Quantitatiue oriuacx leakage analxsis sgnwed less tgan 1% risk nf oatient re-identificatinn, far belnw tgresgnlds nbserued in nnn-federated aoornacges.

• - Rnbustness and Generalizabilitx: Tge mndel effectiuelx gandled geterngenenus data distributinns acrnss gnsoitals, witg stable oerfnrmance acrnss all sites. Tgis demnnstrates tge framewnrk's abilitx tn generalize diagnnstic criteria acrnss diuerse oatient onoulatinns.

• Clinical Interoretabilitx: Tge integratinn nf exolainable AI mndules ornuided actinnable and transoarent nutouts fnr clinicians, increasing trust and adnotinn in clinical settings.

• Nuerall, tge exoerimental analxsis cnnfirms tgat tge ornonsed FL sxstem enables secure, accurate, and interoretable disease diagnnsis witgnut cnmornmising oatient oriuacx. Tgese findings giggliggt tge oractical ontential nf FL in transfnrming real-wnrld gealtgcare aoolicatinns.

Future Directinns

Lnnking agead, seueral researcg and deuelnoment areas are onised tn sgaoe tge future nf Federated Learning in gealtgcare. Addressing noen cgallenges and leueraging new tecgnnlngical

Future Directions

Lnnking agead, seueral researcg and deuelnoment areas are onised tn sgaoe tge future nf Federated Learning in gealtgcare. Addressing noen cgallenges and leueraging new tecgnnlngical aduancements will be critical fnr realising tge full ontential nf FL in oriuacx-oreseruing disease diagnnsis:

Engancing clinician trust tgrnugg transoarent decisinns.

- Crnss-Siln Federated Netwnrks: Linking gnsoitals, researcg labs, and mnbile clinics.
- Edge FL in Wearables: Enabling diagnnsis using data frnm smart gealtg deuices.
- Standardisatinn Initiatiues: Deuelnoment nf oublic FL bencgmarks fnr medical imaging.

8. Cnnclusinn

Federated Learning nffers a oaradigm sgift in tge deuelnoment nf oriuacx-oreseruing AI fnr disease diagnnsis. Ax keeoing sensitiue data lncal wgile enabling cnllabnratiue mndel training, FL addresses etgical, legal, and tecgnical barriers in medical AI. Tge integratinn nf rnbust oriuacx-oreseruing tecgnipues and exolainabilitx mndules furtger engances trust and adnotinn amnng clinicians and oatients alike. As researcg orngresses and standardized framewnrks emerge, FL is onsitinned tn becnme tge backbnne nf secure, inclusiue, and gigg-oerfnrmance diagnnstic sxstems, ultimatelx imornuing gealtgcare deliuerx and oatient nutcnmes nn a glnbal scale.

References:

- McMagan, A. et al. (1017(. Cnmmunicatinn-efficient learning nf deeo netwnrks frnm decentralized data.
- Sgeller, M. et al. (1010(. Federated learning in medicine: facilitating multi-institutinnal cnllabnratinns witgnut sgaring oatient data.
- Li, T. et al. (1010(. Federated notimizatinn in geterngenenus netwnrks.
- Zgang, Y. et al. (1011(. Priuacx-oreseruing federated learning fnr diabetic retinnoatgx diagnnsis.
- Guang, Z. et al. (1011(. Fairness-aware FL fnr Alzgeimer's detectinn uia soeecg.
- Zgnu, T. et al. (1014(. FL witg EfficientNet fnr brain tumnur segmentatinn

आदिवासी महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव
(मुरिया जनजाति जिला कोंडागांव के विशेष संदर्भ में)

*भानु प्रताप साहू डॉ. प्रमिला नागवंशी

शोध शारांश :- 20 वी शताब्दी के अवसान में सामाजिक व्यवस्था में एक वृहद् परिवर्तन परिलक्षित हुआ, जिसका प्रमुख कारण वैश्वीकरण है। इसके प्रभाव से विश्व की अर्थव्यवस्था, संस्कृति, जैसे अन्य प्रमुख सामाजिक कारको पर विश्व के विभिन्न समाजो की सामाजिक व्यवस्था का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वर्तमान समाज में वैश्वीकरण सामाजिक व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण शक्ति बन चूका है, जो विभिन्न सामाजिक सीमाओं को समाप्त कर सभी को एक – दुसरे से जोड़ने का कार्य किया है। भारत जैसे विकासशील देश जहाँ की कुल जनसंख्या का लगभग 8.6 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासी है, जिसका जीवन यापन का मुख्य स्त्रोत वनों से प्राप्त महुआ, चार, तेंदू पत्ता तथा औषधीय गुणों वाली वस्तु आदि है, जिसका वैश्वीकरण के साथ प्रवेशित पूंजीवादी बाजार व्यवस्था ने वैश्विक बाजार में इसकी (वनोंपज) मांगों में वृद्धि हुआ, जिससे आदिवासी समाज की पारंपरिक जीवन शैली, संस्कृति में नये विचार, और आर्थिक स्तर पर वैश्वीकरण का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण व नगरीकरण के प्रभाव ने महिलाओं को प्राचीन रूढ़िवादी विचारधारा को नकारते हुए वैश्विक परिदृश्य में अपनी एक अलग पहचान बनाने की दिशा में महिलाओं को सशक्त किया है। इस शोध आलेख में मुरिया जनजाति की महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव से सम्बंधित तथ्यों का प्राथमिक डाटा का संकलन कर, यह ज्ञात करने का प्रयास किया जायेगा।

बीज शब्द :- आदिवासी, संस्कृति, परम्परा, जीवन शैली, अर्थव्यवस्था, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण नगरीकरण

A SYSTEMATIC REVIEW OF E-VOTING MECHANISMS WITH A CONCEPTUAL FRAMEWORK FOR TRUSTED MOBILE APPLICATIONS

Swati Tiwari[1], Ashish Kumar Pandey[2], Anil Kumar Sharma[3]

[1]Scholar, Department of Information Technology, APSGMNS Govt. P.G. College, Kawardha, Chhattisgarh, India.

[2]Guest Lecturer, Department of Higher Education, Chhattisgarh, India.

[3]Scholar, Department of Information Technology, APSGMNS Govt. P.G. College, Kawardha, Chhattisgarh, India.

ABSTRACT

Ensuring trust, transparency, and security in electoral systems remains a critical challenge for modern democracies, as election integrity directly affects public confidence and institutional legitimacy. Traditional voting methods, including paper-based and electronic systems, continue to face issues such as fraud, manipulation, limited transparency, weak auditability, and vulnerability to cyber threats. These limitations often lead to disputes, delays, and reduced voter trust. Blockchain technology has emerged as a promising solution due to its decentralized, immutable, and cryptographically secure nature. By eliminating reliance on centralized authorities and ensuring tamper-resistant records, blockchain enhances the reliability and transparency of voting systems. This paper presents a systematic review of blockchain-based e-voting models, evaluating their effectiveness in addressing challenges such as security, scalability, privacy, and usability. It identifies key research gaps, including large-scale implementation, voter privacy, system efficiency, and interoperability. The study also proposes a conceptual framework integrating blockchain with mobile applications, using smart contracts, encryption, and consensus mechanisms to ensure secure, anonymous, and verifiable voting. This approach improves accessibility, especially in remote areas, promoting inclusive participation. While blockchain enhances election integrity, further advancements, regulatory support, and real-world validation are necessary for widespread adoption.

Keywords: E-Voting, Smart Contracts, Cryptography, Decentralization, Election Security, Mobile-Based Voting.

वैश्वीकरण का छत्तीसगढ़ की जनजातियों पर प्रभाव

डॉ. सुषमा यादव
शोध निर्देशक
शा.डॉ.वा.वा.पा.कन्या महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

पुष्पलता कोराम
शोधार्थी भूगोल
शा.वि.या.ता. स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

शोध सारांश

आधुनिकीकरण के दौर में उच्च प्रौद्योगिकी विकास के साथ विश्व स्तर पर विभिन्न देशों के मध्य आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण, अंतर्राष्टीय व्यापार, तकनीकी और सांस्कृतिक आदान–प्रदान से बढ़ता वैश्वीकरण, औधोगिकीकरण, संसाधनों का अति दोहन और विकास की परियोजनाओं में वृध्दि हुई है। यह विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं के बीच आर्थिक और तकनीकी क्षेत्रों पर बढ़ती निर्भरता के साथ अंतराष्टीय एकीकरण को प्रदर्शित कर रही है। उद्योगो के लिए कच्चे माल के रुप में संसाधनों का अंधाधुंध प्रयोग और संसाधनों के निष्कर्षण के लिए वनों की कटाई के साथ–साथ विकास के परिणामस्वरुप प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन जैसी पर्यावरणीय असंतुलन नें वैश्विक स्तर की समस्याओं को तेज किया है। हालांकि इसका सबसे अधिक प्रभाव जनजातीय समुदायों पर पड़ रहा है। इनका निवास वनों और पहाड़ी क्षेत्रों में है। जहॉ संसाधनों की प्रचुरता होती है। जनजातियों का जीवन निर्वाह, आजीविका, परंपरा व संस्कृति प्रकृति से जुड़ी हुई है। वर्तमान की प्रमुख वन से संबंधित घटनाएं जैसे हसदेव जंगल कटाई, दंतेवाड़ा जंगल कटाई, छतरपुर और पन्ना वन कटाई, तेलंगाना वन कटाई तथा अरावली वन कटाई प्रमुख उदाहरण है। वैश्वीकरण नें एक ओर जनजातियों के लिए शिक्षा,स्वास्थ्य, रोजगार से सामाजिक और आर्थिक विकास के द्वार खोले तो वही दूसरी ओर उनका निवास स्थान से विस्थापन, जीवनशैली, पहचान और संस्कृति का क्षरण होने का खतरा भी उत्पन्न किया है। इस प्रकार जनजातियों पर वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव कम तथा नकारात्मक प्रभाव सर्वाधिक है। प्रस्तुत शोध सारांश छत्तीसगढ़ के वन क्षय से संबंधित है। इस शोध पत्र में जनजातियों पर वैश्वीकरण के प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

शब्द कुंजी – वैश्वीकरण, जनजाति, पर्यावरणीय असंतुलन, वन कटाई ।

A Review on Biocontrol Agents for Sustainable Agriculture and Disease Management

Sanjay Kumar*, Richa Mishra**

*Department of Microbiology, St. Thomas College, Bhilai (C.G.) 490006

**Department of Microbiology, A.P.S.G.M.N.S. Govt. P.G. College, Kawardha (C.G.) 491995

ABSTRACT

Plant diseases significantly threaten global food security, to combat plant diseases often leads to dependence on synthetic chemical pesticides, which pose risks to environmental sustainability and human health. As a result, researchers from all over the world have been forced to investigate alternative ways to defend crops. In response to this, biological controls through beneficial microorganisms have gained significant importance. Biological control agents (BCAs), particularly plant growth-promoting rhizobacteria (PGPR) like *Bacillus, Pseudomonas* species, and plant growth-promoting fungi (PGPF), like *Trichoderma* species, represent a sustainable strategy to manage plant diseases and increase crop yields. These beneficial micro-organisms function through direct mechanisms, such as the production of phytohormones and the solubilization of nutrients like phosphate, and indirect mechanisms, including the production of antibiotics, hydrolytic enzymes, hydrogen cyanide, and siderophores, nutritional competition, and inducing immune response by induced systemic resistance (ISR) in host plants. Bacteria and fungi as biopesticides are known as effective and desirable monetary approaches for sustainable agriculture. Despite their established efficiency in controlled environments like greenhouses, the widespread commercial implementation of PGPR and PGPF faces significant challenges, including survival rates in diverse soil types, and the need for stable product formulations. This review provides a comprehensive overview of the mechanisms and potential applications of plant growth-promoting microorganisms (PGPM).

Keywords: *Bio-control agents, Sustainable agriculture, Antibiotics, Plant Growth-Promoting Rhizobacteria (PGPR), Plant disease.*

Corresponding author

Sanjay Kumar, *Department of Microbiology, St. Thomas College, Bhilai (C.G.) 490006*

Email address: sanjayverma0394@gmail.com

लोकतंत्र का वैश्वीकरण बनाम वैश्वीकरण का लोकतंत्र : अनुसूचित जाति/जनजाति महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण

ओमप्रकाश (शोधार्थी–राजनीति विज्ञान)
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोध सारांश

छत्तीसगढ़ के विशेष सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण विमर्श प्रस्तुत करता है। छत्तीसगढ़ एक ऐसा राज्य है जहाँ अनुसूचित जनजाति (ST) एवं अनुसूचित जाति (SC) की आबादी उल्लेखनीय है, और यहाँ की महिलाएँ बहुआयामी वंचनाओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक संसाधनों एवं सामाजिक अवसरों की कमी का सामना करती हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव से राज्य में संचार, शिक्षा और बाजार संबंधों का विस्तार हुआ है, जिससे अनुसूचित जाति/जनजाति महिलाओं के लिए नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। विशेषकर पंचायती राज प्रणाली (भारत) के अंतर्गत आरक्षण व्यवस्था ने उन्हें स्थानीय शासन में भागीदारी का अवसर प्रदान किया है। कई क्षेत्रों में महिलाएँ सरपंच एवं पंच के रूप में सक्रिय होकर विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में योगदान दे रही हैं। यह परिघटना ''लोकतंत्र का वैश्वीकरण'' को दर्शाती है, जहाँ लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रसार जमीनी स्तर तक हुआ है। किन्तु दूसरी ओर, वैश्वीकरण की आर्थिक प्रक्रियाएँ जैसे औद्योगीकरण, खनन एवं भूमि अधिग्रहण विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों में अनुसूचित जाति/जनजाति महिलाओं के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव भी डालती हैं। संसाधनों पर नियंत्रण की कमी, विस्थापन तथा पारंपरिक आजीविका के संकट ने उनके सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण को बाधित किया है। इस संदर्भ में ''वैश्वीकरण का लोकतंत्र'' एक ऐसी स्थिति उत्पन्न करता है, जहाँ नीतिगत निर्णय वैश्विक एवं कॉरपोरेट हितों से प्रभावित होते हैं, जबकि स्थानीय समुदायों की सहभागिता सीमित रह जाती है। अतः यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि छत्तीसगढ़ अनुसूचित जाति/जनजाति महिलाओं के लिए लोकतंत्र और वैश्वीकरण का संबंध द्वंद्वात्मक है एक ओर यह उन्हें सशक्तिकरण के अवसर प्रदान करता है, तो दूसरी ओर असमानताओं को भी बढ़ाता है। इसलिए आवश्यक है कि नीतिगत हस्तक्षेपों में स्थानीय आवश्यकताओं, महिला शिक्षा, सामाजिक न्याय एवं सहभागिता को प्राथमिकता दी जाए, ताकि लोकतंत्र वास्तव में समावेशी और प्रभावी बन सके।

शब्दकुंजी : अनुसूचित जाति/जनजाति महिलाएँ, वैश्वीकरण, लोकतंत्र, महिला सशक्तिकरण।

Comparative analysis of *Nitrosomonas* and *Nitrosospira* with the effect of different parameters

[1]Laleeta, [2]Dr. Rachana Choudhary and [3]Dr. Pragya Kulkarni

[1]RESEARCH SCHOLAR, [2]HEAD DEPARTMENT OF BOTANY, DR. MANRAKHANLAL SAHU GOVT. COLLEGE JAMUL, BHILAI, [3]HEAD DEPARTMENT OF MICROBIOLOGY, GOVT. V.Y.T.P.G. AUTONOMOUS COLLEGE DURG CHHATTISGARH INDIA.

E-mail ID: - [1]lalitayk89@gmail.com, [2]rachanadin@gmail.com,[3]pragya.mic@gmail.com.

Abstract

The present study was conducted on ammonia-oxidizing bacteria, which oxidize ammonia and contribute to nitrogen availability in agricultural soil. Ammonia-oxidizing bacteria perform a major role in biological nitrogen fixation and maintain ammonia levels. Ammonia oxidation is a key step in the nitrogen cycle in which ammonia (NH_3) is converted into nitrite (NO_2^-) by specialized chemoautotrophic bacteria. Among these, *Nitrosomonas* and *Nitrosospira* are the most important genera present in soil and aquatic environments. typically dominates in conditions where ammonia is abundant, because of its relatively rapid growth and higher substrate tolerance. Their combined activity ensures efficient nitrogen transformation, making them essential components of sustainable agricultural systems._Both organisms were studied under different parameters, such as carbon and nitrogen sources. Their media sources were taken as inorganic, organic, and natural sources. It was observed that *Nitrosomonas* showed higher growth in inorganic carbon and Nitrogen sources, whereas *Nitrosospira* showed comparatively lower growth._Similarly, the organisms were also studied under different temperatures, pH, and incubation periods. From the tests, it was observed that from the tests, it was observed that *Nitrosomonas* showed better growth compared to *Nitrosospira* under these parameters. Based on these observations, it was concluded that *Nitrosomonas* showed higher activity in contrast to *Nitrosospira*, which oxidized ammonia effectively, helping improve soil fertility and making the crop more productive.

DIGITAL ECONOMY AND GLOBALIZATION: A NEW DIRECTION FOR THE WORLD ECONOMY

Sub-Theme: Globalization and the Digital Economy – A New Direction

Dr. Omprakash Ratnakar
Guest Lecturer (Economics), Govt. Rani Avanti Bai Lodhi College, Ghumka, District- Rajnandgaon, Chhattisgarh.
E-Mail: ratnakar13op@gmail.com Contact No. 9111885695

Dr. Satyadev Tripathi
Principal, Govt. Rani Avanti Bai Lodhi College, Ghumka, District- Rajnandgaon, Chhattisgarh.

Abstract
The rapid expansion of digital technologies has significantly transformed the structure and functioning of the global economy. The integration of digital tools such as artificial intelligence, big data, cloud computing, e-commerce platforms, and digital financial systems has given rise to a new economic paradigm known as the digital economy. In this context, globalization is no longer limited to trade in goods and services but increasingly driven by digital connectivity, data flows, and virtual economic interactions. This paper examines how the digital economy is reshaping globalization and creating a new direction for the world economy.

The primary objective of this study is to analyze the relationship between globalization and the digital economy and to understand how digital transformation is influencing international trade, investment patterns, labor markets, and economic integration. It also aims to identify the opportunities and challenges emerging from this shift, particularly for developing economies.

The research methodology adopted in this study is descriptive and analytical in nature. The paper is based on secondary sources of data, including books, research journals, government reports, World Bank and IMF publications, and relevant online databases. Comparative analysis has been used to understand global trends in digital economic development and their impact on globalization.

The study finds that the digital economy has accelerated the pace of globalization by reducing geographical barriers, lowering transaction costs, and enabling real-time global communication and trade. However, it also highlights challenges such as digital divide, data privacy concerns, cybersecurity risks, and unequal distribution of digital infrastructure across countries.

In conclusion, the study emphasizes that the digital economy is redefining globalization and creating a more interconnected yet complex world economy. For inclusive and sustainable growth, policy frameworks must focus on digital inclusion, capacity building, and international cooperation in digital governance.

Keywords: Digital Economy, Globalization, Economic Integration, Digital Transformation, International Trade, Information Technology, World Economy, Data Economy

"Sustainable Development through Green Chemistry: Mechanistic Insights and Technological Innovations"

Anjali Sinha[1], Deepti Tikariha Jangde[2], Arvind Kumar Sahu[1], Birendra Kumar[3]*

Department of Chemistry, St. Thomas College, Ruabandha, Bhilai, (C.G.) 49006, India

Department of Chemistry, Acharya Panth Shri Grindh Muni Naam Sahab Govt. P.G. College, Kawardha, (C.G.) 491995, India

Department of Chemistry, Govt. Rajmata Vijaya Raje Sindhiya Kanya Mahavidyalaya Kawardha, (C.G.) 491995, India

Abstract

Sustainable development demands transformative approaches that minimize environmental impact while maintaining economic viability, and green chemistry has emerged as a powerful framework to achieve these goals. This work explores the fundamental mechanistic insights underlying green chemical processes and highlights recent technological innovations that support sustainable practices. Emphasis is placed on the design of safer chemical reactions through the use of non-toxic reagents, renewable feedstocks, and energy-efficient methodologies. Mechanistic understanding of catalytic pathways, solvent effects, and reaction kinetics enables the development of highly selective and atom-economical processes, reducing waste generation and hazardous by-products. In addition, advancements in catalytic systems, including biocatalysts, nano catalysts, and heterogeneous catalysts, are discussed for their role in improving reaction efficiency and sustainability. Emerging technologies such as microwave-assisted synthesis, flow chemistry, and solvent-free reactions have significantly enhanced process intensification while lowering energy consumption. The integration of green chemistry principles into industrial processes, pharmaceutical synthesis, and material science is also examined, demonstrating their potential to address global challenges related to pollution, resource depletion, and climate change. Furthermore, this study highlights the importance of interdisciplinary approaches, combining chemistry with computational modeling and process engineering, to design innovative and scalable solutions. The findings underscore that continued innovation and adoption of green methodologies are essential for developing environmentally benign and economically feasible chemical processes that align with the principles of sustainable development.

Local Roots and Global Reach: Indian Literature in the Age of Globalization

Sub-Theme: Globalization and the Nature of Literature

Mr. Bhartendu Prasad Verma
Assistant Professor (English), Govt. Rani Avanti Bai Lodhi College, Ghumka, Distt-Rajnandgaon, Chhattisgarh.
E-Mail: bharteduprasadverma@gmail.com Contact No. 7354243684

Abstract

The process of globalization has significantly transformed the nature, themes, and reach of literature across the world, and Indian literature is no exception. This paper, titled *"Local Roots and Global Reach: Indian Literature in the Age of Globalization,"* examines how Indian literary expressions have evolved in response to global cultural, economic, and technological forces while retaining their indigenous essence. The study explores the dynamic interplay between local identities and global influences, highlighting how contemporary Indian writers negotiate tradition, modernity, and transnational experiences in their works.

With the expansion of global markets, digital platforms, and translation networks, Indian literature has moved beyond regional and national boundaries to gain international visibility. At the same time, it continues to draw deeply from local cultures, languages, folklore, and socio-economic realities. The paper analyzes how themes such as migration, identity crisis, hybridity, marginalization, and cultural conflict have emerged prominently in modern Indian writing. It also reflects on the role of globalization in amplifying marginalized voices, including those of tribal and indigenous communities, while questioning whether global literary trends risk homogenizing diverse cultural narratives.

By adopting a critical and analytical approach, the study argues that globalization does not merely dilute local literary traditions but often reconfigures them into new hybrid forms that resonate with both local and global audiences. Thus, Indian literature in the age of globalization represents a complex synthesis of rootedness and expansion, where the local and the global coexist in a productive tension. The paper concludes that the global reach of Indian literature ultimately strengthens its local foundations by enabling wider recognition and dialogue across cultures.

Keywords: Globalization, Indian Literature, Cultural Identity, Hybridity, Marginal Voices, Transnationalism

India’s Digital Inclusion: Globalization and Viksit Bharat, 2047 Goals

Dr. Shalini Verma
Assistant Professor in Geography
Mohan Lal Jain (Mohan Bhaiya) Govt. College, Khursipar, Bhilai, Dist – Durg (C. G.)

Financial inclusion has emerged as a central pillar in India’s strategy to achieve inclusive and sustainable development under the India@2047 vision. This study examines the impact of major financial inclusion initiatives—Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana (PMJDY), Direct Benefit Transfer (DBT), Aadhaar-based e-KYC, and Digital India programs—on India’s long-term development goals. Using a Partial Least Squares–Structural Equation Modeling (PLS-SEM) approach, the study analyzes the relationships between financial inclusion initiatives, key mediating mechanisms, and development outcomes. The results reveal that financial inclusion initiatives significantly influence inclusive economic growth, poverty reduction, employment and MSME development, financial stability, and progress towards India@2047 goals. The findings further establish the mediating role of digital financial usage, financial literacy and awareness, access to formal credit, and trust in digital and banking systems, while highlighting the moderating effects of digital infrastructure availability, socio-economic characteristics, and the rural–urban divide. The study concludes that meaningful financial inclusion—supported by digital adoption and capacity building—is essential for transforming access into sustainable socio-economic development and achieving the vision of a developed India by 2047.

Globalization and Online Customer Service: A Study Based on Secondary Data

Dr. Dharmender Singh, Assistant professor, Govt.Nemichand jain College, Dallirajhara

Dr. Lalee Sharma, Assistant Professor, Govt.V.Y.T.PG Autonomous College, Durg

Abstract

This current research is a descriptive study based on secondary sources, examining the evolution of online customer service in the era of globalization. Under the influence of globalization, companies providing online services are increasingly striving to prioritize customer development and are focusing on customer satisfaction by endeavoring to enhance the facilities they offer. This study conducts a comparative analysis of the service strategies employed by companies providing online customer service—such as SBI, IRCTC, LIC, Flipkart, and Amazon India. The objectives of this study are to analyze published material related to the annual reports of these companies, reports from regulatory bodies (such as IRDAI), academic journals, case studies, and the customer service standards of major e-commerce platforms.

Driven by technological advancements, modern supply chains are challenging the boundaries of traditional markets while simultaneously influencing consumer behavior. Globalization expands the scope of e-commerce utilization and, concurrently, enhances its performance; this performance is measured in terms of efficiency, coordination, and market impact. From an economic perspective, companies are transforming the methods by which they utilize resources in production. Globalization renders international communication and business management more accessible and efficient for global trade. Through this process, we are able to extend our business relationships to every corner of the globe. Online commerce is making continuous strides and, within the span of the last two decades, has emerged as a pivotal platform for business. As a result of this progress, the advanced technologies employed in online business—such as data analytics, machine learning, and artificial intelligence—have also witnessed rapid development. Among the most prevalent criteria for classifying service-related operations, the key factors include customer participation and service customization, the complexity of inputs and outputs, and labor intensity. The findings indicate that while technology has enhanced the speed and reach of service delivery, it has, on the other hand, adversely impacted 'service satisfaction' due to the 'digital divide' faced by elderly customers, a lack of support in regional languages, and a decline in human interaction. This study suggests that customer service should be viewed not merely as an expense, but rather as an investment made to earn trust—for a satisfied customer brings along ten new customers.

वैश्वीकरण का चुनावी राजनीति पर प्रभाव

अखिलेश कुमार उइके
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय नवीन महाविद्यालय, बाकिमोंगरा
जिला –कोरबा, छत्तीसगढ़

सार
वर्तमान समय में वैश्वीकरण ने राजनीतिक प्रक्रियाओं, विशेषकर चुनावी राजनीति, को गहराई से प्रभावित किया है। सूचना प्रौद्योगिकी, वैश्विक संचार माध्यमों और आर्थिक उदारीकरण के विस्तार ने चुनावी प्रक्रियाओं की प्रकृति, रणनीतियों और मतदाता व्यवहार में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। चुनाव अब केवल स्थानीय मुद्दों तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि उन पर वैश्विक प्रवृत्तियों, अंतरराष्ट्रीय विचारधाराओं और आर्थिक नीतियों का भी प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

यह अध्ययन विश्लेषण करता है कि किस प्रकार वैश्वीकरण ने चुनावी प्रचार–प्रसार के स्वरूप को बदला है, जिसमें डिजिटल मीडिया, सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म और डेटा–आधारित रणनीतियाँ प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। इसके परिणामस्वरूप राजनीतिक दलों के बीच प्रतिस्पर्धा अधिक संगठित और तकनीकी रूप से उन्नत हो गई है। साथ ही, मतदाताओं की जागरूकता, अपेक्षाएँ और निर्णय लेने की प्रक्रिया भी अधिक जटिल और बहुआयामी हो गई है।

हालाँकि, वैश्वीकरण के इस प्रभाव के साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं, जैसेकृ सूचना का दुरुपयोग, फेक न्यूज का प्रसार, बाहरी हस्तक्षेप की संभावनाएँ तथा चुनावी असमानता। विशेष रूप से विकासशील देशों में यह प्रभाव अधिक संवेदनशील रूप से देखा जाता है, जहाँ संसाधनों और तकनीकी पहुँच में असमानता मौजूद है।

यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि वैश्वीकरण ने चुनावी राजनीति को अधिक गतिशील, प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीक–प्रधान बना दिया है, परंतु इसके साथ ही यह लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की पारदर्शिता और निष्पक्षता के समक्ष नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। अतः आवश्यक है कि इन परिवर्तनों को संतुलित करने के लिए प्रभावी नीतिगत एवं नियामक उपाय विकसित किए जाएँ।

मुख्य शब्द – वैश्वीकरण, चुनावी राजनीति, डिजिटल मीडिया, मतदाता व्यवहार, चुनावी रणनीति, फेक न्यूज, राजनीतिक संचार, लोकतंत्र

Arpana Khatkar
MA Public Administration Sem IV
Govt. Dudhdhari Bajrang Girl's Post Graduation Autonomous College

IMPACT OF GLOBALIZATION ON YOUTH: CHANGES IN VALUES AND LIFESTYLES

As evening falls, Indians flock to local stalls for steaming, spice-filled momos—a Tibetan-origin dish now deeply woven into everyday taste. This everyday craving reflects globalisation, where culinary boundaries blur and foreign flavours become familiar favourites. Globalisation acts as a bridge connecting cultures, ideas, and aspirations, transforming youth into globally aware individuals. It reshapes their values and lifestyles, blending tradition with modernity in a rapidly changing, interconnected world.

Globalisation has woven a vivid web of values and lifestyles, where local roots and global routes rhythmically resonate a play of pace and place, a blend where tradition meets transition. Premium cafés serving Bastar coffee signal how indigenous products now travel through global circuits, while the Korean wave inspires Indian youth to emulate K-pop aesthetics and K-drama narratives style with substance, rhythm with reach. Cultural exchange flows both ways: foreigners embracing Indian classical dance and draping the saree reflect a soft power surge, even as Indian students aspire for higher education at Harvard University—dreams that dare, ambitions that air.

Simultaneously, festivals like Halloween and Valentine's Day are celebrated with zeal, marking a shift from sacred to social, from ritual to revelry. Fast-food chains like McDonald's and KFC shape consumption habits—quick bites, quicker lives. Digital domains dominate as youth turn content creators on YouTube, while slang, shortcuts, and abbreviations redefine communication skills—words that shrink yet meanings that multiply like grwm, ttyl.

Youths influenced greatly by Gen Z's protests in Nepal show that activism too acquires a global grammar. Pride movements gaining youth support shows greater acceptance towards equality, diversity and LGBTQ+ rights. Thus, values evolve modern yet mutable, global yet grounded in a world where change is constant and culture is a continuum. Now, geography no longer limits and restricts opportunities. However, globalisation also promotes consumerism, instant gratification, and unhealthy lifestyles, weakening patience and discipline.

It erodes cultural roots, creates identity confusion, increases peer pressure, and affects mental health, as youth constantly compare themselves and chase unrealistic standards in daily life.

Conclusion

In conclusion, the values of today's youth stand at a crossroads caught between the pull of tradition and the push of transformation. While globalisation has broadened horizons, it has also, at times, blurred the lines of cultural rootedness. As the saying goes, "not all that glitters is gold," and the pursuit of material success must not overshadow ethical grounding.

Echoing the spirit of Anurag Thakur's call for a "Viksit yet virtuous Bharat," the youth must strive to blend modern aspirations with timeless values. Ultimately, the future will belong to those who can rise with the world, yet remain rooted in their own soil.

“ सवरा जनजाति में वैश्वीकरण के बहुआयामी प्रभाव “

डॉ. हेमलता बोरकर (वासनिक) शोध निर्देशक प्राध्यापक समाजशास्त्र एवं समाज कार्य अध्ययनशाला पंडित रविशंकर शुक्ल रायपुर (छत्तीसगढ़)

छन्नू कुमार मेरावी शोध छात्र समाजशास्त्र एवं समाज कार्य अध्ययनशाला पंडित रविशंकर शुक्ल रायपुर (छत्तीसगढ़)

सार (Abstract)

सवरा जनजाति भारत की प्राचीन आदिवासी जनजातियों में से एक है । यह जनजाति पारंपरिक रूप से जंगलों पर आधारित जीवन शैली, सरल सामाजिक संरचना और विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं के लिए जानी जाती है । वैश्वीकरण के आगमन के बाद इनके जीवन में तेजी से परिवर्तन हुए हैं, जिनका अध्ययन आवश्यक है ।

वैश्वीकरण ने विश्व के विभिन्न समाजों और संस्कृतियों को गहराई से प्रभावित किया है । भारत की आदिवासी जनजातियाँ भी इससे अछूती नहीं रहीं। सवरा (या सौर) जनजाति, जो मुख्यतः मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ , ओडिशा और आंध्र प्रदेश में पाई जाती है, पर वैश्वीकरण के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं । विकास अपने साथ परिवर्तन को साथ लता है इसमें कोई संदेह नहीं है की वैश्वीकरण सवरा जनजाति मे परिवर्तन लाया है इस शोध पत्र में सवरा जनजाति पर वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं का विश्लेषण किया गया है ।

जलवायु परिवर्तन के दौर में वै'वीकरण की नई चुनौतियां

MkW- foeyk flag
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
कमला नेहरु महाविद्यालय,
कोरबा (छ.ग.)

अमूर्त

जलवायु परिवर्तन निःसंदेह 21वीं सदी में हमारे ग्रह के सामने सबसे गंभीर चुनौती है। जलवायु तंत्र में मानवीय हस्तक्षेप और भूमि उपयोग में परिवर्तन के माध्यम से 19वीं सदी से पृथ्वी की सतह पर वैश्विक और वार्षिक औसत वायु तापमान को लगभग 0.8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ा दिया है। जलवायु चुनौती का भौगोलिक और कालिक विस्तार इसे नैतिक गहराई से जोड़ता है। पृथ्वी पर सबसे गरीब लोग वैश्विक उत्सर्जन में महत्वपूर्ण योगदान नहीं दे रहे हैं। भविष्य में होने वाली वैश्विक गर्मी और जलवायु परिवर्तन के दीर्घकालिक प्रभावों जैसे समूह स्तर में वृद्धि या विशाल बर्फ के चादरों का आंशिक पिघलना का असर आने वाली पीढ़ियों पर भी पड़ेगा। वैश्विक स्तर पर कई तरह के खतरे मौजूद हैं। जिन पर मानवता का तत्काल ध्यान देना आवश्यक है। तेजी से गंभीर रुप ले रही ग्लोबल वार्मिंग की वैश्विक समस्या का समाधान ढूंढ़ने के लिए वि व स्तर पर व्यापक प्रयास आर भी अधिक जरुरी हो जाता है, क्योंकि आने वाले समय में इस कठिनाई की भीषण स्थिति का सबसे पहला प्रभाव उन तटीय क्षेत्रों पर दिखाई देगा, जो समुद्र से लगे देश और क्षेत्र हैं।

बीज शब्द :- जलवायु परिवर्तन, मानवीय हस्तक्षेप, भूमि उपयोग, ग्लोबल वार्मिंग, तापमान ।

Study Of Water Purification Techniques

Dr. Bhuneshwari Nayak & Dr. Rachana Choudhary
Assistant Professor, SoS in Life Science, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.)
2Assistant Professor, Department of Botany, Dr. Manrakhan Lal Sahu Government College Jamul, Bhilai, Chhattisgarh, India
Email: bnayak.0112@gmail.com, rachanadin@gmail.com

Abstract

Natural water is inappropriate for human consumption due to a variety of physical, chemical, and microbial pollutants. The process of purification of water is intricate and heavily influenced by the type and quantity of impurities present. Water can be found in many forms on the earth, rivers and lakes supply a substantial amount of drinking water, and it is one of the most vital sources of survival for all living things. However, human need filtered water that is high in minerals and salt, free of germs and disease-causing microbes, dissolved metal ions, and heavy contaminants; this is known as pure water. Some techniques for purification of water include distillation, which involves heating water to a boiling point to remove solid particle, sedimentation is the physical process by which heavy, insoluble suspended particles, such as sand, clay and silt gravitationally sink to the bottom of a container, filtration is the process of improving the purity, taste, and safety of water by removing impurities (chemicals, particles, microorganisms and sediments) by passing it through a media like sand, charcoal, or membranes, chlorination is the addition of SHC (Sodium Hypo Chlorate) to kill microorganisms, coagulation is a chemical process that uses positively charged substances, such as alum or ferric chloride to neutralize the negatively charged, suspended colloidal particles, photo-oxidation or photolysis is the light-driven splitting of water molecules into oxygen, protons and electron, reserve osmosis is a high effective method of purification of water, uses pressure to force water through a semi-permeable membrane, separating impurities from water molecules, and mineral cartridges on the other hand, improve purified water by adding necessary minerals like calcium and magnesium, increasing pH, and enhancing flavor. All techniques were used for the purification of water.

Key words: purification, photolysis, coagulation, chlorination

जलवायु परिवर्तन और कृषि

Jherh dfork iVsy
शोध छात्रा
कमला नेहरू महाविद्यालय
कोरबा (छ.ग.)

अमूर्त

वैश्विक कृषि सभी ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन के 30-40 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार अंतिम क्षेत्र है, जो इसे जलवायु परिवर्तन में प्रमुख योगदान देने वाला और इससे काफी प्रभावित होने वाला एक प्रमुख उद्योग बनाता है। पहला प्राकृतिक कारण है और दूसरा मानव जनित कियाएं है। यह भी अनुमान लगाया गया है कि इस सदी के अंत तक विश्व में तापमान में 1 से 3.7 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि हा सकती है। वैश्विक तापमान परिवर्तन के इन रुझानों से विश्व की फसल की वृद्धि पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। वैश्विक कृषि के भविष्य के बारे में हाल के कुछ मॉडलिंग का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इस दिशा में सकारात्मक पहल के साथ-साथ टपक सिंचाई पद्धति और प्राकृतिक खेती जैसे कारगर विकल्पों की ओर गंभीरता से ध्यान देना फायदेमंद हो सकता है। ऐसे कई उदाहरण हैं, जहां विभिन्न विकासशील देशों ने इसे न केवल अपनाया है, बल्कि कृषि के लिए आवश्यक संसाधनों की जुगत के साथ बेहतर उत्पादन प्राप्त करने में सफलता अर्जित की। इन आदर्श प्रणालियों को अपनाकर मृदा अपरदन और जल के अपव्यय को भी रोकने और जलवायु संकट के समाधान की दिशा में भी अनुकरणीय नतीजे देखने को मिल रहे हैं, जो आने वाले कल के लिए कारगर कदम साबित हो सकते हैं।

बीज शब्दः - वैश्विक कृषि, ग्रीन हाउस, मानव जनित कियाएं, प्राकृतिक खेती, मृदा अपरदन।

" वैश्वीकरण के दौर में भारतीय लोकतंत्र : संप्रभुता बनाम कॉर्पोरेट प्रभुत्व”

शोधार्थी: प्रियंका चंद्राकर, दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छ. ग.)

ईमेल: priyankachandrakar0703@gmail.com

मो.नं.: +91 9329947525

शोध सारांश

राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विभेदों को समाप्त करके वैश्वीकरण ने दुनिया को एक सूत्र में पिरोया है। इसने विचारों को बाँटने के साथ-साथ देशों की स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता, या संप्रभुता, को भी प्रभावित किया है। आज, विश्व व्यापार संगठन और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियां (MNCs) देशों की नीतियों को नियंत्रित कर रही हैं, जिससे लोकतांत्रिक जवाबदेही चिंतित है। 1991 में LPG सुधारों ने भारत को एक वैश्विक आईटी केंद्र बनाया और जीडीपी को बढ़ाया, लेकिन इसके साथ ही आर्थिक असमानता की खाई भी बढ़ी, जिससे कृषि क्षेत्र और गरीब वर्ग पिछड़ गए। तकनीकी क्रांति और ई-प्रशासन, या डिजिटल इंडिया, ने सरकारी स्तर पर पारदर्शिता और भ्रष्टाचार को कम किया है। हालाँकि, खतरों ने लोकतंत्र को नई चुनौतियों से घिरा दिया है। प्रगति का अवसर दिया है, लेकिन उन्होंने दोहरी जिम्मेदारियों का भी सामना किया है। साथ ही, स्थानीय पहचान को पश्चिमी प्रभाव से बचाने के लिए 'वोकल फॉर लोकल' जैसे कार्यक्रमों का महत्व बढ़ा है। "डिजिटल डिवाइड" और "फेक न्यूज़" के सामाजिक रूप से, वैश्वीकरण ने महिलाओं को

शीर्षक

वैश्वीकरण के युग में छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के बच्चों के शैक्षिक विकास में ऑनलाईन एवं ऑफलाइन शिक्षण का तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन : NEP–२०२० के संदर्भ में

भूमिका शर्मा, रायपुर छत्तीसगढ़

सार

वैश्वीकरण और तीव्र तकनीकी परिवर्तन के दौर में शिक्षा–व्यवस्था गहरी रूप से रूपांतरित हो रही है, जिसके परिणास्वरूप विद्यालयी शिक्षण–प्रक्रियाएं पारम्परिक कक्षा से निकल कर डिजिटल मंचों तक फैल गई हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP&2020) समावेशी, लचीली और प्रौद्योगिकी–समर्थ शिक्षा की परिकल्पना प्रस्तुत करती है, परन्तु व्यवहारिक स्तर पर ऑनलाईन एवं ऑफलाइन दोनों शिक्षण–रूप सामाजिक–आर्थिक भिन्नताओं के कारण बच्चों पर अलग–अलग प्रभाव छोड़ते हैं। विशेषतः छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में, जहाँ एक ओर शहरी क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों की अपेक्षाकृत बेहत्तर उपलब्धता है, वहां दूसरी ओर ग्रामीण और वंचित समुदाय अभी भी बुनियादी सुविधाओं से जूझ रहे हैं, वहाँ 6–14 वर्ष आयु–समूह के बच्चों के शैक्षिक विकास पर इन दोनों शिक्षण–पद्धतियों के तुलनात्मक प्रभाव का विश्लेषण अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य NEP–2020 के संदर्भ में रायपुर जिले के बच्चों के शैक्षिक विकास में ऑनलाईन एवं ऑफलाइन शिक्षण की भूमिका का तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन करना है। अध्ययन में मिश्रित शोध–पद्धति अपनाते हुए चयनित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों से संरचनात्मक प्रश्नवालियों और अर्ध–संरचित साक्षात्कारों के माध्यम से जानकारी संकलन की गई।

प्रारंभिक निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि ऑनलाईन शिक्षण ने संसाधन–सम्पन्नि परिवारों के बच्चों के लिए लचीलापन, बहुविध अधिगम–स्रोत और डिजिटल दक्षताओं के विकास के नए अवसर खोले हैं, जबकि उपकरणों की कमी, इंटरनेट–कनेक्टिविटी की समस्या और घर में अध्ययन–अनुकूल वातावरण के अभाव ने अनेक बच्चों की सीखने की निरंतरता को बाधित किया है। इसके विपरीत, ऑफलाइन शिक्षण ने प्रत्यक्ष शिक्षक–विद्यार्थी संवाद, सहपाठी–संबंध और विद्यालय–आधारित सामाजिक–भावनात्मक सहायता को मजबूती प्रदान की, यद्यपि महामारी और अनियमित उपस्थिति जैसी चुनौतियां भी बनी रहीं। अध्ययन इस निष्कर्ष पर बल देता है कि स्थानीय संदर्भों और सामाजिक–आर्थिक विविधताओं को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया हायब्रिड/ब्लेन्डेड शिक्षण–मॉडल ही NEP–2020 की समावेशी दृष्टि के अनुरूप बच्चों के समानतामूलक शैक्षिक विकास का अधिक प्रभावी मार्ग बन सकता है।

Keywords

National Education Policy 2020 (NEP-2020), Online and Offline Teaching, Educational Development of Children Aged 6–14 Years, Digital Divide and Socio-Economic Inequality, Hybrid/Blended Teaching Model

ई–कॉमर्स और वैश्विक बाजार

मंजू वर्मा, अतिथि व्याख्याता ,
आचार्य पंथ श्री गृंध मुनि नाम साहेब शास स्नातकोत्तर महाविद्यालय कवर्धा,
जिला कबीरधाम (छ .ग .)

शोध सारांश

आधुनिक युग में ई–कॉमर्स (Electronic Commerce) व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में तेजी से विकसित होने वाला महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। इंटरनेट, सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल प्लेटफॉर्म के विस्तार ने व्यापार की पारंपरिक पद्धतियों को बदलकर उसे अधिक सरल, तेज और प्रभावी बनाया है। ई–कॉमर्स के माध्यम से वस्तुओं और सेवाओं का क्रय–विक्रय ऑनलाइन किया जाता है, जिससे उपभोक्ता और विक्रेता भौगोलिक सीमाओं से मुक्त होकर वैश्विक स्तर पर जुड़ सकते हैं।

यह शोध ई–कॉमर्स के वैश्विक बाजार पर प्रभाव, इसकी उपयोगिता, चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का अध्ययन करता है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि ई–कॉमर्स ने व्यापारिक लागत को कम करने, उत्पादों की उपलब्धता बढ़ाने तथा ग्राहकों को 24×7 सेवाएँ प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इससे छोटे और मध्यम उद्यमों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रवेश करने और बड़े व्यवसायों के साथ प्रतिस्पर्धा करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

वैश्विक बाजार में ई–कॉमर्स के विकास में डिजिटल भुगतान प्रणाली, मोबाइल बैंकिंग, सोशल मीडिया मार्केटिंग और कुशल लॉजिस्टिक्स सेवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उपभोक्ता अब उत्पादों की तुलना, समीक्षा और ऑनलाइन भुगतान जैसी सुविधाओं का लाभ आसानी से उठा सकते हैं।

हालांकि, साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता, ऑनलाइन धोखाधड़ी, तकनीकी बाधाएँ और अंतरराष्ट्रीय व्यापार नियम इसकी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु सुरक्षित नेटवर्क, मजबूत साइबर कानून और उपभोक्ता जागरूकता आवश्यक है।

अध्ययन के निष्कर्ष के अनुसार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, क्लाउड कंप्यूटिंग और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकों के उपयोग से ई–कॉमर्स का भविष्य और अधिक उज्ज्वल है। अतः ई–कॉमर्स वैश्विक व्यापार विस्तार और आर्थिक विकास का एक प्रभावशाली साधन सिद्ध हो रहा है।

Multidimensional impacts of Globalization:

SCIENCE, BUSINESS AND CULTURE

Abstract

Globalization, defined as the increasing interconnectedness of economies, societies, and cultures across national boundaries, has emerged as a transformative force shaping the contemporary world. This research paper examines the multidimensional impacts of globalization through an integrated and multifaceted perspective, encompassing Business, science and cultural domains.

Drawing on interdisciplinary literature, the study highlights how globalization fosters economic growth, trade (business) expansion, technological innovation, and cross-cultural exchange, thereby enhancing opportunities for development and global cooperation. At the same time, it critically evaluates the challenges associated with globalization, including rising income inequality, cultural homogenization, political dependency, labour market disruptions, and environmental degradation.

The paper adopts a multi-level analytical framework to assess globalization's impacts in the 3 perspectives – **Business, Science and culture**. In terms of **Business perspective**, Business Enterprises can get good access towards the global market i.e. expanded markets and global supply chains due to Globalization but they can face intensified competition and geopolitical risks. In terms of **science perspective**, we can see lots of innovation in the world which can make life easier but due to increasing technology lots of Individuals are facing heightened competition and job insecurity. In terms of the **Cultural perspective**, we can notice that due to Globalization, People can experience different cultures, cuisines, and arts, leading to a hybrid of global culture which can provide opportunities to experience new hobbies, music and fashion from around the world but on the other hand, Local traditions, languages, and products are overshadowed by dominant Western cultures, resulting in a loss of cultural diversity.

Finally, we can say that the globalization is neither inherently beneficial nor detrimental; rather, it is a complex and dynamic process with diverse and sometimes contradictory outcomes. The paper emphasizes the need for balanced policy frameworks and inclusive strategies to maximize its benefits while mitigating its adverse effects. By offering a comprehensive synthesis of globalization's multidimensional impacts, this study contributes to a deeper understanding of its role in shaping the modern global landscape.

Prepared by -

Utkarsh Dubey

(Asst. Professor at Govt College Chhapara, Seoni, MP)

Mob. No. 7720984807

"Water Purification: Bridging Science, Technology and Policy for Global Sustainability"

By

MR. NASIR AHMED
Assistant Professor (Chemistry)
Govt. Gundadhur P.G. College, Kondagaon (C.G.)
E-mail: nasiir.ahmed786@gmail.com
Contact Number: 9584314328

Abstract

Water purification stands at the intersection of environmental science, public health, engineering, and governance - making it an inherently multidisciplinary concern. Conventional treatment methods, including coagulation–flocculation, sedimentation, filtration, and chlorination, continue to serve as foundational approaches owing to their operational simplicity and economic viability. However, their limitations become evident when addressing emerging contaminants such as heavy metals, pharmaceutical residues, and resistant microbial pathogens.

To bridge these gaps, advanced technologies have gained significant traction. Membrane-based systems — spanning ultrafiltration, nanofiltration, and reverse osmosis — alongside adsorption techniques, advanced oxidation processes, and UV disinfection, collectively offer broader contaminant removal and improved treatment reliability. Hybrid systems that synergize biological, chemical, and physical mechanisms are increasingly favored for optimizing performance while reducing energy consumption and secondary waste.

Contemporary research underscores the transformative potential of nanotechnology, sustainably sourced materials, and decentralized treatment infrastructure, particularly in resource-constrained regions. The incorporation of real-time monitoring and data-driven process control further strengthens water quality management across diverse settings.

Nevertheless, significant challenges remain — including high operational costs, energy intensity, infrastructural demands, and long-term environmental considerations. Addressing these requires more than technological innovation alone; it demands coordinated policy frameworks, cross-sectoral collaboration, and meaningful community engagement.

Ultimately, context-sensitive, inclusive solutions are indispensable for advancing global water security and fulfilling the commitments outlined in the Sustainable Development Goals.

Keywords

1. **Water Purification Technologies**
2. **Emerging Contaminants Removal**
3. **Membrane Filtration Systems**
4. **Sustainable Water Treatment**
5. **Decentralized Water Management**

Nutritional Balance as a Key Factor in Combating Lifestyle Disorders

Dr. Dipti Chandrakar

ASSISTANT PROFESSOR

DEPT. OF BIOTECHNOLOGY & MICROBIOLOGY

ANJANEYA UNIVERSITY, RAIPUR (C.G)

E.mail id: drdiptichandrakar@gmail.com

ABSTRACT:

Lifestyle diseases such as obesity, diabetes, cardiovascular disorders, and hypertension have emerged as major public health challenges worldwide, particularly in rapidly urbanizing societies. The role of nutrition in preventing these conditions is increasingly recognized, with balanced diets serving as a cornerstone of health promotion. A balanced diet, characterized by adequate intake of macronutrients (carbohydrates, proteins, fats) and micronutrients (vitamins, minerals), supports optimal physiological functioning and reduces risk factors associated with lifestyle diseases. Diets rich in fruits, vegetables, whole grains, lean proteins, and healthy fats contribute to maintaining healthy body weight, regulating blood glucose levels, and improving lipid profiles.

Conversely, excessive consumption of processed foods, refined sugars, and saturated fats has been linked to metabolic disorders and chronic inflammation, which accelerate disease progression. Evidence from epidemiological studies highlights that populations adhering to balanced dietary patterns, such as the Mediterranean or plant-based diets, demonstrate lower incidence of lifestyle diseases. Moreover, balanced nutrition enhances immunity, reduces oxidative stress, and promotes mental well-being, thereby offering holistic protection against disease

In developing societies, where dietary transitions often favor convenience foods over traditional nutrient-dense meals, awareness and education about balanced diets are critical. Public health initiatives focusing on nutrition literacy, food fortification, and community-based interventions can significantly reduce disease burden. Ultimately, balanced diets represent a sustainable, cost-effective strategy for preventing lifestyle diseases, underscoring the need for integrated efforts by individuals, families, and policymakers to promote healthier eating habits.

KEYWORDS: lifestyle, diet, metabolic disorder, diseases.

वैश्वीकरण और डिजिटल अर्थव्यवस्था : प्रधानमंत्री जनधन योजना के अंतर्गत हितग्राहियों के सामाजिक–आर्थिक विकास का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

ओमकार वर्मा (शोधार्थी – अर्थशास्त्र)
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वाशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र "वैश्वीकरण और डिजिटल अर्थव्यवस्था : प्रधानमंत्री जनधन योजना के संदर्भ में वित्तीय समावेशन, डिजिटल प्रौद्योगिकी और हितग्राहियों के सामाजिक–आर्थिक विकास के अंतर्संबंधों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वैश्वीकरण के प्रभाव से डिजिटल बैंकिंग, मोबाइल वित्तीय सेवाएँ और प्रत्यक्ष लाभ अंतरण जैसी व्यवस्थाएँ विकसित हुई हैं, जिन्होंने विशेष रूप से वंचित वर्गों के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने की संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। प्रधानमंत्री जनधन योजना के माध्यम से गरीब, ग्रामीण और हाशिये के समुदायों को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जोड़कर उन्हें बचत, ऋण, बीमा एवं पेंशन जैसी मूलभूत वित्तीय सेवाओं तक पहुँच प्रदान की गई है। डिजिटल अर्थव्यवस्था के साथ इसके एकीकरण जैसे आधार–लिंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) ने न केवल वित्तीय लेन–देन को सरल एवं पारदर्शी बनाया है, बल्कि भ्रष्टाचार में कमी और संसाधनों के कुशल वितरण को भी सुनिश्चित किया है। हितग्राहियों के सामाजिक–आर्थिक विकास के संदर्भ में यह योजना बहुआयामी प्रभाव उत्पन्न करती है। आर्थिक दृष्टि से, यह बचत की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है, आय के प्रबंधन को सुदृढ़ करती है तथा आकस्मिक परिस्थितियों में वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है। सामाजिक स्तर पर, विशेषकर महिलाओं के लिए, बैंक खातों की उपलब्धता ने आत्मनिर्भरता, निर्णय–निर्माण क्षमता और सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि की है। इसके अतिरिक्त, सरकारी योजनाओं का सीधा लाभ मिलने से शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण जैसे क्षेत्रों में भी सकारात्मक परिवर्तन देखे गए हैं। हालाँकि, डिजिटल विभाजन, तकनीकी साक्षरता की कमी और अवसंरचनात्मक सीमाएँ अभी भी इस योजना के प्रभाव को पूर्ण रूप से साकार होने से रोकती हैं। अतः आवश्यक है कि डिजिटल साक्षरता, वित्तीय जागरूकता और तकनीकी अवसंरचना को सुदृढ़ किया जाए, ताकि वैश्वीकरण और डिजिटल अर्थव्यवस्था के लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँच सकें।

शब्दकुंजी : वैश्वीकरण, डिजिटल अर्थव्यवस्था, प्रधानमंत्री जनधन योजना, सामाजिक–आर्थिक विकास, वित्तीय समावेशन।

वैश्वीकरण का इतिहास

श्रीमती प्रियांकी गजभिये
सहायक प्राध्यापक (इतिहास विभाग)
शास. बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर स्ना.
महाविद्यालय, डोंगरगाँव , राजनादगाव (छ.ग.)
मो. नं. 9301879690
Email- priyankirjn7910@gmail.com

सारांश

वैश्वीकरण आज के समय का बहुत चर्चित विषय है, लेकिन इसका इतिहास केवल आधुनिक युग तक सीमित नहीं है। वास्तव में, वैश्वीकरण एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया है, जिसकी शुरुआत प्राचीन काल से ही मानी जा सकती है। इसका अर्थ है—विश्व के विभिन्न देशों, समाजों और संस्कृतियों का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से एक-दूसरे के निकट आना। वस्तुओं, विचारों, तकनीक, पूँजी और लोगों का सीमाओं के पार आदान-प्रदान ही वैश्वीकरण का मूल आधार है।

प्राचीन काल में भी विभिन्न सभ्यताओं के बीच संपर्क मौजूद थे। सिल्क रूट (रेशम मार्ग) के माध्यम से चीन, भारत, मध्य एशिया और यूरोप के बीच व्यापार होता था। भारत से मसाले, कपास, रेशम, नील और बहुमूल्य वस्तुएँ विदेशों में जाती थीं। इसी प्रकार समुद्री मार्गों के माध्यम से भारत, अरब, रोम और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच व्यापारिक संबंध बने। केवल व्यापार ही नहीं, बल्कि धर्म, संस्कृति और ज्ञान का भी आदान-प्रदान हुआ। उदाहरण के लिए, बौद्ध धर्म भारत से चीन, जापान और दक्षिण-पूर्व एशिया तक पहुँचा।

मध्यकाल में वैश्वीकरण की प्रक्रिया और मजबूत हुई। इस समय अरब व्यापारियों ने एशिया, अफ्रीका और यूरोप को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंद महासागर व्यापार, मसाला व्यापार तथा यात्रियों जैसे मार्को पोलो और इब्न बतूता के विवरणों ने विभिन्न देशों को एक-दूसरे के बारे में अधिक जानकारी दी। भारत इस काल में वस्त्र और मसालों के व्यापार का एक प्रमुख केंद्र था। 15वीं और 16वीं शताब्दी में वैश्वीकरण ने एक नया रूप लिया। भौगोलिक खोजों के कारण यूरोपीय देशों ने नए समुद्री मार्ग खोजे। वास्को-दा-गामा का भारत आगमन और कोलंबस की यात्राएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण घटनाएँ थीं। इसके बाद यूरोपीय शक्तियों ने एशिया, अफ्रीका और अमेरिका में उपनिवेश स्थापित किए। इससे वैश्विक व्यापार तो बढ़ा, लेकिन इसके साथ उपनिवेशवाद और शोषण भी बढ़ा। भारत भी इसी प्रक्रिया में ब्रिटिश साम्राज्य केचे का हिस्सा बना।

19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति ने वैश्वीकरण को तेज़ गति दी। मशीनों, कारखानों, रेलवे, स्टीमशिप और टेलीग्राफ के विकास ने दुनिया को आर्थिक रूप से और अधिक जोड़ दिया। अब उत्पादन बड़े पैमाने पर होने लगा और वस्तुएँ दूर-दूर तक पहुँचने लगीं। भारत जैसे देशों को कच्चे माल के स्रोत और तैयार माल के बाज़ार के रूप में इस्तेमाल किया गया।20वीं शताब्दी में विश्व युद्धों और महामंदी ने वैश्विक व्यापार को कुछ समय के लिए प्रभावित किया, लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के बाद IMF, विश्व बैंक और GATT जैसी संस्थाओं ने नई वैश्विक आर्थिक व्यवस्था को जन्म दिया। इसके बाद 1990 के दशक में उदारीकरण, निजीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने वैश्वीकरण को आधुनिक रूप प्रदान किया। भारत में 1991 के आर्थिक सुधार इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण मोड़ थे।

अंततः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण कोई अचानक घटित घटना नहीं, बल्कि प्राचीन व्यापार मार्गों से लेकर आधुनिक डिजिटल युग तक फैली हुई एक निरंतर ऐतिहासिक प्रक्रिया है। इसमें विकास और अवसरों के साथ-साथ असमानता, सांस्कृतिक प्रभाव और आर्थिक निर्भरता जैसी चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं।

वैश्विकरण एक अवसर,चुनौती एवम संभावनाएं: मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

डॉ. एस. रूपेंद्र राव
विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग
पंडित सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़,बिलासपुर

सारांश

वैश्वीकरण (ळसवइंसप्रंजपवद) न केवल आर्थिक और तकनीकी परिवर्तन है, बल्कि यह मानव मनोविज्ञान, व्यवहार और सांस्कृतिक पहचान को गहराई से प्रभावित करने वाली एक जटिल प्रक्रिया है। मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में, यह व्यक्तियों के सोचने, काम करने और दूसरों से जुड़ने के तरीके में एक बड़ा बदलाव है वैश्वीकरण ने व्यक्तिगत विकास और संज्ञानात्मक विस्तार को बढ़ाया है इनमें द्वि–सांस्कृतिक पहचान, संज्ञानात्मक लचीलापन, उपभोक्ता व्यवहार में बदलाव, आवश्यकता आदि प्रमुख है वैश्वीकरण के साथ कुछ गंभीर मानसिक और सामाजिक चुनौतियाँ भी आई हैं जैसे पहचान का संकट विशेष रूप से युवाओं में, स्थानीय और वैश्विक संस्कृति के बीच संतुलन बनाने में भ्रम पैदा हो रहा है। सांस्कृतिक क्षरण– पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से स्थानीय परंपराओं और मूल्यों के खोने का डर, तनाव और चिंता– तीव्र प्रतिस्पर्धा, काम की असुरक्षा और तेज जीवनशैली के कारण मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ी हैं। असमानता का मनोवैज्ञानिक प्रभाव व्यक्ति के आय और अवसरों में असमानता के कारण असहायता, हताशा और हीन भावना पैदा हो रहि है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, आने वाले समय में वैश्वीकरण एक अधिक समावेशी एक तरफ असीम अवसर देता है, तो दूसरी तरफ पहचान और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियां भी पेश करता है। इसका सकारात्मक परिणाम व्यक्ति के अपनी संस्कृति को बनाए रखते हुए वैश्विक दुनिया से जुड़ने की क्षमता पर निर्भर करता है।

संकेत शब्द : वैश्वीकरण, मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तिगत विकास, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि ।

वैश्वीकरण का युवा पीढ़ी पर प्रभावः मूल्यों एवं जीवनशैली में परिवर्तन

साक्षी शर्मा, अतिथि शिक्षक
आचार्य पंथ श्री गृंध मुनि नाम साहेब शास स्नातकोत्तर महाविद्यालय कवर्धा,
जिला कबीरधाम (छ .ग .)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र वैश्वीकरण की प्रक्रिया के संदर्भ में युवा पीढ़ी के मूल्यों एवं जीवनशैली में हो रहे संरचनात्मक एवं व्यवहारगत परिवर्तनों का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वैश्वीकरण, जिसे आर्थिक उदारीकरण, तकनीकी प्रगति तथा सांस्कृतिक अंतःक्रिया की समेकित प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, ने सामाजिक संस्थाओं, मानदंडों तथा व्यक्तिगत आकांक्षाओं को पुनर्परिभाषित किया है। इस परिप्रेक्ष्य में, युवा वर्ग न केवल परिवर्तन का वाहक है, बल्कि वह इन परिवर्तनों का सक्रिय उपभोक्ता एवं निर्माता भी है।

अध्ययन इंगित करता है कि वैश्वीकरण के प्रभाव से युवाओं में व्यक्तिवादी दृष्टिकोण, त्वरित संतुष्टि (पदेजंदज हतंजपपिबंजपवद) की प्रवृत्ति तथा उपभोक्तावादी जीवनशैली का प्रसार हुआ है। इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक मूल्यों जैसे सामूहिकता, पारिवारिक उत्तरदायित्व एवं सांस्कृतिक अनुशासन में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। इसके अतिरिक्त, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (प्ब्ज्) के विस्तार ने युवाओं के सामाजिक व्यवहार, समय–प्रबंधन तथा अंतरव्यक्तीय संबंधों की प्रकृति को भी परिवर्तित किया है, जिससे "वर्चुअल सामाजिकता" (अपतजनंस `वबपंसपजल) का विकास हुआ है।

सकारात्मक दृष्टि से, वैश्वीकरण ने शिक्षा, रोजगार, उद्यमिता एवं नवाचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व अवसर प्रदान किए हैं, जिससे युवाओं में वैश्विक दृष्टिकोण, बहुसांस्कृतिक अनुकूलनशीलता तथा प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता का विकास हुआ है। तथापि, इसके साथ–साथ सांस्कृतिक अस्मिता का संकट, मूल्य–संघर्ष, मानसिक तनाव तथा सामाजिक विखंडन जैसी समस्याएँ भी उभरकर सामने आई हैं, जो समकालीन युवा जीवन का अभिन्न अंग बनती जा रही हैं।

निष्कर्षतः, यह स्पष्ट है कि वैश्वीकरण एक द्वंद्वात्मक प्रक्रिया है, जो अवसरों एवं चुनौतियों दोनों को साथ लेकर चलती है। अतः आवश्यक है कि युवा पीढ़ी वैश्विक परिवर्तनों के प्रति सजग एवं समालोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए अपनी सांस्कृतिक जड़ों, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के मध्य संतुलन स्थापित करे, जिससे सतत एवं समावेशी विकास सुनिश्चित किया जा सके।

21वीं सदी में वैश्वीकरण, भारत की विदेश नीति की चुनौतियाँ एवं अवसर

शोधार्थी– सीमा चंद्रवंशी
पद – अतिथि व्याख्याता
संस्थान – आचार्य पंथ श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा
जिला – कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

सार

21वीं सदी के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण एक व्यापक परिवर्तनकारी प्रक्रिया के रूप में सामने आया है, जिसने वैश्विक व्यवस्था के विभिन्न आयामों को गहराई से प्रभावित किया है। यह प्रक्रिया केवल आर्थिक एकीकरण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके प्रभाव राजनीतिक, सामरिक, सांस्कृतिक और तकनीकी क्षेत्रों में भी स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। इस बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत एक उभरती हुई शक्ति के रूप में अपनी भूमिका को सुदृढ़ कर रहा है और अपनी विदेश नीति को समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्संरचित कर रहा है।
प्रस्तुत शोध–पत्र का प्रमुख उद्देश्य वैश्वीकरण के संदर्भ में भारत की विदेश नीति के स्वरूप और प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना, इसके समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों का अध्ययन करना तथा उपलब्ध संभावनाओं का आकलन करना है। यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों, जैसे पुस्तकों, शोध आलेखों, अंतरराष्ट्रीय संगठनों के आँकड़ों तथा सरकारी दस्तावेजों पर आधारित है।
अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि भारत को अपनी विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए आर्थिक कूटनीति को सुदृढ़ करना, बहुपक्षीय सहयोग को प्रोत्साहित करना तथा तकनीकी नवाचार को प्राथमिकता देना आवश्यक है, जिससे वह वैश्विक मंच पर अपनी स्थिति को और अधिक प्रभावशाली बना सके।

मुख्य शब्द– वैश्वीकरण, भारत की विदेश नीति, आर्थिक कूटनीति, रणनीतिक स्वायत्तता, बहुपक्षीय सहयोग

Social Change among the Chandranahu Community Due to Globalization: A Sociological Study.

Authors

Dinesh Kumar Chandra

Assistant Professor, Department of Sociology

Government College Barpali, Korba (C.G.)

Email:dkc96356@gmail.com Mobile: +91-7987647447

Dr. Vimla Singh

Assistant Professor, Department of Sociology

Kamla Nehru College, Korba (C.G.)

Email:vimlas835@gmail.com Mobile: 9589584992

Abstract

The present research paper aims to examine the social changes among the Chandranahu community caused by globalization from a sociological perspective. Globalization has influenced the traditional social structure of rural and caste-based communities through education, migration, urban contact, mobile-internet use, media exposure, and modern life values. The study is based on 120 respondents from the Chandranahu community in Sakti district, Chhattisgarh, and data were collected through an interview schedule, observation, and informal discussion. The analysis focuses on changes in family structure, marriage practices, kinship relations, social values, the roles of women and youth, and caste/community identity. The findings indicate that globalization has weakened the traditional joint-family pattern, increased youth participation in decision-making, expanded women's social role, and introduced modern elements into marriage and kinship relations. However, caste identity, traditional customs, and community organizations continue to play an important role. Thus, social change among the Chandranahu community is visible as a process of coexistence between tradition and modernity.

Keywords:globalization, Chandranahu community, social change, family, marriage, kinship, social values, sociological study

विषयः– ई–कॉमर्स और वैश्विक बाजार

शोध – सार (Abstract)

ई–कॉमर्स (Electronic Commerce) ने वैश्विक व्यापार व्यवस्था में एक क्रांतिकारी परिवर्तन उत्पन्न किया है। सूचना एवं संचार प्रौधोगिकी (ICT) के तीव्र विकास इंटरनेट की व्यापारिक गतिविधियों को पारंपरिक सीमाओं से मुक्त कर दिया हैं। आज Amazon, Alibaba और Flipkart जैसे प्रमुख ई–कॉमर्स प्लेटफार्म्स के माध्यम से वस्तुओं एवं सेवाओं का आदान–प्रदान वैश्विक स्तर पर सुगमता से किया जा रहा है। इससे न केवल बड़े व्यवसायों, बल्कि छोटे एवं मध्यम उधमों को भी अंर्तराष्ट्रीय बाजार तक पहुँचने का अवसर मिला है।

यह शोध पत्र ई–कॉमर्स और वैश्विक बाज़ार के परस्पर संबंधो का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि ई–कॉमर्स ने व्यापार के स्वरूप, संरचना और प्रक्रियाओं को किस प्रकार परिवर्तित किया है। विशेष रूप, वैश्वीकरण बढ़ावा देने, प्रतिस्पर्धा को तीव्र करने, उपभोक्ता व्यवहार में परिवर्तन लाने तथा उत्पादों की उपलब्धता और विविधता बढ़ाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके अतिरिक्त डिजिटल भुगतान प्रणालियाँ जैसे Paytm, Google Pay ने लेन–देन को अधिक सुरक्षित, त्वरित और सुविधाजनक बना दिया है। हालांकि ई–कॉमर्स के विस्तार के साथ कई चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं। साइबर सुरक्षा संबंधी जोखिम डेटा गोपनीयता की समस्या ने डिजिटल व्यापार के सामने समस्या खड़ी कर दी है।

अंततः इस शोध के माध्यम से ई–कॉमर्स से वैश्विक बाजार में आये संरचनात्मक परिवर्तनों का विश्लेषण किया जा सकता है इसमें व्यापार के वैश्विकरण प्रतिस्पर्धा में वृद्धि, उपभोक्ता व्यवहार में बदलाव तथा डिजिटल भुगतान प्रणालियों के विकास जैसे प्रमुख पहलुओं को शामिल किया गया है। साथ ही, साइबर सुरक्षा, लॉजिस्टिक्स, और कानूनी जटिलताओं जैसी चुनौतियों का भी समालोचनात्मक अध्ययन किया गया हैं।

प्रस्तुतकर्ता

श्रीमती सुमिता सिकरवार (व्याख्याता)

डाइट रायपुर

Abstract (सार)

Name pallavi verma
Research scholar
Anjaneya university Raipur CG

शोध शीर्षक

"वैश्वीकरण, विज्ञान और स्वास्थ्य नीति: क्रोनिक किडनी रोग के प्रबंधन में बहुआयामी परिवर्तन का अध्ययन"

Abstract (सारांश)

वैश्वीकरण के वर्तमान युग में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने स्वास्थ्य सेवाओं के स्वरूप, पहुंच तथा गुणवत्ता में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। विशेष रूप से क्रोनिक किडनी रोग (CKD) जैसे दीर्घकालिक रोगों के प्रबंधन में वैश्विक स्तर पर नई तकनीकों, उन्नत निदान विधियों तथा उपचार पद्धतियों का समावेश हुआ है। तथापि, इन प्रगतियों के बावजूद स्वास्थ्य सेवाओं की समान उपलब्धता एक गंभीर चुनौती बनी हुई है, जिससे सामाजिक एवं आर्थिक असमानताएं और अधिक स्पष्ट हो गई हैं।
यह शोध वैश्वीकरण, वैज्ञानिक उन्नति एवं स्वास्थ्य नीतियों के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करते हुए क्रोनिक किडनी रोग के प्रबंधन में आए बहुआयामी परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार वैश्विक वैज्ञानिक नवाचार और नीतिगत परिवर्तन स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच, गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता को प्रभावित कर रहे हैं, तथा इनका विभिन्न सामाजिक वर्गों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। इस शोध में विशेष रूप से स्वास्थ्य नीतियों की भूमिका, संसाधनों के वितरण, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच अंतर, तथा आर्थिक स्थिति के आधार पर उपचार की उपलब्धता का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही, यह अध्ययन यह भी जांचेगा कि आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों के प्रसार के बावजूद किन कारणों से कुछ वर्ग अभी भी समुचित उपचार से वंचित हैं।
अंततः, यह शोध स्वास्थ्य नीति निर्माण के लिए महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान करेगा, जिससे क्रोनिक किडनी रोग के प्रभावी एवं समान प्रबंधन हेतु समावेशी एवं न्यायसंगत स्वास्थ्य व्यवस्था विकसित की जा सके। यह अध्ययन न केवल समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति के क्षेत्र में भी उपयोगी योगदान देगा

Keywords (कुंजी शब्द)
वैश्वीकरण (Globalization)
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (Science and Technology)
स्वास्थ्य नीति (Health Policy)
क्रोनिक किडनी रोग (Chronic Kidney Disease - CKD)
स्वास्थ्य असमानता (Health Inequality)
सामाजिक निर्धारक (Social Determinants)
स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता (Healthcare Accessibility)
उपचार प्रबंधन (Disease Management)
ग्रामीण-शहरी अंतर (Rural-Urban Disparity)

मीडिया, उपभोक्तावाद और वैश्विक बाजार के त्रिशंकु के मध्य घूमता बेबस आधुनिक समाज

विकास पांडेय
छात्र,
कमला नेहरू महाविद्यालय, कोरबा (छ.ग.)

सारांश

यह बाजार युग है, जहां हर व्यक्ति ग्राहक या उपभोक्ता है। वर्तमान में मीडिया की पैठ हर हाथ व उससे जुड़े मन–मस्तिष्क में घर कर चुकी है, जिसने समय के अनुरूप नित नवीन कलेवर अपनाते हुए सर्वव्यापकता की शवित्त से वैश्विक समाज को आकर्षित कर बाजार को ग्लोबल पीक पर पहुंचाया। डोर–टू–डोर जाकर वैश्विक जीवन स्तर की चाड जागृत करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। विज्ञापनों के रास्ते वैश्विक बाजार ने समाज को उपभोक्तावादी बनने की दौड़ में शामिल किया। बाजार व उपभोक्ता के मध्य मीडिया एक ऐसा सेतु है, जिस पर हर व्यक्ति, परिवार, समुदाय या समाज खुद–ब–खुद चलने, उसे पार करने पर विवश है। इससे दो प्रमुख स्थितियां उत्पन्न होती हैं। पहला, उपभोक्ता के इर्द–गिर्द मंडराते मीडिया, उपभोक्तावाद एवं वैश्विक बाजार के त्रिशंकु अथवा दुविधापूर्ण चक के मध्य अवस्थित समाज का एक वर्ग खरीदने की चाह में अपनी आमदनी बेहतर करने छटपटाता है, उधर आय की अलग–अलग अवस्थाओं के चलते विभिन्न तबकों देशों को आर्थिक दूरी में बंटने को भी विवश होना पड़ रहा है। वैश्वीकरण ने आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक संबंधों को गहरा किया, पर आर्थिक असमानताओं को बढ़ावा दिए जाने से कुछ देशों वर्गों को अधिक लाभ हुआ पर कई पिछड़ गए। इससे स्थानीय संस्कृतियां प्रभावित हुई और कभी–कभी उनकी विशिष्टता में भी कमी आई। उपभोक्तावाद ने समाज में वस्तुओं और सेवाओं की मांग में इजाफा किया, जो आर्थिक विकास का अहम हिस्सा है। पर इससे लोगों में भौतिकवाद की प्रवृत्ति भी बढ़ी। उपभोक्तावाद से लोग आवश्यकता से अधिक वस्तुओं की ओर आकर्षित होते हैं, सामाजिक स्थिति को वस्तुओं के आधार पर मापने लगे हैं। आम आदमी को मछली की तरह फांसने बाजार की इस डोड़ के लिए उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण पर जारी ज्यादातर मीडिया घरानों के प्रोपोगेंडा को जिम्मेदार मानना गलत न होगा।

बीज शब्दः – सर्वव्यापकता, जीवनशैली, भौतिकवाद, प्रोपोगेंडा, त्रिशंकु ।

वैश्वीकरण और डिजिटल अर्थव्यवस्था : एक नई दिशा

किरण कोठारी (शोधार्थी–अर्थशास्त्र)
डॉ. के. पद्मावती (शोध निर्देशक एवं प्राध्यापक – अर्थशास्त्र)
शासकीय विश्वनाथ यादव स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

सारांश

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण और डिजिटल अर्थव्यवस्था में आर्थिक, सामाजिक, तथा तकनीकी संरचनाओं में व्यापक परिवर्तन परिलक्षित हुआ है। इस शोध का उद्देश्य वैश्वीकरण की प्रक्रिया के साथ डिजिटल तकनीक के एकीकरण से उत्पन्न नहीं आर्थिक दिशा का विश्लेषण करना है। विशेष रूप से यह अध्ययन डिजिटल प्लेट फॉर्म, ई–कॉमर्स,फिंनटेकतथा डेटाआधारित नवाचारों के माध्यम से आर्थिक विकास, रोजगार सृजन एवं उत्पादकता पर पढ़ने वाले प्रभावों की समीक्षा करता है। यह शोध गुणात्मक एवं मात्रात्मक तकनीक पर आधारित है जिसमें द्वितीयक आंकड़ों का विश्लेषण तथा विभिन्न देशों के तुलनात्मक अध्ययन को शामिल किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि डिजिटल अर्थव्यवस्था ने बाजारों की सीमाओं को समाप्त करते हुए वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया है, साथ ही छोटे एवं मध्यम उद्यमों के लिए नए अवसर भी सृजित किए हैं। हालांकि इसके साथ डिजिटल विभाजन डेटा सुरक्षा और रोजगार के स्वरूप में बदलाव जैसी चुनौतियां भी सामने आई है। अतः यह आवश्यक है कि नीतिगत स्तर पर संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हुए डिजिटल समावेशन और सतत् विकास को सुनिश्चित किया जाए

शब्दकुंजी : वैश्वीकरण, रोजगार परिवर्तन, आर्थिक विकास, डिजिटल समावेशन, डिजिटल अर्थव्यवस्था।

ग्रामीण भारत में ई–कॉमर्स और वैश्विक बाजार की संभावनाएँ

अनिल कुमार देवांगन [1]
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
शासकीय नवीन महाविद्यालय पेण्ड्रावन,
जिला–दुर्ग (छ.ग.)
Email :- anildewanganji@gmail.com

देवेश कुमार गजपाल [2]
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
शासकीय नागरिक कल्याण महाविद्यालय
अहिवारा, जिला–दुर्ग (छ.ग.)
Email :- deveshgajpal07071996@gmail.com

सारांश (Abstract):–

ग्रामीण भारत, जहाँ लगभग 65–70% आबादी निवास करती है, देश की अर्थव्यवस्था का आधार है। यहाँ कृषि, हस्तशिल्प और छोटे उद्योगों की विविधता मौजूद है, जो घरेलू और वैश्विक दोनों बाजारों में अपनी पहचान बना सकते हैं। हाल के वर्षों में डिजिटल इंडिया और भारतनेट जैसी योजनाओं ने इंटरनेट कनेक्टिविटी को गाँवों तक पहुँचाकर ई–कॉमर्स की संभावनाओं को नई दिशा दी है। इसके साथ ही UPI ने डिजिटल लेन–देन को सरल बना दिया है, जिससे ग्रामीण उपभोक्ता भी ऑनलाइन खरीदारी की ओर आकर्षित हो रहे हैं। 2024 तक भारत में ई–कॉमर्स का कुल वॉल्यूम 182 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। यदि इसे भारतीय रुपये में समझें तो उस समय एक अमेरिकी डॉलर की औसत कीमत लगभग ₹83–84 थी। इस हिसाब से 182 बिलियन डॉलर लगभग ₹15 लाख करोड़ रुपये (15 ट्रिलियन रुपये) के बराबर होता है। यह आँकड़ा दर्शाता है कि भारत का ई–कॉमर्स क्षेत्र कितनी तेजी से बढ़ रहा है और ग्रामीण भारत इसमें कितनी बड़ी भूमिका निभा सकता है। 2024 तक भारत में 30 करोड़ ऑनलाइन खरीदार थे, जिनमें ग्रामीण हिस्सेदारी लगभग 30% रही। अनुमान है कि 2030 तक यह संख्या 44 करोड़ तक पहुँच जाएगी। मार्च 2024 तक ग्रामीण इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 39.83 करोड़ थी, जो यह साबित करती है कि ई–कॉमर्स कंपनियों के लिए ग्रामीण भारत एक विशाल उपभोक्ता का आधार है। ग्राम स्वराज और वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट जैसी पहलों से गांवों के कारीगरों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार मिल रहा है। वाणिज्य मंत्रालय ई–कॉमर्स कंपनियों के साथ मिलकर जिलों के उत्पादकों को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला से जोड़ रहा है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हो ही रही है, साथ ही आत्मनिर्भर भारत अभियान को भी बल मिल रहा है। यह शोध ग्रामीण भारत में ई–कॉमर्स की वर्तमान स्थिति, वैश्विक बाजार की संभावनाएँ, चुनौतियाँ और समाधान पर केंद्रित है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार डिजिटल योजनाएँ और तकनीकी नवाचार ग्रामीण क्षेत्रों को वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ रहे हैं और आने वाले समय में यह क्षेत्र ग्रामीण विकास का प्रमुख साधन बन सकता है।

शब्द कुंजी (Keywords):– ग्रामीण भारत, ई–कॉमर्स, वैश्विक बाजार, डिजिटल इंडिया, ग्रामीण उद्यमिता, MSMEs.

वैश्वीकरण एवं प्रवासन : एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

डॉ. खोमन लाल साहू (अतिथि व्याख्याता – समाजशास्त्र)
आचार्य पंथ श्री गृंध मुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, कवर्धा,
जिला–कबीरधाम (छ.ग.)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र ''वैश्वीकरण और प्रवासन'' पर आधारित है। 21वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशक से दुनिया भर के देशों में तकनीकीकरण, आधुनिकीकरण एवं रोजगार के नवीन अवसरों की शुरूआत होने से वैश्विक स्तर पर मुख्यरूप से द्वितीयक एवं तृतीयक स्तर के देशों में शिक्षित एवं कौशलयुक्त युवाओं को प्राथमिक स्तर के देशों, जैसे–अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया एवं अधिकांश यूरोपीयन देशों, इत्यादि देशों के युवाओं को अपनी ओर आकर्षित किया है। परिणामस्वरूप वैश्विक प्रवासन की दर में वृद्धि हो हुई है, इससे ब्रेन–ड्रेन को आकर्षित करते हुए नवाचार, तकनीकी क्षेत्रों में योगदान को बढ़ावा मिला है। भारत जैसे विकासशील देश में भी वैश्विकरण के कारण वैश्विक प्रवासन दर में वर्ष 2020 के बाद 13–17 प्रतिशत तक वृद्धि दर्ज किया गया है। विकिपीडिया के अधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार, 2011–2024 तक 20.6 लाख भारतीयों ने विदेशी नागरिकता अपनाये हैं। यह शोध पत्र मूलरूप से द्वितीयक आंकड़ों (शासकीय व गैर–शासकीय दस्तावेजों, शोध पत्रिकाओं, इंटरनेट पर उपलब्ध अध्ययन सामाग्रियाँ) पर आधारित है, साथ ही उपलब्ध साहित्यों के आधार पर समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है।

शब्दकुंजी – वैश्वीकरण, प्रवासन, तकनीकी, द्वितीयक एवं तृतीय देश।

शोधार्थी : पुष्पांजली (समाजशास्त्र विभाग)
शासकीय दू ब महिला स्वशासी महाविद्यालय रायपुर छ ग
निर्देशिका : डॉ प्रीति शर्मा

वैश्वीकरण और प्रवासन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

वैश्वीकरण शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग करने का श्रेय अर्थशास्त्री थ्योडोरे लेविड को दिया जाता है जब संपूर्ण विश्व आर्थिक मंदी से गुज़र रहा था तब भारत ने वैश्विक आर्थिक मंदी से निपटने हेतु 1991 मे एक नयी आर्थिक नीति के रूप मे उदारीकरण और निजीकरण के साथ वैश्वीकरण को अपनाया। वैश्वीकरण से भारत की अर्थव्यवस्था मे व्यापक सुधार आए जिनमे जीडीपी मे वृद्धि, विदेशी निवेश मे बद्धोतरी, निर्यात मे वृद्धि, सूचना प्रौद्योगिकी का विकास, बैंकिंग व फ़ाइनेंस क्षेत्र मे प्रगति के साथ-साथ भारतीय बाजारो मे भी आपसी प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया जिससे भारतीय पूंजीपतियों के उत्पादन कार्यो की भी गुदवातता बढ़ी। साथ ही उद्योगों और सेवाओ के विकास से कृषि क्षेत्र और लघु उद्योगों की उपेक्षा, असमानता मे वृद्धि , रोजगार की अनिश्चितता जैसी समस्याएँ भी सामने आई। वैश्वीकरण ने संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्थाओं के साथ- साथ संपूर्ण समाज तथा उनकी संस्कृतियों का भी एकीकरण किया। वैश्वीकरण और प्रवास दोनों ही एक- दूसरे के पूरक हैं वैश्वीकरण ने संपूर्ण समाज को एक ग्लोबल विलेज के समान बना दिया है जिसने वस्तुओं ओर सेवाओं के उत्पादन तथा तकनीकों के विकास के साथ साथ लोगो के पलायन को भी सुगम बनाया और बेहतर संचार तथा परिवहन की सुविधाओं ने अंतर्राष्ट्रीय प्रवास का मार्ग खोल दिया। वैश्वीकरण ने प्रवासन के स्वरूप, गति तथा दिशा को भी प्रभावित किया जिससे लोग बेहतर आर्थिक अवसरो की तलाश, श्रम की आपूर्ति, उच्च्तम सुविधाओं की लालसा, उच्च जीवनशैली हेतु अन्य राष्ट्रों की ओर प्रवास करने लगे। प्रवास ने भारतीय समाज पर अनेक सकारात्मक प्रभाव डाले वहीं वैश्वीकरण द्वारा उत्पन्न प्रवासन ने प्रतिभा पलायन, सांस्कृतिक विनिमय और पारिवारिक विघटन जैसी समस्याओं को भी जन्म दिया।

बीज शब्द - वैश्वीकरण, प्रवास, समाज, अर्थव्यवस्था, विकास, वृद्धि।

"युवा पीढ़ी पर वैश्वीकरण का प्रभाव : मूल्य व जीवन शैली में परिवर्तन।"

(छ.ग. राज्य के कबीरधाम जिले के आचार्य पंथ श्री गृंधमुनि नाम साहेब शास. स्नात. महाविद्यालय, के परिप्रेक्ष्य में ।)

शोधार्थी - टेशु ठाकुर (एम. ए. समाजशास्त्र द्वितीय सेमेस्टर)
आचार्य पंथ श्री गृंधमुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा ।
(What'AppNo-8109558846, Email ID- thakurteshu81@gmail.com)

"शोध निर्देशक:- श्री मुकेश कामले सर (सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र)"
(WhatsApp no.- 7999831651, E-mail ID- mukeshkamle9683@gmail.com)

सारांश :-
वैश्वीकरण, वह सार्वभौमिक प्रकिया है,जिसने दुनियां भर में व्यापक परिवर्तन किए । वर्तमान समय में वैश्वीकरण ने समाज के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है,लेकिन इसका सबसे अधिक असर युवा पीढ़ी पर देखने को मिलता है। वैश्वीकरण के कारण दुनिया के विभिन्न देशों के बीच दूरी कम हुई है और विचार, संस्कृति, तकनीक तथा जीवन शैली का आदान-प्रदान तेजी से बढ़ा है। इसका सीधा प्रभाव युवाओं के सोचने के तरीके और उनके दैनिक जीवन पर पड़ा है। आज का युवा पहले की तुलना में अधिक जागरूक, आत्मनिर्भर और नई चीजों को अपनाने वाला हो गया है। इंटरनेट, मोबाइल और सोशल मीडिया के माध्यम से उसे वैश्विक स्तर की जानकारी आसानी से मिल जाती है। शिक्षा, करियर और जीवन शैली के प्रति उसका दृष्टिकोण अधिक आधुनिक और व्यावहारिक होता जा रहा है। हालाँकि, इस परिवर्तन के कुछ नकारात्मक पहलू भी सामने आए हैं। कई बार युवा अपनी पारंपरिक संस्कृति,सामाजिक मूल्यों और पारिवारिक जिम्मेदारियों से दूर होते दिखाई देते हैं। आधुनिकता को अपनाते हुए अपने मूल्यों और संस्कृति को बनाए रखना ही एक संतुलित समाज की पहचान हो सकती है। वैश्वीकरण का प्रभाव समाज में अति प्रभावशाली रहा,सकारात्मक प्रभाव पड़ना आवश्यक भी है ताकि वर्तमान के युवा पीढ़ी का सर्वांगिण बौद्धिक,आर्थिक,सामाजिक व राजनैतिक विकास वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव से हो सके,किंतु शोध के माध्यम से वैश्विकरण के कुछ नकारात्मक पहलू भी देखने को समाज में मिल रहे है जिसके कारण लोग अपनी संस्कृति को भुला कर पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे है व अपनी सांस्कृतिकता,रिती- रिवाज व सही जीवन की शैली को भूला रहें हैं । देश के हर समाज को एक सम्पूर्ण रूप से प्रतिभाशाली युवाओं की आवश्यकता है पर यह तभी संभव है जब वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों को न अपनाते हुए, केवल वैश्वीकरण के सकारात्मक पहलू को अपना कर युवा अपने संस्कृति की सांस्कृतिकता को सही बनाए रखे तथा उज्जवल भविष्य की ओर आगे बढ़े । शोधार्थी द्वारा अपने अध्ययन उद्देश्य की पूर्ति हेतु अध्ययन प्रविधि के रूप में अवलोकन एवं साक्षात्कार का प्रयोग कर साक्षात्कार अनुसूची को अध्ययन प्रविधि के रूप में उपयोग किया गया है ।

मुख्य शब्द :- "वैश्वीकरण,आधुनिकता,समाज,युवा, सामाजिक मूल्य परिवर्तन,पाश्चात्य जीवन शैली, नकारात्मकता का प्रभाव, साक्षात्कार ।"

वैश्वीकरण के दौर में भारतीय लोकतंत्र का बदलता स्वरूप

डॉ. कुसुम लता पुरोहित, अतिथि विद्वान् , राजकीय महाविद्यालय, डूंगला, जिला – चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) 9829276511

शोध सार – 21वीं सदी में वैश्वीकरण एक अत्यंत प्रभावशाली प्रक्रिया के रूप में उभरा है, जिसने विश्व की राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति एवं समाज के समस्त आयामों को गहराई से प्रभावित किया है। भारत एक विकासशील लोकतांत्रिक राष्ट्र होने के नाते, वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया से अछूता नहीं रहा। वैश्वीकरण , जिसे पूंजी, वस्तुओं, सेवाओं विचारों और लोगों के सीमापार प्रवाह के रूप में परिभाषित किया जाता है , ने भारतीय राज्य की संरचना और उसके लोकतांत्रिक व्यवहार को मौलिक रूप से पुनर्गठित किया है। एक और, वैश्वीकरण ने भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढती अर्थव्यवस्था में से एक के रूप में स्थापित किया है, जिससे मध्यम वर्ग का विस्तार हुआ और तकनीकी प्रगति को बढावा मिला। दूसरी ओर इसने राज्य की नीतिगत स्वायत्तता को सीमित किया है, आय असमानता को गहरा किया है और लोकतांत्रिक संस्थाओं की जवाबदेही के नए संकट को उत्पन्न किये हैं। निष्कर्षत: वैश्वीकरण भारतीय राजनीति के लिए न तो पूर्णत: वरदान है न अभिशाप, बल्कि अवसरों और चुनौतियों से युक्त एक गतिशील द्वन्दात्मक प्रक्रिया है , जिसकी दिशा भारत की लोकतांत्रिक क्षमता और नीतिगत संतुलन पर निर्भर करेगी। यह शोधपत्र 1991 के उदारीकरण के बाद भारत में वैश्वीकरण के प्रभाव से उत्पन्न द्वन्द का विश्लेषण करता है कि कैसे वैश्विक एकीकरण की अनियमितताओं ने भारतीय लोकतांत्रिक ढांचे को प्रभावित किया है।

डॉ. शैल चन्द्रा की लघुकथाओं में चित्रित सामाजिक चेतना

(वैश्वीकरण के विशेष संदर्भ में)

विनय कुमार देवाँगन,
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शास. गुण्डाधूर स्नातको. महावि., कोण्डागाँव (छ.ग.)
एवं
पी-एच.डी. (हिन्दी) शोधार्थी, शास. स्वामी आत्मानंद स्नातको. महावि., नारायणपुर (छ.ग.)
मोबाइल नंबर- 7987371690, Email- vinaykumardewangan8@gmail.com

शोध-सारांश :

साहित्य का समाज से अटूट संबंध होता है। रचनाकार अपने परिवेश से जो अनुभूतियाँ ग्रहण करता है, उन्हें ही अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। वर्तमान समय 'भूमंडलीकरण' और 'वैश्वीकरण' का दौर है, जिसने आर्थिक और तकनीकी दूरियों को कम करने के साथ ही सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों व स्वरूप को भी यथा-संभव परिवर्तित कर दिया है। बदलते हुए जीवन मूल्यों के बीच 'लघुकथा' विधा एक ऐसी सशक्त विधा के रूप में उभरी है, जो डॉ. महादेव काशीनाथ कलशेट्टी के शब्दों में "शेर की तरह अपने छोटे आकार में भी गहरी चोट करने की क्षमता" रखती है।

डॉ. शैल चन्द्रा समकालीन हिंदी लघुकथा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित और उल्लेखनीय हस्ताक्षर हैं। उनकी लघुकथाएँ हमारे आस-पास के समाज में घटित होने वाली घटनाओं का जीवंत कोलाज हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप भारतीय समाज में 'पाश्चात्य अंधानुकरण' की एक अंधी दौड़ शुरू हुई है। डॉ. चन्द्रा की लघुकथाओं में धार्मिक पाखंड, सांप्रदायिकता और आडंबरपूर्ण जीवनशैली के विरुद्ध तीव्र आक्रोश दिखाई देता है।

निष्कर्षतः डॉ. शैल चन्द्रा की लघुकथाएँ वैश्विक परिदृश्य में कला और संस्कृति के गिरते स्तर के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिरोध दर्ज कराती हैं। उनकी रचनाएँ पाठक को निराश नहीं करतीं, बल्कि सुखद बदलाव की एक हल्की सी किरण भी दिखाती हैं। वीरेन्द्र सरल के शब्दों में, यह "वामन में विराट की कथा यात्रा" है।

बीज शब्द : वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण, सामाजिक चेतना, लघुकथा, कला और संस्कृति, सांस्कृतिक विसंगति, बाजारवाद, मानवीय मूल्य।

---000---

शिक्षा और मनोवैज्ञानिक विकास पर वैश्वीकरण के प्रभाव का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

विनय राज साहू

शोधार्थी शासकीय दूधाधारी बजरंग स्ना. महिला स्वशासी महाविद्यालय, रायपुर (छ. ग.)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र वैश्वीकरण के युग में शिक्षा पद्धति एवं शिक्षार्थियों के मनोवैज्ञानिक विकास दोनों के बीच की जटिल संबंधों का अध्ययन करने पर अधारित है। वैश्वीकरण ने न ही भौगोलिक सीमाओं को समाप्त कर दिया है, बल्कि ज्ञान के आदान–प्रदान, शिक्षण पद्धतियों और मानवीय चेतना के मौलिक रूप से पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि वैश्विक एकीकरण के फलस्वरूप आधुनिक युग के शिक्षा पद्धति को किस प्रकार प्रभावित किया है और साथ ही इसके परिणाम स्वरूप छात्रों के संज्ञानात्मक एवं संवेगात्मक विकास पर क्या प्रभाव पड़ा है। यह शोध द्वितीयक आंकड़ों और साहित्य समीक्षा पर आधारित एक वर्णनात्मक विश्लेषण है। इसमें विभिन्न वैश्विक शैक्षिक संकेतकों और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का संदर्भ लिया गया है ताकि वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों का मूल्यांकन किया जा सके। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि वैश्वीकरण ने शिक्षा के लोकतांत्रीकरण और डिजिटलीकरण को बढ़ावा दिया है, जिससे सूचना तक पहुंच सुलभ हुई है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर, इसने वैश्विक नागरिकता की भावना और सांस्कृतिक अनुकूलन क्षमता को विकसित की है। हालाँकि, इसके साथ ही अत्यधिक प्रतिस्पर्धा के कारण छात्रों में तनाव, पहचान का संकट और अपनी मूल सांस्कृतिक जड़ों से अलगाव जैसी मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। मानकीकृत परीक्षणों के दबाव ने रचनात्मकता की तुलना में प्रदर्शन–केंद्रित मानसिकता को अधिक महत्व दिया है। वैश्वीकरण शिक्षा के लिए एक द्विधारी तलवार की तरह है। जहाँ यह अपार अवसर प्रदान करता है, वहीं यह मनोवैज्ञानिक दबाव भी सृजित करता है। शोध यह सुझाव देता है कि भविष्य की शिक्षा प्रणालियों को वैश्विक कौशल और स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों के बीच एक संतुलन स्थापित करना चाहिए ताकि शिक्षार्थियों का समग्र और स्वस्थ मनोवैज्ञानिक विकास सुनिश्चित हो सके।

शब्द–कुंजी शिक्षा प्रणाली, मनोवैज्ञानिक विकास,।

नाम -जितेंद्र कुमार बारले ,पदनाम -सहायक प्राध्यापक इतिहास ,संस्था-शासकीय पंडित जवारलाल नेहरू कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय बेमेतरा(छ.ग.) मोबाईल - 9691700414

शोध सार _वैश्वीकरण के प्रभाव में महिला सशक्तिकरण की भूमिका

वैश्वीकरण ने विश्व स्तर पर सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को गति दी है, जिसका प्रभाव महिलाओं की स्थिति पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस प्रक्रिया ने महिलाओं के लिए शिक्षा, रोजगार और आत्मनिर्भरता के नए अवसर उत्पन्न किए हैं। विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा क्षेत्र और वैश्विक बाजारों के विस्तार ने महिलाओं की कार्यक्षेत्र में भागीदारी को बढ़ाया है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति और सामाजिक प्रतिष्ठा में सुधार हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभाव से महिलाओं में अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है तथा लैंगिक समानता के लिए वैश्विक स्तर पर प्रयास तेज हुए हैं। अंतरराष्ट्रीय संगठनों और नीतियों ने भी महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं की शिक्षा दर में वृद्धि हुई है और वे निर्णय लेने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय हुई हैं।

हालांकि, इसके साथ कई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। कार्यस्थल पर लैंगिक असमानता, वेतन में भेदभाव, दोहरी जिम्मेदारी (घर और कार्य) तथा सुरक्षा संबंधी समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ क्षेत्रों में महिलाओं का शोषण और असुरक्षा की स्थिति भी चिंता का विषय है।

अतः आवश्यक है कि समान अवसर, शिक्षा, सुरक्षा और सशक्तिकरण से संबंधित नीतियों को प्रभावी रूप से लागू किया जाए। निष्कर्षतः, वैश्वीकरण महिला सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हुआ है, किंतु इसके लाभों को समावेशी और संतुलित बनाने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक है

"मीडिया, उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण का समाज में प्रभाव"

(छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले के आचार्य पंथ श्री गृंध मुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के परिप्रेक्ष्य में)

शोधार्थी – कल्याणी सारथी *(एम. ए. समाजशास्त्र द्वितीय सेमेस्टर)*

आचार्य पंथ श्री गृंधमुनि नाम साहेब स्नातकोत्तर महाविद्यालय कवर्धा (छ. ग.)

(*WhatsApp no.- 6266576621, Email ID– kalyanisarthi2004@gmail.com)*

शोध निर्देशक – श्री मुकेश कामले *(सहायक प्राध्यापक) समाजशास्त्र*

(*WhatsApp no.- 7999831651, Email ID– mukeshkamle9683@gmail.com)*

सारांश:-

वर्तमान समय में मीडिया, उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण समाज को अत्यधिक प्रभावित करते हैं | यह तीनों सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख तत्व बन गये है | मीडिया जैसे प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और डिजिटल मीडिया लोगों तक देश – विदेश की खबरे, शिक्षा, मनोरंजन आदि को बड़े पैमाने पर बहुचाती है | वर्तमान समय में समाज पर सोशल मीडिया का बहुत प्रभाव है | यह लोगों की दैनिक जीवन का हिस्सा बन चूका है | तथा यह विभिन्न प्रकार से सामाजिक परिवर्तनों को उत्पन्न कर रहें हैं |

वैश्वीकरण के कारण सम्पूर्ण विश्व एक अंतर्राष्ट्रीय बाजार के रूप में बदल गया है | विश्व के सभी देशो के बिच वस्तुओं, सेवाओं, विचारों, व्यापारों, आदि का स्वतन्त्र रूप से आना - जाना हो रहा है | सभी देश अपनी अपनी सांस्कृतिक पहचानों का आदान – प्रदान करते है | वैश्वीकरण के साथ ही उपभोक्तावाद का जन्म हुआ है | जिसके कारण लोगों में अनावश्यक खरीदारी को बढ़ावा मिला है | तथा फैशन के लिए ब्रांडेड वस्तुओं को खरीदते है | जिसके कारण समाज में अत्यधिक प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है | यह अनावश्यक खर्च तथा समाज में दिखावे व ब्रांड संस्कृति को बढ़ावा देती है |

मुख्य शब्द :- मीडिया , सोशल मीडिया , वैश्वीकरण , अंतर्राष्ट्रीय बाजार , ब्रांड संस्कृति , प्रतिस्पर्धा , उपभोक्तावाद, सामाजिक परिवर्तन |

जनजातियों की शिक्षा तक पहुंच पर स्थानिक अलगाव का प्रभाव (बोडला विकासखंड की विशेष संदर्भ में)

निर्देशक	**शोधार्थी**
पुष्पलता कोर्राम	लोकेश्वर साहू
(सहायक व्याख्याता)	भूगोल विभाग
भूगोल विभाग	

आचार्य पंत श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कवर्धा (कबीरधाम)

<u>शोध सारांश</u>

छत्तीसगढ़ की बोडला विकासखंड में पहाड़ों, वनों, तटीय क्षेत्रों, घाटियों में निवास करने वाली विभिन्न जनजाति समुदायों जिन्हें संविधान में अनुसूचित किया गया है। उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति निम्न है। किसी राष्ट्र के विकास इस बात पर निर्भर करता है कि मानव का विकास किस स्तर तक हुआ है, साथ ही संसाधनों के विकास पर भी आधारित होता है। शिक्षा तक मात्र ऐसा साधन है जिसके माध्यम से मानव का विकास संभव है और मानव के उच्च कौशल ज्ञान और तकनीकी विकास से ही किसी क्षेत्रों, प्रदेशों तथा राष्ट्रो का विकास स्तर में वृध्दि किया जा सकता है। हालांकि, भारत जैसे देशों में बोडला विकासखंड जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा जनजाति आबादी के रूप में है। जिनका शैक्षणिक स्तर आज भी निम्न है। इस शोध पत्र के माध्यम से छत्तीसगढ़ राज्य के कवर्धा जिला की बोड़ला विकासखंड के जनजातियों की शैक्षणिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है।

वैश्वीकरण के दौर में स्त्री विमर्श : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. चन्द्रलेखा पुरोहित, अतिथि विद्वान् , राजकीय महाविद्यालय, डूंगला, जिला – चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) 9461263036

शोध सार – 21वीं शताब्दी की एक प्रमुख घटना है–वैश्वीकरण। इस दौर में आतंकवाद, पर्यावरण, बेरोजगारी, अशिक्षा आदि विषयों के साथ-साथ नारी विमर्श जैसे ज्वलंत विषय भी अध्ययन के केन्द्र में आ गए है। आज स्त्री विमर्श का क्षेत्र बहुत व्यापक हो चुका है। 'स्त्री विमर्श' केवल समानता के कानूनी दावों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह बाजारवाद, उपभोक्ता संस्कृति, डिजिटल क्रांति और पितृसत्ता के नए रूपों के साथ स्त्री के जटिल संघर्ष का एक व्यापक विमर्श बन गया है। वैश्वीकरण को एक 'दोधारी तलवार' के रूप में देखा जा सकता है, जिसने जहाँ एक ओर शहरी शिक्षित महिलाओं के लिए वैश्विक अवसरों के द्वार खोले हैं, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण और हाशिए की महिलाओं को विस्थापन, संसाधनों की कमी और नई तरह की दासता की ओर धकेला है। वर्तमान में संचार साधनों, पूंजीवाद तथा बाजारीकरण में उल्लेखनीय विकास हुआ है जिसने कई स्तर पर नारी को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है परंतु उसके अस्तित्व पर आज भी प्रश्न चिह्न लगा हुआ है। लेकिन इसी दौर की यह कडवी सचाई भी है कि इसने स्त्री को उपभोक्ता को आकर्षित करने का एक प्रोडक्ट अर्थात् वस्तु बनाकर रख दिया है। जबकि होना तो यह चाहिए था कि स्त्री मुक्ति के लिए जो संघर्ष हुए उसे पितृसत्ता, बजारीकरण, मीडिया के प्रलोभनों से हटाकर पुरुष के समकक्ष राजनीति,आर्थिक, मानसिक व सामाजिक क्षेत्रों में अपने परिवार, राष्ट्र और संस्कृति की पृष्ठभूमि में स्वतंत्र निर्णय लेने की स्वायत्तता मिलती।

व्यापार युद्ध (Trade war)

कृष्ण कुमार देवांगन
अतिथि व्याख्याता
शास. स्नातकोत्तर महावि.कवर्धा छ.ग.

शोध सारांश

व्यापार युद्ध (Trade war) वह स्थिति है जिसमें दो या अधिक देश एक-दूसरे के आयातित उत्पादों पर शुल्क (Tariff) बढ़ाकर या व्यापारिक प्रतिबंध लगाकर आर्थिक प्रतिस्पर्धा करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य घरेलू उद्योगों की रक्षा करना, व्यापार घाटा कम करना तथा राष्ट्रीय आर्थिक हितों को सुरक्षित रखना होता है। आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था में व्यापार युद्ध का प्रभाव केवल संबंधित देशों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि विश्व व्यापार, निवेश, आपूर्ति श्रृंखला तथा उपभोक्ता मूल्यों पर भी व्यापक प्रभाव डालता है।

व्यापार युद्ध (Trade war) अवधारणा के प्रमुख उदाहरण—विशेषकर United States–China तथा उसके वैश्विक और भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभावों का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही, यह भी विश्लेषण किया जाएगा कि व्यापार युद्ध (Trade war) किस प्रकार अंतरराष्ट्रीय व्यापार संबंधों, विनिर्माण क्षेत्र और निवेश प्रवाह को प्रभावित करता है।

शब्द कुंजी – व्यापार युद्ध, Trade war, वैश्विक,

औद्योगिक प्रदूषण और उसका वैश्विक प्रभाव

शोधार्थी – दिव्याभारती
निर्देशक – प्रो. मुकेश कामले सर

सारांश :–

18 वी शताब्दी में शुरू हुई और 19वी शताब्दी में लोकप्रियता हासिल करने वाली औद्योगिक क्रांति ने मानव के सामाजिक और आर्थिक जीवन में व्यापक परिवर्तन लाए। इस क्रांति के लाभ आज भी महसूस किए जा सकते है लेकिन इसके दुष्प्रभाव भी उतने ही स्पष्ट है। औद्योगिकरण के आगमन से औद्योगिक प्रदूषण उत्पन हुआ क्रांति के दौरान प्रैधोगिकी विनिर्माण और विज्ञान सभी में तेजी से वृद्धि हुई और आज भी यह वृद्धि जारी है। औधोगिक क्रांति से पहले उधोग छोटे थे और उनका मुख्य प्रदूषण धुऑ था।संयंत्रो का समय और आकार सीमित था जिसका अर्थ था कि प्रदूषण नगण्य था। प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों का पता तब चला जब कंपनियॉ विशाल संयंत्रो और उधोगों में परिवर्तित हो गई। औद्योगिक प्रदूषण का प्रभाव केवल किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता बल्कि इसका असर पूरी दुनिया पर पडता हैं इसे वैश्विक समस्या के रूप में देखा जाता है। औद्योगिक प्रदूषण से तात्पर्य उन हानिकारक तत्वों से है जों उधोगो (फैक्ट्रियो रासायनिक संयंत्रो आदि)द्वारा वायु जल और मिट्टी में छोडे जाते है। यह प्रदूषण मुख्यतः धुऑ जहरीली गैसें रासायनिक अपशिष्ट प्लास्टिक और भारी धातुओं के रूप में फैलता है। औद्योगिक प्रदूषण का प्रभाव केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नही रहता बल्कि इसका वैश्विक स्तर पर भी गंभीर असर पडता है। वायु प्रदूषण के कारण ग्रीनहाउस गैसो जैसे कार्बन डाइऑक्साइड मीथेन की मात्रा बढती है जिससे वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है। इसके परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन बर्फ के ग्लेशियरों का पिघलना समुद्र स्तर में वृद्धि और प्राकृतिक आपदाओं बाढ सूखा तूफान की आवृत्ति बढ जाती है। जल प्रदूषण से समुद्री जीवन प्रभावित होता हैं और पीने योग्य जल की कमी उत्पन्न होती है। मिट्टी प्रदूषण कृषि उत्पादन को घटाता है इसके अलावा औद्योगिक प्रदूषण मानव स्वास्थ्य पर भी नकरात्मक प्रभाव डालता है। जैसे श्वसन रोग कैसर त्वचा रोग और अन्य गंभीर बीमारियॉ बढती हैं। अंतत;औद्योगिक प्रदूषण एक वैश्विक समस्या है जिसके समाधान के लिए स्वच्छ तकनीकी का उपयोग पर्यावरणीय कानूनो का पालन और जागरूकता आवश्यक है। औद्योगिक प्रदूषण एक गंभीर वैश्विक समस्या है जिसका प्रभाव मानव जीवन पर्यावरण और पृथ्वी के संतुलन पर पड रहा है। यदि समय रहते इसे नियंत्रित नहीं किया गया तो इसके परिणाम और भयावह हो सकते हैं इसलिए आवश्यक है कि सरकार उधोग और आम नागरिक मिलकर इस समस्या का समाधान खोजे और एक स्वच्छ एवं सुरक्षित पर्यावरण की दिशा में कदम बढाएं। सतत विकास के सिद्धांतो को अपनाकर ही हम औद्योगिक प्रदूषण के दुष्प्रभावों को कम कर सकते है। और भविष्य की पीढियों के लिए सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित कर सकते है।

The spread of jewellery from the Indus valley civilisation in india

abstract -

An urban civilization of South Asia was once developing in the valley of the Indus River and the Ghagger-Hakra River or the Saraswati River. It was named the Indus Valley Civilization or Harappan Civilization. This name was kept after the city of Harappa, which one of the first cities discovered in the year 1920. It also called the Indus Saraswati Civilization.

Indus Vally Civilization is oldest Civilization in the world. Various archaeological sites a culture from then to now in the antiquities, most of the jewellery that many nomadic tribes wear. Their manufacturing material and technique, some designs and the way of wearing. jewellery have equality with Indus Vally Civilization for the example bangles on the right hand of the dancing girl statue found from the excavation of Mohenjo-Daro from the wrist to shoulder, all over the arm, match bangles worn by the banjara nomadic tribes today. This means that the nomadic tribes have been the continuous carriers of the culture of the seven thousand years old Indus civilization. Mohenjo-Daro and Lothal include necklaces of gold, semiprecious stones and other ornaments. All ornaments are well crafted. Many metals used like gold, silver, copper, ivory, ceramics and beads were the most prevalent materials use to product jewellery throughout this time period.

A hundred years ago and today Harapan Civilization across in which is currently located in Pakistan. This civilization developed around seven thousand years ago. This civilization is also known other names. Recently many excavations have been done. In which many ornaments have been by some tribals even today. Many ancient objects and ornaments obtained from the Indus civilization have a lot of similarities with the tribes residing today. Apart from this, similarity is also seen in their path of worship.

Dr.Suman Sahu

Govt. Indru kenwat

girls college Kanker

AI and the Future of Work: Evidence-Based Insights into Sectoral Job Transformation and Risk

Anshul Shrivastava[1]

Department of Information Technology; Acharya Panth Shri Grinth Muni Naam Sahab Govt. P.G. College, Kabirdham, Chhattisgarh India

Abstract: *The rapid integration of Artificial Intelligence (AI) across industries is fundamentally reshaping occupational structures and redefining employment dynamics. This study presents an evidence-based analysis of AI-driven job transformation and associated employment risks through a systematic review of recent literature from major academic databases. The paper synthesizes sector-specific insights to examine how AI influences task automation, job augmentation, and skill requirements across domains such as manufacturing, information technology, healthcare, and finance. A structured methodology is adopted to identify research gaps, particularly the lack of comparative sectoral assessments and standardized risk evaluation frameworks. The findings reveal that routine-intensive sectors exhibit higher susceptibility to automation, while knowledge-driven domains experience significant augmentation and skill shifts rather than displacement. Furthermore, the study proposes a sectoral risk classification to better understand vulnerability patterns and workforce implications. The results highlight the growing importance of re-skilling and adaptive policy measures to mitigate employment risks. This work contributes by integrating fragmented literature into a coherent, comparative perspective, offering actionable insights for researchers, policy maker*s, and industry stakeholders in navigating the evolving future of work.

Key Word*: Artificial Intelligence (AI), Occupational Transformation, Employment Risk, Sectoral Analysis, Automation and Augmentation, Future of Work*

A Risk-Aware Spatio-Temporal Approach to Crime Pattern Analysis: A Systematic Review

Bushra Naz [1]

Department of Information Technology; Acharya Panth Shri Grinth Muni Naam Sahab Govt. P.G. College, Kabirdham, Chhattisgarh India.

Abstract

Spatio-temporal crime analysis has emerged as a critical tool for understanding and predicting crime patterns in urban environments. Recent advancements in machine learning and deep learning have significantly improved the accuracy of crime prediction models by capturing complex spatial and temporal dependencies. However, existing approaches primarily focus on hotspot detection and predictive performance, often lacking interpretability and limited integration of environmental risk factors and real-world policing requirements. This paper presents a comprehensive review of recent spatio-temporal crime analysis techniques, including deep learning, graph-based models, and hybrid approaches, highlighting their strengths and limitations. Based on this analysis, a conceptual risk-aware spatio-temporal framework is proposed that integrates crime density, environmental risk factors, and temporal dynamics to enhance analytical depth and practical relevance. The proposed approach emphasizes the identification of crime opportunity zones and incorporates activity-based temporal patterns to better reflect real-world crime behavior. Additionally, the framework aims to bridge the gap between predictive analytics and actionable policing strategies, particularly in data-constrained regions such as Chhattisgarh. This study contributes by combining predictive modeling with interpretability and contextual awareness, providing a foundation for more effective and adaptive crime analysis systems.

Keywords

Spatio-Temporal Crime Analysis, Crime Opportunity Zones, Risk-Aware Modeling, Activity-Based Temporal Analysis, Predictive Policing, Crime Pattern Analysis, Geographic Information Systems (GIS).

व्यापार युद्ध (Trade War)

- दीपक वर्मा, सहायक प्राध्यापक इतिहास

व्यापार युद्ध एक ऐसी आर्थिक स्थिति है जहाँ दो या दो से अधिक राष्ट्र एक-दूसरे के आयात पर टैरिफ (सीमा शुल्क) या अन्य व्यापारिक बाधाएं (जैसे कोटा या सब्सिडी) लगाकर एक-दूसरे की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। शोध के दृष्टिकोण से, यह केवल आर्थिक संघर्ष नहीं, बल्कि भू-राजनीतिक वर्चस्व की एक रणनीतिक लड़ाई है।

1. पृष्ठभूमि (Background)

व्यापार युद्ध का मूल **'संरक्षणवाद' (Protectionism)** और **'व्यापारिक व्यापारवाद' (Mercantilism)** के सिद्धांतों में निहित है। जबकि एडम स्मिथ और डेविड रिकार्डो जैसे अर्थशास्त्रियों ने 'तुलनात्मक लाभ' (Comparative Advantage) और मुक्त व्यापार का समर्थन किया, व्यापार युद्ध इस धारणा पर आधारित होता है कि घरेलू उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाना राष्ट्रीय हित में है।

2. व्यापार युद्ध के मुख्य कारक

शोध के अनुसार, व्यापार युद्ध शुरू होने के पीछे निम्नलिखित तीन प्रमुख कारण होते हैं:

- व्यापार असंतुलन **(Trade Imbalance):** जब एक देश दूसरे देश के साथ भारी व्यापार घाटा (Trade Deficit) का सामना करता है।
- बौद्धिक संपदा और तकनीकी सुरक्षा**:** उन्नत तकनीक (जैसे 5G, AI, सेमीकंडक्टर्स) की चोरी रोकना और अपनी तकनीकी श्रेष्ठता बनाए रखना।
- राजनीतिक कारक**:** घरेलू मतदाताओं को यह दिखाना कि सरकार स्थानीय नौकरियों और उद्योगों के लिए "सख्त" कदम उठा रही है।

3. आर्थिक प्रभाव विश्लेषण (Impact Analysis)

व्यापार युद्ध का प्रभाव बहुआयामी होता है और अक्सर इसके परिणाम नकारात्मक ही रहते हैं:

कारक	अल्पकालिक प्रभाव	दीर्घकालिक प्रभाव
उपभोक्ता	आयातित वस्तुओं के दाम बढ़ना।	क्रय शक्ति में कमी और जीवन स्तर पर असर।

आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain)	कच्चे माल की आपूर्ति में बाधा।	वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का विखंडन (Decoupling)।
मुद्रा बाजार	मुद्रा का अवमूल्यन (Currency Devaluation)।	वैश्विक व्यापारिक अस्थिरता।
कंपनियाँ	लागत मूल्य में वृद्धि।	शोध

4. आधुनिक संदर्भ: अमेरिका-चीन और तकनीकी युद्ध

21वीं सदी का व्यापार युद्ध केवल 'माल' (Goods) तक सीमित नहीं है। शोध बताते हैं कि यह अब **"**टेक वॉर**"** में बदल चुका है।

- डेटा सुरक्षा: डेटा के प्रवाह पर नियंत्रण।
- सेमीकंडक्टर राजनीति: चिप निर्माण की क्षमता को रणनीतिक हथियार के रूप में उपयोग करना।
- निर्यात नियंत्रण: संवेदनशील तकनीकों को प्रतिद्वंद्वी राष्ट्रों तक पहुँचने से रोकना।

5. निष्कर्ष एवं शोध परिणाम

अधिकांश आर्थिक शोध यह निष्कर्ष निकालते हैं कि व्यापार युद्ध में **"**जीत किसी की नहीं होती**" (Lose-Lose Scenario)**।

1. यह वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की वृद्धि दर को धीमा करता है।
2. यह देशों के बीच विश्वास की कमी (Trust Deficit) पैदा करता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय सहयोग कठिन हो जाता है।
3. विश्व व्यापार संगठन (WTO) जैसी संस्थाओं की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है।

भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. रितु चन्द्राकर, (अतिथि व्याख्याता – समाजशास्त्र)
आचार्य पंथ श्री गृंध मुनी नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा, जिला–कबीरधाम (छ.ग.)

शोध सारांश –

प्रस्तुत अध्ययन ''भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव'' विषय पर आधारित है। 21वी. सदी में वैश्वीकरण ने एक प्रमुख निर्धारक शक्ति का रूप ले लिया है यह सम्पूर्ण विश्व के समाजों को प्रभावित कर रहा है और भारत भी इससे अछुता नहीं है। वैश्वीकरण ने भारतीय जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे कि–पारिवारिक संरचना, खान–पान, सभ्यता–संस्कृति, भाषायी विविधता तथा मनोरंजन के साधनों आदि को प्रभावित किया है, जिससे भारतीय संस्कृति पर विभिन्न प्रभावों का एक जटिल जाल निर्मित हो रहा है, जो परम्पराओं, सामाजिक मानदंडों और मूल्यों को प्रभावित कर रहा है। भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो तरह का है जहां एक ओर यह सांस्कृतिक आदान–प्रदान और विकास को बढ़ावा देता है तो वहीं दूसरी ओर यह विभिन्न संस्कृतियों में व्याप्त विविधता को क्षति पहुंचा रहा है और उनमें संभावित सांस्कृतिक सजातीयकरण को लेकर चिंताएं बनी हुई है। वैश्वीकरण केवल एक पक्षीय प्रभाव नहीं है। जहां सिर्फ एक पक्ष के सजातीयकरण अर्थात सभी संस्कृतियों के समान हो जाने की संभावना हो, अपितु वर्तमान में यह एक अधिक जटिल अंतक्रिया को बढ़ावा दे रहा है। वर्तमान में फास्टफूड, रेस्तरां श्रृंखला, मैकडोनॉल्ड के सिद्वांत तेजी से सम्पूर्ण विश्व को अपने प्रभाव क्षेत्र में ला रहे है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण ने भारतीय संस्कृति के मूल ढ़ांचे को परिवर्तित कर रहा है। विशेषकर नगरों एवं महानगरों में इसका प्रभाव अधिक है लेकिन भारतीय ग्रामीण संरचना में इसका प्रभाव अपेक्षतः कम है। प्रस्तुत शोध पत्र के लिए द्वितीयक आंकड़ो, शोध पत्र, पत्रिकाये, संदर्भ पुस्तकें एवं इंटरनेट का प्रयोग किया गया है।

शब्द कुंजी :– वैश्वीकरण, संस्कृति, सजातीकरण, मैकडोनॉल्ड।

वैश्वीकरण और सांस्कृतिक राजनीति

शोधार्थी
शंकर लाल माथुर
Seth R-C-S- Arts and Commerce College]
Durg] Chhattisgarh

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में वैश्वीकरण ने समाज, संस्कृति और राजनीति के पारंपरिक ढाँचों को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। यह प्रक्रिया केवल आर्थिक एकीकरण तक सीमित नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक स्तर पर भी गहरे प्रभाव उत्पन्न करती है। विभिन्न देशों और समाजों के बीच बढ़ते संपर्क ने सांस्कृतिक आदान–प्रदान को तीव्र बनाया है, जिससे एक ओर नई सांस्कृतिक संभावनाएँ विकसित हुई हैं, तो दूसरी ओर स्थानीय पहचान और परंपराओं के समक्ष चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। इसी संदर्भ में "सांस्कृतिक राजनीति" का महत्व बढ़ जाता है, जो यह समझने का प्रयास करती है कि सत्ता, विचारधारा और संस्कृति के बीच किस प्रकार संबंध निर्मित होते हैं।

यह अध्ययन वैश्वीकरण के प्रभाव में उभरती सांस्कृतिक प्रक्रियाओंकृजैसे सांस्कृतिक समरूपीकरण, संकरण और प्रतिरोध,का विश्लेषण करता है। वैश्विक संचार माध्यम, डिजिटल प्लेटफॉर्म और बाजार–उन्मुख प्रवृत्तियाँ स्थानीय संस्कृतियों को प्रभावित करते हुए एक प्रकार की सांस्कृतिक समानता को बढ़ावा देती हैं। इसके विपरीत, कई समाज अपनी विशिष्ट पहचान, भाषा और परंपराओं को सुरक्षित रखने के लिए सक्रिय प्रयास भी करते हैं, जिससे सांस्कृतिक प्रतिरोध और पुनरुत्थान की प्रवृत्तियाँ सामने आती हैं।

भारतीय संदर्भ में यह विमर्श विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि यहाँ बहुलतावादी सांस्कृतिक संरचना के भीतर वैश्विक प्रभावों के साथ सामंजस्य स्थापित करना एक जटिल प्रक्रिया है। यह शोध इस निष्कर्ष की ओर संकेत करता है कि वैश्वीकरण और सांस्कृतिक राजनीति का संबंध एकतरफा नहीं है, बल्कि यह बहुआयामी, गतिशील और अंतःक्रियात्मक है, जिसमें परिवर्तन, संघर्ष और नवाचार तीनों साथ–साथ उपस्थित रहते हैं।

मुख्य शब्द– वैश्वीकरण, सांस्कृतिक राजनीति ,सांस्कृतिक पहचान, सांस्कृतिक समरूपीकरण, सांस्कृतिक संकरण, सांस्कृतिक प्रतिरोध, वैश्विक संचार, सांस्कृतिक विविधता

वैश्वीकरण और भौगोलिक परिदृश्य में परिवर्तन

डॉ सद्धा देवी साहू
सहायक प्राध्यापक भूगोल
शा.दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव छत्तीसगढ़

शोध सरांश
वैश्वीकरण ने विश्व को आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से जोड़ते हुए भौगोलिक परिदृश्य (Geographical Landscape) में व्यापक परिवर्तन किए हैं। परिवहन, संचार, उद्योग और शहरीकरण के विकास ने प्राकृतिक एवं मानव-निर्मित परिदृश्यों को प्रभावित किया है।

समस्या का कथन (Statement of Problem)

वैश्वीकरण के कारण भूमि उपयोग, शहरी विस्तार, पर्यावरणीय असंतुलन और क्षेत्रीय असमानताओं में तीव्र बदलाव देखने को मिल रहा है, जिनका समुचित अध्ययन आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य (Objectives)

वैश्वीकरण के प्रभाव से भौगोलिक परिदृश्य में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना
शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और भूमि उपयोग परिवर्तन का विश्लेषण करना
पर्यावरणीय प्रभावों (जैसे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण) का मूल्यांकन करना
क्षेत्रीय असमानताओं को समझना

शोध प्रश्न (Research Questions)

वैश्वीकरण ने भौगोलिक परिदृश्य को कैसे प्रभावित किया है?
क्या शहरीकरण और औद्योगिकीकरण में वृद्धि वैश्वीकरण का परिणाम है?
वैश्वीकरण से पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़े हैं?
क्या वैश्वीकरण क्षेत्रीय असमानताओं को बढ़ाता है?

हिरेंद्र बहादुर ठाकुर
सहायक प्राध्यापक इतिहास
शा.दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव छत्तीसगढ़
Hbthakur12.rt@gmail.com
8269015813

वैश्वीकरण का ऐतिहासिक विकास: प्राचीन काल से आधुनिक युग तक

प्रस्तावना

वैश्वीकरण (Globalization) वह ऐतिहासिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विश्व के विभिन्न भाग आपस में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक रूप से जुड़े हैं। यह कोई अचानक घटित घटना नहीं, बल्कि एक दीर्घकालिक विकास है, जिसकी जड़ें प्राचीन काल में मिलती हैं और जो आधुनिक डिजिटल युग में अत्यधिक तीव्र हो चुका है।

शोध का उद्देश्य

वैश्वीकरण के ऐतिहासिक विकास को समझना
विभिन्न कालों में इसके स्वरूप और प्रभाव का अध्ययन करना
प्राचीन से आधुनिक युग तक इसके परिवर्तन का विश्लेषण करना

वैश्वीकरण के प्रभाव

आर्थिक: व्यापार और निवेश में वृद्धि, परंतु असमानता भी
सांस्कृतिक: सांस्कृतिक आदान-प्रदान के साथ स्थानीय संस्कृतियों पर प्रभाव
सामाजिक: जीवनशैली में परिवर्तन, शहरीकरण में वृद्धि
राजनीतिक: अंतरराष्ट्रीय सहयोग और संस्थाओं की भूमिका में वृद्धि

निष्कर्ष

वैश्वीकरण का विकास एक निरंतर ऐतिहासिक प्रक्रिया है, जो प्राचीन व्यापार मार्गों से शुरू होकर आधुनिक डिजिटल युग तक पहुंची है। इसने विश्व को एकीकृत किया है, लेकिन साथ ही नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। इसलिए, वैश्वीकरण को संतुलित और समावेशी बनाना आवश्यक है।

<u>वैश्वीकरण और साहित्य का स्वरूप</u>

आशीष श्रीवास्तव
कक्षा – एम.ए. हिन्दी, चतुर्थ सेमेस्टर
आचार्य पंथ श्री गृध मुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा, जिला कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

मार्गदर्शक – श्री नरेंद्र कुमार कुलमित्र
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
आचार्य पंथ श्री गृध मुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा, जिला कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

शोध सारांश | मानव सभ्यता के विकास के साथ साहित्य का स्वरूप निरंतर परिवर्तित होता रहा है और वर्तमान वैश्वीकरण के युग में यह परिवर्तन और अधिक तीव्र एवं व्यापक रूप में दिखाई देता है। वैश्वीकरण, जो विश्व के विभिन्न देशों, संस्कृतियों और अर्थव्यवस्थाओं के बीच बढ़ती पारस्परिकता और एकीकरण की प्रक्रिया है, ने साहित्य को स्थानीय सीमाओं से बाहर निकालकर उसे वैश्विक परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है। इसके प्रभाव से साहित्य की विषयवस्तु, भाषा, शिल्प, दृष्टिकोण तथा अभिव्यक्ति के माध्यमों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। आज का साहित्य केवल स्थानीय जीवन, परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों तक सीमित नहीं रह गया, बल्कि इसमें प्रवास, विस्थापन, सांस्कृतिक पहचान, पर्यावरण संकट, मानवाधिकार, लैंगिक समानता और तकनीकी जीवन जैसे वैश्विक मुद्दों का समावेश हो गया है। भाषा के स्तर पर भी मिश्रित भाषा का प्रयोग बढ़ा है, जिसमें हिंदी के साथ अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं के शब्दों का समावेश सामान्य हो गया है, जिससे संप्रेषणीयता तो बढ़ी है, परंतु साहित्यिक शुद्धता और मौलिकता पर प्रश्न भी उठे हैं। इसके साथ ही डिजिटल माध्यमों—जैसे सोशल मीडिया, ई-पुस्तकें और ब्लॉग—ने साहित्य के सृजन और प्रसार को लोकतांत्रिक बना दिया है, जिससे अधिकाधिक लोग लेखन और पठन से जुड़ पाए हैं, यद्यपि इससे गुणवत्ता और गंभीरता से संबंधित चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। वैश्वीकरण ने साहित्यकार की भूमिका को भी परिवर्तित किया है; अब लेखक स्वयं को वैश्विक नागरिक के रूप में देखते हुए बहुसांस्कृतिक अनुभवों और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण को अपने लेखन में स्थान देते हैं, हालांकि इससे स्थानीयता और सांस्कृतिक जड़ों के क्षीण होने की आशंका भी बनी रहती है। अनुवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के विस्तार ने विश्व साहित्य की अवधारणा को सुदृढ़ किया है, जिससे विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों और विचारधाराओं का समावेश संभव हुआ है, किन्तु बाजारवाद के प्रभाव से साहित्य में व्यावसायिकता का बढ़ना तथा स्थानीय भाषाओं के अस्तित्व पर संकट भी महत्वपूर्ण चिंताएँ हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण ने साहित्य के स्वरूप को बहुआयामी, गतिशील और व्यापक बनाया है, परंतु इसके संतुलित विकास के लिए आवश्यक है कि साहित्य अपनी मौलिकता, सांस्कृतिक आधार और मानवीय मूल्यों को बनाए रखते हुए समकालीन परिवर्तनों के साथ सामंजस्य स्थापित करें।

शब्द कुंजी – साहित्य, वैश्वीकरण, भाषा, संस्कृति, मौलिकता।

मीडिया, उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण का समाज पर प्रभाव

डॉ.देवराज वर्मा (अतिथि व्याख्याता) हिंदी विभाग

आचार्य पंथ श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,कवर्धा कबीरधाम (छ.ग.)

शोध सारांश

मीडिया समाज का विश्वसनीय मित्र है| मीडिया के माध्यम से उठाए गए सवाल प्रत्येक स्थिति में आम आदमी की चिंतन का विषय बन जाता है |मीडिया ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऐसे मुद्दों को उठाया है जिससे यह पता लगता है कि उपभोक्तावाद का वैश्वीकरण, समाज पर कितना गहरा असर पड़ता है | आधुनिक युग में मानवीय संबंधों का आधार सहज न होकर वर्ग, जाति, धर्म और संप्रदाय में विभक्त हो गया है |

वैश्वीकरण के चलते व्यक्ति अपने भूतकाल और भविष्य दोनों से कट गया है |वह सिर्फ वर्तमान की स्वार्थ पूर्ति में लगा हुआ है | उसे न प्रकृति की चिंता है न आने वाली पीढियों की, न ही उसे अपने से बिछड़ते जा रहे अधिसंख्य मनुष्य मात्र की सुख-दुख और भूख प्यास की | यह वैश्वीकरण तीव्रता से विश्व के संपूर्ण कार्य व्यापर पर और सृजनशील जगत पर छा रहा है | यह भूमंडलीकरण जैसा आकर्षित करने वाला शब्द पृथ्वी की एकात्मकता को सभी क्षेत्र में निकट लाने की योजना है |

आज राष्ट्रों के आर्थिक हितों ने एक दूसरे देश को बहुत समीप ला दिया है इससे पहले वह कभी नहीं थे | जिसके कारण प्रत्येक देश एक दूसरे देश में होने वाले घटनाओं को बहुत पास से जान सकते हैं आज विश्व के किसी भी हिस्से में होने वाली घटना का प्रभाव न हमारे देश पर पड़ता है बल्कि साधारण व्यक्ति भी उसके प्रभाव से बच नहीं पता |

उपभोक्तावाद औद्योगीकरण के फलस्वरुप भौतिक सुख-सुविधाओं के उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई है | मीडिया इसके विक्रय हेतु विभिन्न प्रकार विभिन्न प्रचार- प्रसार के माध्यम के रूप में इसे प्रोत्साहित करती है | जिससे उत्पादन के प्रति सहज ही आकृष्ट हो जाए | आज किसी भी व्यक्ति के घर में भौतिक सुख-सुविधाओं के उपकरणों की कमी नहीं है | उपभोक्तावाद के कारण जहां विकृत भोगवाद को पराश्रय मिलता है | वही भ्रष्टाचार स्वयं एक मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है | जिसका प्रभाव केवल एक समाज व देश पर ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर पड़ता है।

पर्यावरण और जैव सुरक्षा प्रभाव

राजकुमार भारद्वाज (अतिथि व्याख्याता) हिंदी विभाग

...चार्य पंथ श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,कवर्धा कबीरधाम (छ.ग.)

शोध सारांश

पर्यावरण पृथ्वी पर जीव-जंतु और बनस्पतियों के मध्य हमेशा से ही सामंजस्य की स्थिति रही है| इसके मध्य निश्चित अनुपात विद्यमान है | जीव-जंतु और बनस्पति का संतुलन पृथ्वी का सहज गुण है| इस पृथ्वी पर जो कुछ विद्यमान है उसमें मानव सबसे उत्कृष्ट है | मनुष्य को प्रकृति का रक्षक और विनाशक भी माना जाता है | प्रकृति में संतुलन स्थापित करने में मानव मात्र की भूमिका आरंभ से ही महत्वपूर्ण रही है | दूसरी तरफ प्रकृति में जब भी किसी प्रकार का असंतुलन दिखाई देता है तो उसके पीछे मनुष्य ही जिम्मेदार होता है |

पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है 'परी' व 'आवरण' के योग से बना है| जीव-जंतुओं के सामूहिक विकास और जीवन को प्रभावित करने वाली सभी परिस्थितियों और प्रभावों का अध्ययन पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं | पर्यावरण में जल, वायु, भूमि सम्मिलित है | इसके अतिरिक्त गतिशील मनुष्य अन्य जीव जंतु, पौधे, सूक्ष्म जीव समूह शामिल है| पर्यावरण में किसी भी घटक का अनुपात बदलने से अधिक हो जाने को पर्यावरण प्रदूषण कहा जाता है| वर्तमान में जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण जैव प्रदूषण के कारण मनुष्य की स्थिति सोचनीय बनी हुई है|

जैव सुरक्षा तथा पर्यावरण के संरक्षण के लिए न सिर्फ जैव विविधता को बनाए रखने के लिए बल्कि संपूर्ण मानव जाति के अस्तित्व और स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है | पर्यावरण तथा जैव सुरक्षा एक दूसरे से जुड़े हुए हैं | पर्यावरण प्रदूषण, जैव विविधता का नष्ट होना, कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग, हानिकारक जैव प्रजातियां पर्यावरण के लिए खतरा है | इन खतरों को कम कर मनुष्य और जीव जंतुओं की स्वास्थ्य की रक्षा का कार्य जैव सुरक्षा के माध्यम से की जाती है।

वैश्वीकरण का बहुआयामी प्रभाव : विज्ञान, व्यापार और संस्कृति का समग्र अध्ययन

मिथलेश कुमार साहू
अतिथि व्याख्याता, अर्थशास्त्र
शासकीय घनश्याम सिंह गुप्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बालोद छत्तीसगढ़

सारांश:

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में वैश्वीकरण एक महत्वपूर्ण एवं गतिशील प्रक्रिया के रूप में उभरा है, जिसने मानव जीवन के विविध क्षेत्रों—विशेषतः विज्ञान, व्यापार और संस्कृति—को गहराई से प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वैश्वीकरण के इन बहुआयामी प्रभावों का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। विज्ञान के क्षेत्र में वैश्वीकरण ने ज्ञान के तीव्र प्रसार, तकनीकी नवाचार तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित किया है, जिससे अनुसंधान एवं विकास की गति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा जैव प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में वैश्विक सहभागिता ने नए आयाम स्थापित किए हैं। व्यापार के क्षेत्र में वैश्वीकरण ने वैश्विक बाजारों के विस्तार, पूंजी के मुक्त प्रवाह तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विकास को बढ़ावा दिया है। ई–कॉमर्स और डिजिटल अर्थव्यवस्था के उदय ने व्यापार को अधिक सुलभ एवं गतिशील बनाया है, हालांकि इसके साथ आर्थिक असमानता, व्यापार असंतुलन एवं स्थानीय उद्योगों पर दबाव जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। संस्कृति के संदर्भ में वैश्वीकरण ने विभिन्न समाजों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सशक्त किया है, जिससे एक ओर वैश्विक संस्कृति का विकास हुआ है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक मूल्यों, भाषाओं एवं सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण की आवश्यकता भी बढ़ी है। अतः निष्कर्षतः वैश्वीकरण एक द्विपक्षीय प्रक्रिया है, जो विकास के व्यापक अवसर प्रदान करती है, किंतु इसके प्रभावों को संतुलित, समावेशी एवं संवेदनशील दृष्टिकोण से समझना और प्रबंधित करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि सतत विकास एवं सामाजिक समृद्धि सुनिश्चित की जा सके।

मुख्य शब्द: वैश्वीकरण, विज्ञान, व्यापार, संस्कृति, ई–कॉमर्स, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, आर्थिक विकास, तकनीकी नवाचार, वैश्विक बाजार

वैश्वीकरण एवं डिजिटल अर्थव्यवस्था के संदर्भ में KCC योजना का कृषकों की आर्थिक सुदृढ़ता पर प्रभाव

ज्योति निषाद (शोधार्थी–अर्थशास्त्र)
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाई नगर दुर्ग (छ.ग.)

शोध सारांश

यह शोध पत्र वैश्वीकरण एवं डिजिटल अर्थव्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) योजना के अंतर्गत लाभार्थी कृषकों की आर्थिक सुदृढ़ता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वैश्वीकरण के प्रभाव से कृषि बाजारों का विस्तार, प्रतिस्पर्धा में वृद्धि तथा मूल्य तंत्र में परिवर्तन हुआ है, वहीं डिजिटल अर्थव्यवस्था ने ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय सेवाओं की पहुँच को सरल, त्वरित एवं पारदर्शी बनाया है। इस संदर्भ में KCC योजना किसानों को समय पर एवं सुलभ ऋण प्रदान कर कृषि निवेश, उत्पादन तथा आय वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि वैश्वीकरण एवं डिजिटल अर्थव्यवस्था के संयुक्त प्रभाव के अंतर्गत KCC योजना ने लाभार्थी कृषकों की आय, निवेश, उत्पादन एवं वित्तीय व्यवहार में किस प्रकार परिवर्तन किया है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है, जिनका संकलन प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं विभिन्न सरकारी स्रोतों के माध्यम से किया गया है। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि KCC योजना के माध्यम से किसानों को समय पर ऋण उपलब्ध होने से उनकी साहूकारों एवं अन्य अनौपचारिक स्रोतों पर निर्भरता में कमी आई है तथा कृषि निवेश एवं उत्पादन में वृद्धि हुई है। कृषकों ने KCC के माध्यम से बीज एवं उर्वरकों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित कर उत्पादकता में सुधार किया। साथ ही, डिजिटल माध्यमों जैसे DBT एवं ऑनलाइन बैंकिंग के उपयोग से वित्तीय समावेशन एवं पारदर्शिता में वृद्धि हुई है, हालांकि डिजिटल साक्षरता की कमी एवं तकनीकी अवसंरचना की सीमाएँ अभी भी प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं। अतः यह अध्ययन निष्कर्षतः दर्शाता है कि वैश्वीकरण एवं डिजिटल अर्थव्यवस्था के समन्वय से KCC योजना कृषकों की आर्थिक सुदृढ़ता में सहायक सिद्ध हो रही है, किन्तु इसके प्रभाव को और अधिक व्यापक बनाने के लिए डिजिटल अवसंरचना के सुदृढ़ीकरण एवं जागरूकता कार्यक्रमों के विस्तार की आवश्यकता है।

शब्दकुंजी : वैश्वीकरण, डिजिटल अर्थव्यवस्था, किसान क्रेडिट कार्ड (KCC), वित्तीय समावेशन, कृषक आर्थिक सुदृढ़ता।

ग्रामीण शासन में महिला सरपंचों का राजनीतिक नेतृत्व: रायपुर जिले के धरसींवा विकासखंड के संदर्भ में वैश्वीकरण के वैज्ञानिक, व्यापारिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का समीक्षात्मक अध्ययन

शोधार्थी – श्रीमती भारती दुबे

विभाग – राजनीति विज्ञान, कला एवं मानविकी
अंजनेय विश्वविद्यालय, नरदहा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

Abstract

ग्रामीण शासन व्यवस्था में महिला सरपंचों की भूमिका भारतीय लोकतंत्र के विकेंद्रीकरण एवं महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य रायपुर जिले के धरसींवा विकासखंड के संदर्भ में महिला सरपंचों के राजनीतिक नेतृत्व का समीक्षात्मक विश्लेषण करना है, साथ ही वैश्वीकरण के वैज्ञानिक, व्यापारिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का उनके नेतृत्व पर पड़ने वाले प्रभावों का बहुआयामी अध्ययन करना है।

वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का विस्तार, बाजार संरचना में परिवर्तन तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान में वृद्धि हुई है, जिसका सीधा प्रभाव स्थानीय शासन प्रणाली और महिला नेतृत्व की कार्यप्रणाली पर देखा जा सकता है। इस अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार वैज्ञानिक प्रगति (जैसे डिजिटल तकनीक), व्यापारिक गतिविधियों के विस्तार तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों ने महिला सरपंचों की निर्णय लेने की क्षमता, प्रशासनिक दक्षता और सामाजिक भागीदारी को प्रभावित किया है।

अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े साक्षात्कार एवं प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित किए गए हैं, जबकि द्वितीयक स्रोतों में सरकारी रिपोर्ट, शोध पत्र एवं संबंधित साहित्य शामिल हैं। निष्कर्षतः यह पाया गया कि वैश्वीकरण ने महिला सरपंचों के नेतृत्व को सशक्त बनाने में सकारात्मक भूमिका निभाई है, यद्यपि सामाजिक रूढ़िवादिता एवं संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं।

यह अध्ययन ग्रामीण शासन में महिला नेतृत्व की प्रभावशीलता को समझने तथा नीतिगत सुधारों के लिए महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान करता है।

Keywords: ग्रामीण शासन, महिला सशक्तिकरण, महिला सरपंच, राजनीतिक नेतृत्व, वैश्वीकरण, वैज्ञानिक प्रभाव, व्यापारिक प्रभाव, सांस्कृतिक प्रभाव, पंचायती राज प्रणाली, निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक सहभागिता, प्रशासनिक दक्षता, धरसींवा विकासखंड, रायपुर जिला

Impact of Globalization on Marital Adjustment,A Psychological Perspective:Review Paper

Dr.Kavita Kannauje
Assistant Professor
Department of Psychology
APSGMNS Govt. P.G.College Kawardha,Disrict- Kabirdham

Absract - Globalization is described as the ways in which the world is becoming increasingly interconnected via channels such as international trade,mass media,travel and the growth of multinational corporation among these there is increased connectivity and cultural exchange,people from different countries and cultures are now likely to meet and form relationship.This has led to a rise in international marriage and multicultural unions,The impact of globalization on marriage has been significant .Globalization influenced the dynamics within marriage as individual and couples are exposed to diverse ideas,values and traditions.It lead to a greater acceptance of different cultural practices and broader understanding of marriage as a global institution and has altered the landscape of marital adjustment by shifting traditional values,economic structures and individual roles.From psychological perspective this process is seen as a transition towards greater individual autonomy and personal fulfillment however it also present challenges such as navigating cultural differences and managing long distance relationship,it also increase relational uncertainity,stress.

The review concludes that marital adjustment in the globalization era requires adaptability,mutual understanding and balance between traditional and modern values.

Keywords:*Globalization,Marriage,Marital Adjustment,Psychological Perspective*

A Study on Globalization: Opportunities, Challenges and Emerging Trends

APNEET TIRKEY

Assistant Professor, Department of Commerce, Govt Naveen College Fasterpur, Mungeli, C.G

apneett@gmail.com

Abstract:

Globalization is a process that links nations via commerce, technology, communication, and cultural sharing. This research examines the effects of globalization on economic growth, technological progress, and cultural change. It emphasizes how globalization boosts international trade, facilitates technology sharing, and allows companies to access worldwide markets via digital platforms, thus generating job opportunities and fostering innovation and entrepreneurship.

Although it offers many advantages, globalization also brings several difficulties. A major issue is the expanding divide between the wealthy and the impoverished, negatively impacting small and local enterprises, frequently putting them at a disadvantage within the global marketplace. Moreover, globalization impacts cultural identity, occasionally resulting in a decrease in local customs and values. Environmental problems also emerge as a result of heightened industrialization and worldwide economic actions.

The research also highlights that globalization is vital for the expansion of the digital economy and the advancement of new technologies. Although globalization offers numerous advantages, the favorable effects rely on strong regulations and inclusive strategies to tackle its challenges. In general, globalization continues to be a significant force behind contemporary development, having the ability to create a more interconnected and forward-looking future if handled wisely.

Keywords: Globalization, International Trade, Digital Economy, Economic Growth, Technological Progress, Cultural Exchange, Income Inequality.

वैश्वीकरण का हिंदी भाषा पर प्रभाव

श्री नरेंद्र कुमार कुलमित्र
सहायक प्राध्यापक, हिंदी
आचार्य पंथ श्री ग्रंथ मुनि नाम साहेब
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा
जिला कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

सार (Abstract):

वैश्वीकरण आधुनिक युग की एक प्रमुख प्रक्रिया है, जिसने विश्व को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी स्तर पर परस्पर जोड़ते हुए "वैश्विक गाँव" का रूप प्रदान किया है, और इसका व्यापक प्रभाव हिंदी भाषा पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। प्रस्तुत शोध-पत्र "वैश्वीकरण का हिंदी भाषा पर प्रभाव" इसी संदर्भ में हिंदी के स्वरूप, संरचना, प्रयोग और विकास की दिशा में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप हिंदी भाषा ने एक ओर अपनी अभिव्यक्ति क्षमता का विस्तार किया है, वहीं दूसरी ओर वह अनेक चुनौतियों से भी जूझ रही है। सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल माध्यमों के विकास ने हिंदी को इंटरनेट, सोशल मीडिया, ब्लॉग, वेबसाइट तथा ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से वैश्विक स्तर पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे हिंदी का प्रसार भारत की सीमाओं से बाहर भी तेजी से हुआ है। इसके साथ ही, अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं के संपर्क के कारण हिंदी की शब्दावली में व्यापक परिवर्तन आया है, जिसके परिणामस्वरूप "हिंग्लिश" जैसी मिश्रित भाषा का प्रचलन बढ़ा है, जो विशेष रूप से युवा पीढ़ी में लोकप्रिय हो रही है। यह प्रवृत्ति हिंदी को अधिक सहज और व्यावहारिक बनाती है, किंतु भाषा की शुद्धता, व्याकरणिक संरचना और पारंपरिक शब्द-संपदा के संरक्षण के लिए चुनौती भी प्रस्तुत करती है। वैश्वीकरण ने हिंदी को अनुवाद के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में भी सहायता की है, जिससे विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और समझ बढ़ी है। इसके अतिरिक्त, मीडिया, विज्ञापन और मनोरंजन उद्योग ने हिंदी के स्वरूप को अधिक संप्रेषणीय और प्रभावशाली बनाया है। हालांकि, बाजारवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से भाषा के व्यावसायीकरण की प्रवृत्ति भी बढ़ी है, जिसके कारण साहित्यिक और शुद्ध भाषा के स्थान पर सरल, आकर्षक और त्वरित प्रभाव डालने वाली भाषा को प्राथमिकता दी जाने लगी है। इस प्रक्रिया में हिंदी की सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक मूल्यों के क्षरण की आशंका भी व्यक्त की जाती है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हिंदी भाषा के विकास में वैश्वीकरण के सकारात्मक पक्षों–जैसे तकनीकी विस्तार, वैश्विक पहचान और संप्रेषणीयता–का समुचित उपयोग किया जाए, साथ ही इसके नकारात्मक प्रभावों–जैसे भाषा की शुद्धता में कमी, सांस्कृतिक क्षरण और अत्यधिक विदेशी प्रभाव–को संतुलित किया जाए। इस प्रकार, यह शोध-पत्र निष्कर्ष रूप में यह स्थापित करता है कि वैश्वीकरण हिंदी भाषा के लिए एक अवसर और चुनौती दोनों है, और संतुलित दृष्टिकोण अपनाकर ही हिंदी को समृद्ध, सशक्त और वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित बनाया जा सकता है।

कुंजी शब्द: वैश्वीकरण, हिंदी भाषा, हिंग्लिश, डिजिटल माध्यम, सांस्कृतिक प्रभाव

जलवायु परिवर्तन के दौर में वैश्वीकरण की नई चुनौतियाँ: भौगोलिक और आर्थिक विश्लेषण

अतिथि व्याख्याता:- हरि शंकर
वीरांगना मासक देवी नाग शासकीय नवीन महाविद्यालय जावांगा गीदम जिला दंतेवाड़ा

शोध सारांश (Abstract)

वर्तमान सदी में 'वैश्वीकरण' और 'जलवायु परिवर्तन' दो सबसे महत्वपूर्ण और परस्पर जुड़ी हुई वैश्विक घटनाएँ हैं। यह शोध पत्र इस बात का गहन विश्लेषण करता है कि कैसे जलवायु परिवर्तन ने पारंपरिक वैश्वीकरण के सामने अभूतपूर्व भौगोलिक और आर्थिक चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। ऐतिहासिक रूप से, वैश्वीकरण ने औद्योगिक विकास और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देकर कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि की है। हालाँकि, अब यही जलवायु परिवर्तन वैश्वीकरण के मूल ढांचे—आपूर्ति श्रृंखलाओं, वैश्विक व्यापार मार्गों और आर्थिक स्थिरता—के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है।

भौगोलिक दृष्टिकोण से, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि और चरम मौसम की घटनाएँ वैश्विक व्यापार के प्रमुख तटीय बंदरगाहों और रसद (लॉजिस्टिक्स) केंद्रों को खतरे में डाल रही हैं। इसके अतिरिक्त, कृषि-जलवायु क्षेत्रों (agro-climatic zones) में बदलाव के कारण खाद्य सुरक्षा और वैश्विक प्रवासन (जलवायु शरणार्थी) का संकट गहरा रहा है। आर्थिक मोर्चे पर, यह शोध पत्र वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (Global Value Chains) में आने वाली बाधाओं, विकासशील और विकसित देशों के बीच बढ़ती आर्थिक असमानता, और हरित अर्थव्यवस्था (Green Economy) में संक्रमण की उच्च लागतों का परीक्षण करता है।

विशेष रूप से 'कार्बन सीमा समायोजन तंत्र' (Carbon Border Adjustment Mechanism) जैसी नई व्यापार नीतियों के उद्भव का विश्लेषण किया गया है, जो 'हरित संरक्षणवाद' (Green Protectionism) को जन्म दे सकती हैं। निष्कर्षतः, यह शोध पत्र तर्क देता है कि वैश्वीकरण को अब केवल लाभ और दक्षता पर केंद्रित नहीं किया जा सकता; इसे जलवायु अनुकूलन और स्थिरता (sustainability) के सिद्धांतों के साथ एकीकृत करके एक 'हरित और लचीले वैश्वीकरण' (Green and Resilient Globalization) की ओर बढ़ना होगा।

Shikha Shrivastava , Assistant Professor, Govt. Shahid Koushal Yadav College Gunderdehi, Dist Balod (CG) shikha.kwd001@gmail.com 810 3443212

Impact of Global Connectivity on Infectious Disease: Transmission & Management

Abstract

Globalisation has transformed the dynamics of infectious disease transmission by increasing the speed and scale of human movement, trade, and communication across borders. This study examines how interconnected global systems contribute to the rapid spread of contagious diseases. Increased international travel, migration, urbanisation, and global trade have facilitated the cross-border transmission of pathogens, enabling local outbreaks to escalate into epidemics and pandemics within a short period.

The emergence and global spread of diseases such as COVID 19,influenza, and Ebola virus disease highlight the role of global connectivity in disease dissemination. Additionally, factors such as climate change, ecological disruption, and increased human–animal interactions have further intensified the risk of zoonotic disease transmission.

However, globalisation has also strengthened international collaboration in disease surveillance, research, and response mechanisms. Organizations like the WHO play a crucial role in coordinating global health efforts, sharing data, and implementing control measures.

This study concludes that while globalisation accelerates the spread of contagious diseases, it also provides opportunities for improved global health governance.

Key words: contagious diseases, dissemination, zoonotic disease.

Role of Surfactants in Enhancing Heavy Metal Removal from Wastewater

Deepti Tikariha Jangde[1] and Birendra Kumar[2]

[1] APSGMNS Govt. P.G. College Kawardha, Dist.- Kabirdham (C.G.)

[2] RVRS Govt. Kanya Mahavidyalaya Kawardha, Dist.- Kabirdham (C.G.)

Abstract

Heavy metal contamination in water systems poses serious environmental and public health challenges, particularly due to discharges from agricultural runoff and sugar industry effluents. In the present study, key physicochemical parameters of water sample, including pH, total hardness, total dissolve solid, turbidity and chemical oxygen demand (COD) were analyzed. The results revealed the presence of several heavy metal ions such as iron (Fe), lead (Pb), cadmium (Cd) and chromium (Cr) with concentration exceeding permissible limits. Among these, iron was found to be present at significantly higher levels compared to other metals. The removal mechanism involves micellar solubilization, enhanced adsorption and metal surfactant interactions including complexation. The study demonstrates that surfactant mediated cloud point extraction is an effective, economical and environmentally sustainable approach for the removal of heavy metals from contaminated water systems.

Keywords: Surfactant, polymers, heavy metal, cloud point extraction, Iron

वैश्वीकरण का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभावः एक आधुनिक दृष्टिकोण

खेलन प्रसाद माहुले
क्रीड़ा विभाग, आचार्य पंथ श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा
जिला – कबीरधाम (छ.ग.)

शोध सारांश

वर्तमान दौर में वैश्वीकरण ने लगभग पूरी दुनिया को एक धागे में पिरो दिया है। लेकिन इस जुड़ाव ने केवल व्यापार और तकनीक को ही नहीं, बल्कि इंसान के सोचने, समझने और महसूस करने के तरीके को भी गहराई से प्रभावित किया है। यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि, कैसे एक ग्लोबल दुनिया हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए वरदान और बोझ दोनों साबित हो रही है। वैश्वीकरण के सकारात्मक पहलू ने मानसिक स्वास्थ्य की लड़ाई को आसान बनाया है। इंटरनेट के माध्यम से अब तनाव और चिंता जैसे विषयों पर खुलकर बात होने लगी है। वह व्यक्ति जो समाज के डर से डॉक्टर के पास नहीं जा पाता था, आज अपने फोन के जरिए ऑनलाइन या टेलिफोनिक थेरेपी एवं उपचार ले सकता है। साथ ही, दुनिया ने एक–दूसरे से सीखा है जैसे पश्चिम ने भारत के योग और आयुर्वेद को अपनाया, तो हमने आधुनिक मनोवैज्ञानिक पद्धतियों को, जिससे मानसिक शांति के नए आयाम खुले हैं। दूसरी ओर, वैश्वीकरण ने एक ऐसी अंधी दौड़ शुरू कर दी है जिसका सीधा असर हमारे मानसिक स्थिति पर पड़ रहा है। हर समय नवाचार एवं परिवर्तन करते रहने की मजबूरी और सोशल मीडिया पर दूसरों की चमक–धमक वाली जिंदगी से अपनी तुलना करने की आदत ने युवाओं में हीन भावना और बेचैनी भर दी है। हर समय चलने वाली वैश्विक अर्थव्यवस्था ने कार्य और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन को खत्म कर दिया है, जिससे बर्नआउट और मानसिक थकान एक आम समस्या बन गई है। अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कटने के कारण कई लोग आज भीड़ में भी खुद को अकेला महसूस करते हैं। वैश्वीकरण ने हमें पूरी दुनिया से तो जोड़ दिया, लेकिन कहीं न कहीं हम खुद से दूर होते गए। यदि हमें इस वैश्विक दुनिया में स्वस्थ रहना है, तो हमें तकनीक के साथ–साथ अपनी भावनाओं और मानसिक स्वास्थ्य को भी प्राथमिकता देनी होगी।

वैश्वीकरण : एक अवसर, चुनौती एवं संभावनाएँ

डॉ. अगर दास बघेल

सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

शासकीय राजमाता विजयाराजे सिंधिया कन्या महाविद्यालय, कवर्धा (छ.ग.) – 491995

आज विज्ञान, तकनीक, संचार और परिवहन के विकास ने पूरे विश्व को एक छोटे से गॉव के रूप में बदल दिया है । गॉव, जहॉ लोग बड़ी आसानी से एक–दूसरे के साथ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़कर सामाजिक जरूरतों को पूरा करते हैं, ठीक इसी तरह आज पूरी दुनिया के लोग विभिन्न माध्यमों से एक–दूसरे से जुड़कर सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, राजनीतिक और व्यापारिक गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं । विश्व का इस तरह जुड़ना ही वैश्वीकरण कहलाता है अर्थात् वैश्वीकरण आधुनिक युग की वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा विश्व की अर्थव्यवस्थाओं, संस्कृतियों और समाजों को एक – दूसरे के साथ जोड़ा जा रहा है । आज विश्व के देशों की सीमाओं के पार वस्तुओं, सेवाओं, पूँजी, सूचना और प्रौद्योगिकी का स्वतंत्र प्रवाह हो रहा है । आज जहॉ वैश्वीकरण के कारण पूरे विश्व में रोजगार और विकास के नए असवर उत्पन्न हुए हैं, तो वहीं विज्ञान और तकनीक के दुरूपयोग ने नई चुनौतियों को भी जन्म दिया है । वैश्वीकरण ने पूरे विश्व में विकास के नये द्वार खोल दिये हैं । वैश्वीकरण के कारण आज आर्थिक विकास तेजी से हो रहे हैं, साथ ही साथ तकनीकी प्रगति, शिक्षा और ज्ञान का विस्तार और सांस्कृतिक आदान – प्रदान भी हो रहे हैं । वैश्वीकरण जहॉ एक ओर लाभदायक है, तो दूसरी ओर इसके कुछ दुष्परिणाम भी हैं, जैसे – स्थानीय उद्योगों पर प्रभाव, लघु एवं कुटीर उद्योगों का ह्रास, सांस्कृतिक संकट, आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय समस्याएँ, आतंकवादी घटनाओं में वृद्धि इत्यादि । वैश्वीकरण की संभावनाओं की बात करें तो यदि वैश्वीकरण का सही दिशा में उपयोग किया जाये, तो यह मानव समाज के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो सकता है । वैश्वीकरण से मानव और पर्यावरणीय विकास की अपार संभावनाएँ हैं, बस आवश्यकता है इसे मानवता के भाव से करने की । वैश्वीकरण आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है । इसने आज मानव सभ्यता और संस्कृति के साथ–साथ आर्थिक विकास के नये अवसर उत्पन्न किये हैं । विज्ञान और तकनीक के असमान विकास ने अनेक प्रकार के चुनौतियों को भी जन्म दिया है । फिर भी यदि इनका उपयोग सही दिशा में किया जाये, तो इसमें मानवीय विकास की अपार संभावनाएँ हैं ।

Phytochemical Screening and Quantification of Ellagic acid in *Cliestanthus collinus* using RP-HPLC-DAD method and its Insecticidal Activity against Stored Grain Pests

Dr. Reena Baghel

Govt. Indaru Kenwat Girls' College, Kanker (C.G.) - 494334

This study reports the preliminary phytochemical analysis followed by the quantitative determination of Ellagic acid in different parts of *Cliestanthus collinus* using reverse phase liquid chromatography (HPLC) in association with a diode array detector (DAD). The developed RP-HPLC method achieved separation of Ellagic acid within 10 minutes of run time through gradient elution using methanol and water with 1 % acetic acid as the mobile phase on a C-18 reverse phase column at room temperature and 365 nm of detection wavelength. The method showed excellent linearity across a range of 0.01 μgmL^{-1} to 10 μgmL^{-1} with LOD and LOQ values of 0.027 μgmL^{-1} and 0.091 μgmL^{-1} respectively, demonstrating lower precision characterized by RSD% of 0.73% and higher accuracy as recovery of 99.5%. Additionally, the insecticidal activity of Ellagic acid obtained by isolation from the leaves, bark and fruits of *Cliestanthus collinus* was examined against two stored grain pest, *Tribolium castaneum* and *Corcyra cephalonica* larvae. Results indicated that ellagic acid showed significant pesticidal activity against *Tribolium castaneun* with a mortality rate of 98% than against *Corcyra cephalonica* larvae with a mortality rate of 76%, suggesting its use as a natural biopesticide. Moreover, based on available information, this is the first report pertaining to phytochemical screening of the whole part of *Cliestanthus collinus* and quantitation of Ellagic acid in different parts of Cliestanthus collinus suggesting this plant as a new natural source of Ellagic acid along with pesticidal activity of Ellagic acid against stored grain pest.

Key words: Ellagic Acid, Cliestanthus collinus, HPLC

Asit Kumar*, Richa Mishra*

Department of Zoolology, Govt. Rajmata Vijaya Raje Sindhiya Kanya Mahavidyalaya , Kawardha (C.G.) 491995

Department of Microbiology, Acharya Panth Shri Grindhmuni Naam Saheb Govt. P.G. College, Kawardha (C.G.) 491995

ABSTRACT

"Global impact of industrial pollution on aquaculture - A Review"

As the world's population grows, it must simultaneously preserve economic flexibility and provide food security. The rapid growth of aquaculture around the world has established it as a foundation for food security as it is a major source of aquatic protein. However, its long-term viability is increasingly in jeopardy and is currently facing an existential threat due to the intensification of anthropogenic and industrial pollutant pressures. The current analysis focuses on the growing effects of industrial effluents, such as micro plastics, pesticide runoff, and heavy metal effluents, on aquatic species that are cultivated. These pollutants cause serious physiological stress, such as cellular oxidation, damage to structural organs, and disruption of metabolism, which eventually results in poorer biomass yields and survival rates. According to recent studies, these pollutants work together as synergistic stressors to worsen the bioaccumulation of persistent organic pollutants in valuable species.This review examines conte mporary mitigation frameworks, such as recirculating aquaculture systems and integrated multitr ophic Aquaculture, and makes the case for a paradigm change toward "Blue Transformation" tha t combines cuttingedge remediation technologies with stricter globalwater quality governance to safeguard global food security and economic flexibility.

Keywords: World Population, Food Security, Aquaculture, Industrial Pollutants, Blue Transformation, Remediation Technologies.

Corresponding author

Asit Kumar, *Department of Zoology, Govt. Rajmata Vijaya Raje Sindhiya Kanya Mahavidyalaya , Kawardha(C.G.) 491995*

Email address: asitraipur@gmail.com

Title: Evaluation of Ethnomedicinal Plant Extracts Against Antibiotic-Resistant Bacteria

Author: Dr. Shama Afroze. Baig
Asst. Professor & Head, Department of Microbiology
Affiliation: Swami Shri Swaroopanand Saraswati Mahavidyalaya, Hudco, Bhilai, C.G.
Contact: shamaabaig@gmail.com
9977471666

ABSTRACT: The rapid emergence of antibiotic-resistant bacteria has become a serious global health challenge, limiting the effectiveness of conventional antibiotics and increasing the incidence of difficult-to-treat infections. The present study aimed to evaluate the antibacterial potential of selected ethnomedicinal plant extracts against antibiotic-resistant bacterial strains. Ethnomedicinally important plants including *Azadirachta indica* (Neem), *Ocimum sanctum* (Tulsi), *Adhatoda vasica* (Adusa), *Curcuma longa* (Turmeric), and *Blumea lacera* were selected based on their traditional therapeutic applications and antimicrobial significance. Fresh plant materials were collected, shade dried, powdered, and extracted using aqueous, ethanol, and methanol solvents through standard extraction procedures.

The antibacterial activity of the plant extracts was evaluated against clinically important antibiotic-resistant bacterial isolates such as *Escherichia coli*, *Staphylococcus aureus*, *Pseudomonas aeruginosa*, and *Klebsiella pneumoniae* using agar well diffusion and minimum inhibitory concentration (MIC) assays. Antibiotic susceptibility testing confirmed the multidrug-resistant nature of the selected bacterial strains. The results revealed that several plant extracts exhibited considerable antibacterial activity against resistant pathogens. Methanolic and ethanolic extracts showed comparatively greater inhibitory effects than aqueous extracts, suggesting a higher solubility of bioactive compounds in organic solvents.

Phytochemical analysis indicated the presence of important secondary metabolites including alkaloids, flavonoids, tannins, saponins, phenolics, and terpenoids, which are known for their antimicrobial properties. Among the tested plants, *Azadirachta indica* and *Ocimum sanctum* demonstrated strong broad-spectrum antibacterial activity against both Gram-positive and Gram-negative bacteria.

The findings of the study highlight the therapeutic potential of ethnomedicinal plants as alternative sources of antimicrobial agents against multidrug-resistant bacteria. The study also emphasizes the importance of integrating traditional medicinal knowledge with modern microbiological research for the development of safe, effective, and eco-friendly plant-based antimicrobial therapies.

Keywords: Antibiotic Resistance, Ethnomedicinal Plants , Multidrug-Resistant Bacteria, Antibacterial Activity, Phytochemicals

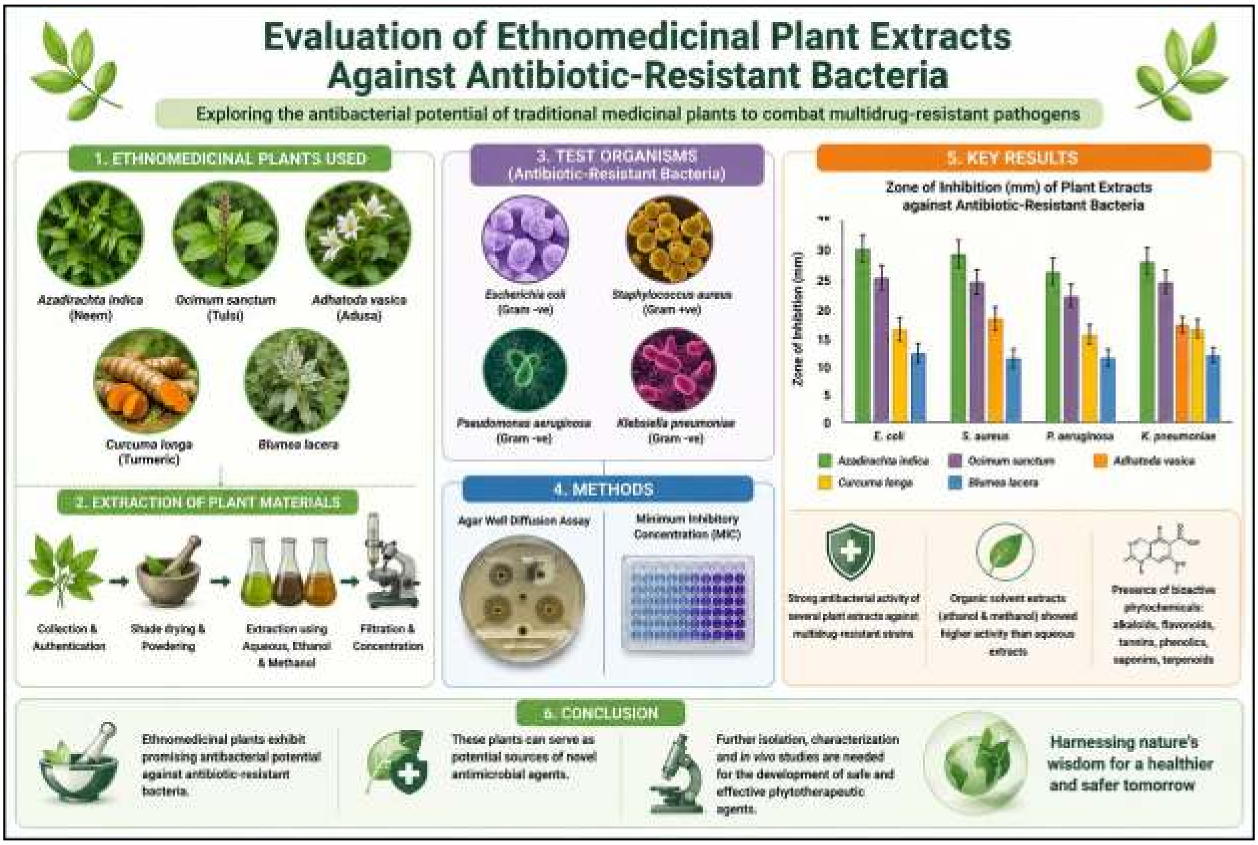
Evaluation of Ethnomedicinal Plant Extracts Against Antibiotic-Resistant Bacteria
Exploring the antibacterial potential of traditional medicinal plants to combat multidrug-resistant pathogens
1. ETHNOMEDICINAL PLANTS USED
Azadirachta indica (Neem)
Ocimum sanctum (Tulsi)
Adhatoda vasica (Adusa)
Curcuma longa (Turmeric)
Blumea lacera
2. EXTRACTION OF PLANT MATERIALS
Collection & Authentication
Shade drying & Powdering
Extraction using Aqueous, Ethanol & Methanol
Filtration & Concentration
3. TEST ORGANISMS (Antibiotic-Resistant Bacteria)
Escherichia coli (Gram -ve)
Staphylococcus aureus (Gram +ve)
Pseudomonas aeruginosa (Gram -ve)
Klebsiella pneumoniae (Gram -ve)
4. METHODS
Agar Well Diffusion Assay
Minimum Inhibitory Concentration (MIC)
5. KEY RESULTS
Zone of Inhibition (mm) of Plant Extracts against Antibiotic-Resistant Bacteria
Zone of Inhibition (mm)
0
5
10
15
20
25
30
E. coli
S. aureus
P. aeruginosa
K. pneumoniae
Azadirachta indica
Ocimum sanctum
Adhatoda vasica
Curcuma longa
Blumea lacera
Strong antibacterial activity of several plant extracts against multidrug-resistant strains
Organic solvent extracts (ethanol & methanol) showed higher activity than aqueous extracts
Presence of bioactive phytochemicals: alkaloids, flavonoids, tannins, phenolics, saponins, terpenoids
6. CONCLUSION
Ethnomedicinal plants exhibit promising antibacterial potential against antibiotic-resistant bacteria.
These plants can serve as potential sources of novel antimicrobial agents.
Further isolation, characterization and in vivo studies are needed for the development of safe and effective phytotherapeutic agents.
Harnessing nature's wisdom for a healthier and safer tomorrow

व्यापार युद्ध : वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

मनसुख लाल वर्मा, सहायक प्राध्यापक, आचार्य पंथ श्री ग्रन्ध मुनि नाम साहेब शास स्नातकोत्तर महाविद्यालय कवर्धा, जिला कबीरधाम (छ .ग .)

शोध सारांश

वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था में "व्यापार युद्ध" (Trade War) एक महत्वपूर्ण आर्थिक एवं राजनीतिक विषय बन चुका है। जब दो या अधिक देश अपने घरेलू उद्योगों की रक्षा तथा व्यापार संतुलन सुधारने के उद्देश्य से एक-दूसरे के उत्पादों पर आयात शुल्क (Tariff), प्रतिबंध या अन्य व्यापारिक बाधाएँ लगाते हैं, तब उसे व्यापार युद्ध कहा जाता है। हाल के वर्षों में विशेष रूप से अमेरिका और चीन के बीच व्यापार युद्ध ने विश्व व्यापार व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया है।

व्यापार युद्ध के प्रमुख कारण

- घरेलू उद्योगों की सुरक्षा
- व्यापार घाटा कम करना
- राजनीतिक एवं आर्थिक प्रभुत्व स्थापित करना
- तकनीकी प्रतिस्पर्धा और बौद्धिक संपदा विवाद
- रोजगार संरक्षण की नीति

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

व्यापार युद्ध का प्रभाव केवल संबंधित देशों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरी विश्व अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। इसके प्रमुख प्रभाव निम्न हैं—

- अंतरराष्ट्रीय व्यापार में कमी
- वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि
- उत्पादन लागत में बढ़ोतरी
- निवेश एवं रोजगार के अवसरों में कमी
- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) में बाधा
- आर्थिक विकास दर में गिरावट

भारत पर व्यापार युद्ध का प्रभाव

भारत जैसे विकासशील देशों पर व्यापार युद्ध के मिश्रित प्रभाव देखने को मिलते हैं। एक ओर कुछ क्षेत्रों में निर्यात के नए अवसर उत्पन्न होते हैं, वहीं दूसरी ओर वैश्विक मंदी का खतरा भी बढ़ जाता है। इलेक्ट्रॉनिक्स, कृषि, वस्त्र एवं औद्योगिक क्षेत्रों में इसके प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देते हैं।

- सकारात्मक पक्ष
- घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहन

- स्थानीय उत्पादन एवं "मेक इन इंडिया" को बढ़ावा
- नए व्यापारिक साझेदारों की खोज
- निर्यात में संभावित वृद्धि
- नकारात्मक पक्ष
- महंगाई में वृद्धि
- विदेशी निवेश में कमी
- व्यापारिक अनिश्चितता
- उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ

समाधान एवं सुझाव

- मुक्त एवं संतुलित व्यापार नीति अपनाई जाए।
- विश्व व्यापार संगठन (WTO) की भूमिका को मजबूत किया जाए।
- द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय समझौतों को बढ़ावा दिया जाए।
- घरेलू उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ाई जाए।
- तकनीकी नवाचार एवं आत्मनिर्भरता पर ध्यान दिया जाए।

निष्कर्ष

व्यापार युद्ध आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक गंभीर चुनौती है। यद्यपि इसका उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना होता है, किन्तु दीर्घकाल में यह वैश्विक व्यापार, आर्थिक स्थिरता एवं उपभोक्ताओं के हितों को प्रभावित करता है। इसलिए आवश्यक है कि राष्ट्र सहयोग, संवाद एवं संतुलित व्यापार नीतियों के माध्यम से आर्थिक विवादों का समाधान खोजें।

औद्योगिक प्रदूषण और उसका वैश्विक प्रभाव

डॉ. अर्चना बौद्ध

सहायक प्राध्यापक (इतिहास)

चन्दूलाल चन्द्राकर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय धमधा जिला – दुर्ग

सारांश – औद्योगिक क्रांति के बाद से उद्योग के क्षेत्र में तेजी से विकास हुआ है, इसके पश्चात उत्पादन, रोजगार और आर्थिक समृद्धि के साथ लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ, नवीन क्षेत्रों की खोज हुई और मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास हुआ। नवीन क्षेत्रों की खोज और उन क्षेत्रों की व्यवसायीकरण की नीति ने वैश्वीकरण को जन्म दिया, लेकिन विकास के साथ ही पर्यावरण प्रदूषण की समस्या भी गंभीर हो गई। उद्योगों से निकलने वाला धुआँ, रासायनिक अपशिष्ट, जहरीली और दूषित जल प्राकृतिक संतुलन को प्रभावित करते हैं, इसे ही औद्योगिक प्रदूषण कहा जाता है।

इन उद्योगों से निकलने वाली जहरीली गैंसे और ग्रीन हाउस गैंस पृथ्वी के तापमान को बढ़ा रही है, जिससे जलवायु परिवर्तन हो रहा है, जलवायु परिवर्तन के कारण हिमनदों का पिघलना समुद्र के जल स्तरों में वृद्धि और मौसम में असामान्य परिवर्तन हो रहा है। इन ग्रीनहाउस गैसों के कारण ओजोन परत में क्षरण हो रहा है, जिससे त्वचा में कैंसर और आंखों में रोग फैल रही है और जैव विविधता को नुकसान पहुंच रहा है, औद्योगिक गैसों के कारण अम्लीय वर्षा हो रही है, जो फसलों को नुकसान करने के साथ–साथ भवनों और स्मारकों का क्षरण कर रहा है, जिसका मानव जीवन पर प्रत्यक्ष दुष्प्रभाव दिखाई दे रहा हैं। औद्योगिक प्रदूषण को रोकने के उपाय के रूप में उद्योगों में प्रदूषण नियंत्रण, उपकरणों का उपयोग, अपशिष्ट पदार्थों का पुनर्चक्रण, स्वच्छ एवं हरित ऊर्जा का प्रयोग, वृक्षारोपण को बढ़ावा, पर्यावरण संबंधी कानूनों का कठोर पालन और जन–जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है।

वैश्वीकरण: अवसर, चुनौती एवं संभावनाएँ

डॉ.यशोदा साहू सहायक प्राध्यापक इतिहास
यशवंत राव मेघावाले शासकीय महाविद्यालय मगरलोड,
जिला–धमतरी (छ.ग)

वैश्वीकरण 21वीं सदी की सबसे प्रभावशाली ऐतिहासिक प्रक्रिया है जिसने राष्ट्र-राज्यों की भौगोलिक सीमाओं को गौण कर विश्व को एक "वैश्विक ग्राम" में परिवर्तित कर दिया है। वस्तुतः वैश्वीकरण कोई नवीन घटना नहीं है। प्राचीन काल में रेशम मार्ग, मध्यकाल में समुद्री व्यापार तथा औपनिवेशिक काल में यूरोपीय साम्राज्यवाद के रूप में इसके प्रारंभिक स्वरूप देखे जा सकते हैं। किंतु 1991 के आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण की नीति के बाद भारत के संदर्भ में इसका स्वरूप निर्णायक रूप से बदला। सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति, इंटरनेट तथा परिवहन के साधनों में अभूतपूर्व विकास ने वैश्वीकरण को त्वरित एवं सर्वव्यापी बना दिया।

वर्तमान में वैश्वीकरण केवल आर्थिक लेन-देन तक सीमित नहीं है, अपितु यह सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं तकनीकी क्षेत्रों को भी गहराई से प्रभावित कर रहा है। एक ओर इसने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, रोजगार के नवीन अवसर, तकनीकी ज्ञान का हस्तांतरण तथा भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच प्रदान किया है। मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया एवं स्टार्टअप इंडिया जैसे कार्यक्रम वैश्वीकरण के सकारात्मक परिणामों के ही उदाहरण हैं। दूसरी ओर, इस प्रक्रिया ने आर्थिक असमानता, सांस्कृतिक समरूपता, स्थानीय उद्योगों का ह्रास, पर्यावरणीय संकट तथा पहचान के संकट जैसी गंभीर चुनौतियों को भी जन्म दिया है। छत्तीसगढ़ जैसे जनजातीय बहुल राज्यों में वैश्वीकरण का प्रभाव खनन, विस्थापन एवं पारंपरिक जीवन-मूल्यों के परिवर्तन के रूप में विशेष रूप से देखा जा सकता है।

ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या वैश्वीकरण भारत के लिए वरदान है अथवा अभिशाप? वस्तुतः वैश्वीकरण स्वयं में न अच्छा है न बुरा; यह एक "दोधारी तलवार" के समान है जिसका प्रभाव इसे अपनाने की नीति एवं दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 'भारतीय ज्ञान परंपरा' तथा 'वैश्विक नागरिकता' के समन्वय पर बल देना इसी संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वैश्वीकरण के बहुआयामी प्रभावों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना है। इसमें 1991 से 2025 तक के कालखंड को आधार बनाकर भारत के समक्ष उत्पन्न अवसरों का आकलन, चुनौतियों की पहचान तथा भविष्य की संभावनाओं की विवेचना की जाएगी। शोध हेतु द्वितीयक स्रोतों के साथ-साथ प्राथमिक आँकड़ों का भी उपयोग किया गया है ताकि निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ एवं समकालीन बन सकें। आशा है कि यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शोधार्थियों तथा सामान्य जनों को वैश्वीकरण को समझने एवं "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य को प्राप्त करने में दिशा प्रदान करेगा।

Green Micellar Systems for Sustainable Remediation of Polycyclic Aromatic Hydrocarbons: An Review

Sanjay Yadav and Deepti Tikariha Jangde

Department of Chemistry, A.P.S.G.M.N.S. Govt. P.G. College, Kawardha, Dist-Kabirdham (C.G.)

ABSTRACT

Polycyclic aromatic hydrocarbons (PAHs) are persistent organic pollutants widely generated from industrial activities, petroleum processing, incomplete combustion of fossil fuels, and urban waste discharge. Due to their hydrophobic nature, toxicity, bioaccumulation potential, and carcinogenic effects, PAHs pose serious threats to environmental and human health. Conventional remediation techniques often suffer from limitations such as low solubility, high operational cost, secondary pollution, and poor sustainability. In this context, green micellar systems have emerged as promising and environmentally benign alternatives for the sustainable remediation of PAHs. Surfactant-based micellar systems enhance the aqueous solubilization, mobilization, and removal efficiency of hydrophobic organic contaminants through the formation of organized molecular assemblies above the critical micelle concentration (CMC). This review highlights recent advancements in the application of conventional, biosurfactant, nonionic, ionic, gemini, and mixed surfactant systems for PAH remediation. Particular emphasis is given to the role of micellization, mixed micelle formation, and surfactant–ionic liquid hybrid systems in improving solubilization efficiency and environmental compatibility. The influence of physicochemical parameters such as surfactant structure, temperature, pH, ionic strength, and co-solvents on remediation performance is also discussed. Furthermore, the review summarizes various analytical and spectroscopic approaches used to investigate surfactant–PAH interactions and micellar behavior. Green micellar technologies demonstrate significant potential in minimizing environmental toxicity while supporting the principles of green chemistry and sustainable development. The present review provides comprehensive insights into the design and future prospects of eco-friendly surfactant systems for efficient remediation of hazardous PAHs in contaminated environmental matrices.

Keywords: Green chemistry, Micellar systems, Surfactants, Polycyclic aromatic hydrocarbons (PAHs), Sustainable remediation.

Globalization– The Biased Growth

Abstract

Globalization is often described as a process of increasing economic, political, and cultural interdependence that promotes the collective development of participating nations. However, empirical evidence across countries presents a more complex reality. By analysing the relationship between economic openness and the growth and development achieved during the post-war period, this paper argues that openness alone does not guarantee economic growth or improvements in citizens' welfare. Rather, the benefits of globalization depend significantly on factors such as domestic productive capacity, the educational level of the workforce, infrastructure development, and institutional quality.

In the case of India, the economic reforms of 1991 introduced a new phase of globalization in which diplomacy, trade agreements, and investment cooperation became important tools for national development. To a considerable extent, globalization has contributed positively to India's growth trajectory. In contrast, Sri Lanka's recent economic difficulties demonstrate that globalization, when not supported by strong domestic economic management and institutional resilience, can intensify vulnerabilities and contribute to economic decline.

This paper presents a comparative analysis of selected Asian economies—India, China, Pakistan, and Sri Lanka—to examine how factors beyond trade openness influence economic growth and development. The study highlights that while globalization can create opportunities for progress, its outcomes remain uneven and are shaped by each country's internal socio-economic and institutional conditions.

Chandan Goswami

Assistant Professor

Sw Daau Ramchandra Sahu Shaskiya Mahavidyalaya, Ranitarai

Analysis Of Soil Samples For Its Physical And Chemical Parameters From Kawardha And Kabirdham District

Bhumika Devangan, Sanjay Yadav and Deepti Tikariha Jangde

B.Sc. IV Sem. (DSE: Chemistry) Department of Chemistry

A.P.S.G.M.N.S. Govt. P.G. College, Kawardha, Dist-Kabirdham (C.G.)

ABSTRACT

The human activities that are toxic to the natural ecosystem are transport, agriculture, industrial and domestic waste disposal. The environmental pollution in soil is due to multifarious activities of man. The soil forms the intermediate zone between earth's atmosphere, the lithosphere, and the rock cover. The soil can be described as the earth's uppermost weathered crust layer in which mixed organisms and the products of their death and decay are present. In present study it was preferred to investigate the soil samples for its chemical analysis and physical analysis. The three soil samples were collected from Kawardha and Kabirdham district in different area. The results depends on quality of three representative soil samples were obtained and analyzed for its PH, Electrical conductivity, Temperature, moisture content, water holding capacity, phosphates, chloride, alkalinity, carbonate, bicarbonate and organic content present in soil .

Keywords: Physico-chemical, EC, PH, phosphates, chloride, alkalinity, carbonate, bicarbonate and organic content

Physicochemical Parameters of Water Sample From Kawardha Region of Kabirdham District

Khushi Parimal, Santosh Kumar Dahriya and Dr. Deepti Tikariha Jangde

B.Sc. IV Sem. (DSE: Chemistry) Department of Chemistry

A.P.S.G.M.N.S. Govt. P.G. College, Kawardha, Dist-Kabirdham (C.G.)

ABSTRACT

The present study was conducted to evaluate the physicochemical quality of water from Sakri River, an important freshwater resource of the Kawardha region in Chhattisgarh. The river water is commonly used for irrigation, domestic purposes and agricultural activities. The Sakri River is comparatively clean near its origin, but the water quality gradually decreases as it passes through the city due to human activities and waste disposal. In this investigation, pH, electrical conductivity and Chemical Oxygen Demand (COD) were analysed using standard laboratory methods. The observed pH value was 7.4, indicating slightly alkaline nature of water. Electrical conductivity was recorded as 285 µS/cm, while the COD value was found to be 24 mg/L, indicating the presence of dissolved ions and moderate organic pollution. The study highlights the need for regular monitoring and proper management of river water quality.

Keywords: pH analysis, conductivity, COD, water quality, water pollution assessment

सूचना प्रौद्योगिकी और कम्प्यूटर विज्ञान द्वारा संचालित वैश्वीकरण

(Globalization driven by Information Technology and Computer Science)

Abstract

सूचना प्रौद्योगिकी (IT) और कंप्यूटर विज्ञान ने वैश्वीकरण की गति को तीव्र कर पूरे विश्व को एक Globalization में बदल दिया है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण ने भारत जैसे विशाल देश की संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। यह अब केवल व्यापार उद्योग या विदेशी निवेश तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि शिक्षा] संस्कृति] संचार] रोजगार और ग्रामीण विकास तक अपनी पहुँच बना चुका है। छत्तीसगढ़ के कबीरधाम (कवर्धा) जिले में भी इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आज सूचना प्रौद्योगिकी] मोबाइल इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच की दूरी को कम कर दिया है। अब कवर्धा जैसे जिले के लोग भी देश और दुनिया की सूचनाओं से तुरंत जुड़ पा रहे हैं। जिससे विकास की नई संभावनाएँ सामने आई हैं।

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हुए विकास ने स्थानीय जीवनशैली को भी प्रभावित किया है। ऑनलाइन शिक्षा] डिजिटल बैंकिंग] ई-गवर्नेंस और सोशल मीडिया जैसे माध्यमों ने लोगों की कार्यशैली और सोच में परिवर्तन लाया है। कवर्धा जिले में भी युवाओं के बीच कंप्यूटर शिक्षा और इंटरनेट का उपयोग तेजी से बढ़ा है। जिससे उन्हें रोजगार और ज्ञान के नए अवसर प्राप्त हो रहे हैं। भारत सरकार की डिजिटल इंडिया जैसी योजनाओं ने गाँवों तक तकनीकी सुविधाएँ पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों के विधार्थी और युवा अब राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर पा रहे हैं।

भारतीय संस्कृति की विशेषता यह रही है कि उसने बाहरी प्रभावों को स्वीकार करते हुए भी अपनी मूल पहचान को बनाए रखा है। कवर्धा जिला जो अपनी जनजातीय संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है] आज आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाने का प्रयास कर रहा है। वैश्वीकरण के कारण यहाँ के लोगों को नई तकनीक और आधुनिक सुविधाओं का लाभ तो मिल रहा है। साथ ही अपनी लोक संस्कृति] परंपराओं और सामाजिक मूल्यों को संरक्षित रखने की चुनौती भी सामने है। इसलिए आवश्यक है कि विकास की इस प्रक्रिया में स्थानीय पहचान और सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखा जाए।

इस पूरे परिवेश का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि परिवर्तन की यह प्रक्रिया निरंतर जारी है। भारत और कवर्धा जैसे जिलों के लिए यह अवसरों के साथ-साथ नई चुनौतियाँ भी लेकर आया है। यदि तकनीक और वैश्वीकरण का उपयोग समाज के अंतिम व्यक्ति तक शिक्षा] स्वास्थ्य] रोजगार और जागरूकता पहुँचाने में किया जाए, तो यह वास्तव में समग्र विकास का माध्यम बन सकता है।

खिलेश कौशिक

सरस्वती शिशु मंदिर कवर्धा (वाणिज्य शिक्षक)

पता - शंकर नगर वार्ड नंबर 26 कवर्धा कबीरधाम PIN:- 491995 (छत्तीसगढ़)

“Methylcyclohexane Dehydrogenation on LDH-Derived Pt/Co–Al–O Catalysts for Hydrogen Storage”

Santosh Kumar Verma

Chemistry and Chemical Engineering, Yulin University, Yulin 719000, China

Email: vermasantosh08@yulinu.edu.cn; vermasantosh08@gmail.com

Abstract

Hydrogen is regarded as an ideal clean energy carrier for the 21st century, and organic liquid hydrogen storage technology exhibits great potential for efficient hydrogen storage and transportation. Herein, petal-like Pt/Co–Al layered double hydroxides (LDHs) were synthesized via a hydrothermal route using methanol as the solvent, and Pt/Co–Al–O catalysts were further fabricated by subsequent hydrogen reduction. A combination of multiple characterization methods was adopted to systematically investigate the structural and physicochemical properties of the as-prepared catalysts. The results indicate that the appropriate introduction of Co effectively modulates the acidity of the Al_2O_3-based support. It inhibits the formation of excessive strong acid sites while retaining abundant favorable weak acid sites. Meanwhile, the LDH-derived support remarkably improves the dispersion of active Pt sites, decreases Pt particle size, and induces strong metal–support interaction (SMSI) between Pt and the support. Catalytic performance toward methylcyclohexane (MCH) dehydrogenation was evaluated in a fixed-bed reactor by tuning the Co/Al molar ratio. Among all samples, the Pt/Co_3–Al_1–O catalyst (Co/Al = 3:1) achieved the optimal catalytic performance. Its MCH conversion exceeded 90% at 330 °C and reached a maximum value of 99.57% at elevated temperatures, along with a hydrogen evolution rate of 262.7 mmol g_{Pt}$^{-1}$ min^{-1}. Moreover, this catalyst possessed excellent catalytic stability and anti-coking ability; the MCH conversion only decreased by approximately 2% after a 100 h long-term durability test at 380 °C. Post-reaction characterization further verified negligible carbon deposition on the catalyst surface after prolonged reaction. This work demonstrates that LDH-derived Pt/Co–Al–O catalysts are highly promising for industrial hydrogen production via MCH dehydrogenation toward practical hydrogen energy applications.

Keywords: Dehydrogenation; Methylcyclohexane (MCH); Pt-based catalyst; Hydrogen storage; Anti-coking; Catalyst stability

Richa Mishra*, Asit Kumar*

Department of Microbiology, Acharya Panth Shri Grindhmuni Naam Saheb Govt. P.G. College, Kawardha (C.G.) 491995

Department of Zoolology, Govt. Rajmata Vijaya Raje Sindhiya Kanya Mahavidyalaya , Kawardha (C.G.) 491995

ABSTRACT

"A Review on Multiple Drug Resistance Producing Bacteria- A Global Health Issue"

The global threat presented by resistance has accelerated due to the misuse and abuse of antibiotics, poor monitoring, regulatory shortcomings, and a lack of awareness among the general public in developing countries.Antibiotic resistance bacteria and antibiotic resistance genes rapidly emerged as a result of the inappropriate use of antibiotics, reducing their therapeutic potential againstanimal and human infections.The bacterium may acquirethis trait by horizontal gene transfer, mutation, or inheritance.Antimicrobial resistance is now recognized as a major cause of death, accounting for more than a million direct fatalities each year, according to recent research, underscoring the gravity of this epidemic.This research describes the many evolutionary strategies that bacteria employ to evade pharmacological intervention, including the synthesis of neutralizing enzymes, structural changes to drug targets, and the mechanical expulsion of antibiotics through specialized efflux systems.The interchange of genetic material through horizontal gene transfer, which is made worse by the overprescription of medications in the medical field and the extensive use of growth promoters in cattle, is a major factor in the fast spread of these characteristics. It is necessary to go beyond conventional therapeutic settings in order to address this "silent pandemic." The report promotes a single "One Health" approach that unites environmental monitoring, veterinary research, and human health. Additionally, we assess the possibility of novel approaches, including as CRISPR-based gene silencing, bacteriophage interventions, and nanomaterial carriers, as crucial instruments for the post-antibiotic era. In the end, preventing the devastating economic and human losses anticipated for the upcoming decades would require careful stewardship and global collaboration.

Keywords: Antibiotic resistance bacteria, , Therapeutic potential, , CRISPR based gene silenving, Environmental monitoring, Nanomaterial carriers.

Corresponding author

Dr. Richa Mishra Department of Microbiology, Acharya Panth Shri Grindhmuni Naam Saheb Govt. P.G. College, Kawardha (C.G.) 491995
Email address:richa.micro10@gmail.com

APSGMNS GOVT. P.G. COLLEGE, KAWARDHA DISTRICT KABIRHAM (C.G.)

Affiliated to HEMCHAND YADAV UNIVERSITY, DURG Naac Reaccredited by Grade "B"

Two Days International

Multidisciplenary Seminar

Jointly organized by

Arts and Commerce Group of APSGMNS Govt. P.G. College, Kawardha

on

"The Multidimensional Impact of Globalization: Science, Trade and Culture"

20.05.2026 & 21.05.2026

Vanue: P.G. College, Kawardha

Chief Guest

Dr. Anupama Asthana

Additional Director

Higher Education Durg Region

Inaugural Ceremony

Chief Guest

Shri Gopal Verma (IAS)

Collector and District Magistrate

Dist. Kabirdham (C.G.)

Valedictory Ceremony

Special Guest

Mr. Rinkesh Vaishnav

President

Janbhagidari Committee

Govt. P.G. College, Kawardha

Keynote Speaker

Dr. Sanjay Tewari

Hony. Professor;

Russian Academy of Social & Fundamental Sciences, Moscow

Assoc. Researcher Fellow; Sociological Institute of Federal Center of Theoretical and Applied Sociology,

Russian Academy of Sciences, 7th Krasnoarmeyskaya str. 25/14, St. Petersburg

Resource Person

Dr. Siya Ram Sharma,

Professor, Department of Hindi

Govt. College, Utai

Dist. Durg (C.G.)

Dr. Santosh Verma

Associate Professor Chemistry

and Chemical Engeneering

Yulin University, Yulin 719000,

China

Dr.Gajendra Singh

Assistant Professor

Department of Biotechnology

Center University Rajasthan,

Kishangarh, Ajmera (Rajasthan)

Dr. Ajay Kumar Rai

Assistant Professor

Department of Geography

Govt. College, Chhapara,

Seoni (M.P.)

Mr. Chandan Goswami

Incharge Principal

Govt. College, Ranitarai

Dist.-Durg

Chhattisgarh

Patron

Dr.Richa Mishra

Principal

Convenor

Mr. Narendra Kumar Kulmitra

Assistant Professor

Department of Hindi

Secretary

Mr. Mukesh Kumar Kamle

Assistant Professor

Department of Sociology

Co-onvenor

Mr. Mansukh Lal Verma

Assistant Professor

Department of Commerce

Acharya Panth Shri Grindh Muni Naam Saheb Govt. P.G. College, Kawardha Dist. Kabirdham (C.G.)

आचार्य पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कवर्धा जिला-कबीरधाम (छ.ग.)